انوار کی برسات ہے ''آ دابِ نظامت'' ہال عشق کی سوغات ہے ''آ دابِ نظامت''

of real states and the

ماجزاده خال اختر ناریم ماجزاده خال اختر ناریم همچیمی کاهمی کاهی ایمی ایمی

سر پرست

پیرِطریقت حضرت الحاج مشن الهی قادری چشتی فریدی چیرِطریقت حضرت الحاج مشن الهی قادری چشتی فریدی حشرت منت منت اسر میشی درگاه فی میداد باب شاه جیدا فی فردند کون ہوگا نقیب برزم نبی ہیائے فال غیبی سے بیہ ہواارشاد بول تو بھی خلش مظفر بول خان اختر ندیم زندہ باد خان اختر ندیم زندہ باد



فعل خدا سے جو کہ ہیں مدارح مصطفیٰ وہ عاشق رسول خان اخر تدیم ہیں



ماجزاده خال اختر نديم نقشوندي قادري الجياني

تحمده و تصلى على رسوله الكريم يسم الله الرحمان الرحيم

انتساب

انعام پائے گادہ خدا کی جناب سے چوبھی پڑھے گا نعت رسول کریم (تقوی)

الحددثدا راقم نے تقریبا 1976ء سے نعت خوانی کے ساتھ ساتھ کافل نعت کی مطابعہ ساتھ کافل نعت کی مطابعہ سے اور منا قبات کے جو اشعاد پڑھے انہیں بحسن وخوبی پذیرائی فی۔ صفاقان مدین الفظ نے انہیں خوب خوب بند کیا۔ لیکن ان جی کچھا شعاد ایے جی تے جو میری شناخت اور محفل کی جان من محکم سے اسلاقا والسلام اور آل دسول الفظ کے کافلادرب العزت کے بے پایاں کرم۔ صفور علیہ المصلوقا والسلام اور آل دسول الفظ کے کے صدیقے اور وسیلے سے مجان مصطفی الفظ کی کے مدر کے اور وسیلے سے مجان مصطفی الفظ کی کھی میں مناور کر رہا ہوں۔ ساتھ ساتھ آواب نظامت کو اپنے والد کر ای آفاب طریقت کو طریقت ساتات الاسا تذہ معروف نعت کو طریقت ساتات الاسا تذہ معروف نعت کو شام موروف نام موروف نعت کو شام موروف نعت کو ساتھ کا طاب کا رہوں۔

فتقركرم ودعا

ماجر أوه خان اخر عربيم نقشيندي قادري الجيلاني اليم المد، في الدُر التي ألى في كور نمنث كيري مينسع مارسكندُري اسكول حيررا باد (سنده)

ايران نعت

إلى تبروى-227 ين فبر 10 اللف أبديداآباد موال 3838365 0346

چيز شن دې امورستى در كاوكى سوياموالو اب شاه جيان ( زمت)

به فيغان انظر: حضرت صوفى ماسر منان وكراكراً بادى انتشبتدى هائى

نام كراب: آواب فلامت

مصنف ومرتب: صاجر اده خان اختر عربيم تنشيندي كادرى الجيلاني

عمان اعلى: شغرادا مرمدية مرافعت كاي

مران نعت كورية الدين ماكى القادرى كرايي الحدام فأفت كو

بنظر مناعت: استاذ الشعراء علاسانور يريلوي

شاع با كمال جناب خلق منظر

عرف اشاحت الريل 2010ء

عزد مقيد = 200/دو ب مركبن: فاكم صاجزاده ا

وَاكُمْ صَاجِزَاده مَافِظ مِل شَعِب بِرْب كَلِينَك مِنْ 10 لَفِف آباد حيدرآباد فرريل في في فريدي مربط الدين في استاد داد فرك على مصطفال نواب شاهد تقيس عالم فريدي وهد جادي فريدي ماستاد سيف هد في اجميري وزيز احد وارلى انهادج اولي صفى بإسمان دهر سعيد يرويرائز سعد فيستى حكن - صال احد خان - عدمت فاطر مديم

> پیکش: آلراو فرد پرز محال (دونامه آسدام اب) عبد الوهبد غوری .

منجانب الجيمن عاشقان بدوب مصلق تلك ديداً إد القيدب ديداً بدو أدر فحد ديداً بواكنان منائعة و آوالنش عمد اكرم فركن اخر القادري مددت الجمن فيشان ما يريكان

جمله حقوق اهليه محترمه نصرت نديم محفوظ

ہے تحتِ علی خان اختر ندیم عافق ہر ولی خان اختر ندیم اس کی لورج لحد پر بید تحریر ہو خاک پائے ٹی خان اختر ندیم غاک پائے ٹی خان اختر ندیم

کول نہ آ داب نظامت ہوسدا مقبول عام اس میں حمد ونعت بھی ہیں منقبت ہیں اور سلام جو پڑھے گا شوق سے اس کو دہ پائے گا سر در اے ندیم اس پر رہے گی رحمتِ رَبِ انام

(صاجرز اده خان اخر عرقيم نششوندي)

شیرہ ہے حمد و نعت کے اِس انتخاب کا مہکا ہوا ہر ایک ورق ہے کتاب کا برم رسول میں ہے یہ ناظم کی رہ نما تم نے ندتیم کام کیا ہے ٹواپ کا

"آواب نظامت" نے بھیری ہے خوش ہو یہ نسبت سرکار دوعالم کی ہے کہت ہرنعت کی محفل کو بناتی ہے یہ یا کیف لا ریب مبارک ہے ترتیم آپ کی محنت

(صاجزاده فان اخر تدمیم فتشندی)

| _  |                        | امت- | i.i | أخالع |                              |    |
|----|------------------------|------|-----|-------|------------------------------|----|
| 69 | برسمت برئ موني رحمت    | 95   |     | 63    | فعت تقريس دمالت              | 62 |
| 70 | محبوب دوعالم كيارجت    | 96   |     | 63    | نعت کیاہے                    | 63 |
|    | مداش درددل كالفريل     |      | *   | 63    | فعت ابواب محركا              | 64 |
| 70 | محق ي ش                | 98   |     | 64    | £ 25 300                     | 65 |
| 70 | مرتابة م بين سلطان ذكن | 99   |     | 64    | شيند كي شركي خسروي           | 66 |
| 71 | الموكونوا في جال عدى   | 100  |     | 64    | يروت مجوب عي                 | 67 |
|    | يس في دوري كاشايد      | 101  |     | 64    | نعت نجاش                     | 68 |
| 72 | 82-10-2 N. 2. 26 1     | 102  |     | 64    | となりとがなか                      | 69 |
| 73 | جي طرح لي ياب          | 103  |     | 64    | نازال اول معادت كركم         | 70 |
| 73 | وكرآ قاكا فتح سنات ريو | 104  |     | 65    | وهاوم بالاستر                | 71 |
| 73 | بي بي كام بدونداكم     | 105  |     | 65    | 201812                       | 72 |
| 73 |                        | 106  |     | 65    | / / /                        | 73 |
| 73 | مولا کی نوازش مبال     | 107  |     | 65    | فى بلوه كر زطر زيان          | 74 |
| 73 | ايك سايك بعد يمثل الد  |      |     | 65    | ده دانا ــ يُسكل ، حتم الرسل | 75 |
| 73 | لوك ازال ين كدد        |      |     | 66    | وصلى الشاعلى تور             | 76 |
| 73 | بان کے ہوں انفاظ میں   | 110  |     | 66    | فيدا كواده فلدا كدمول ك      | 77 |
| 74 | د العادة المراجعة      | 111  |     | 66    | مركوت يرطقي                  | 78 |
| 74 | آپ کی چم کرم ہے        |      |     | 68    | 542545                       | 79 |
| 74 | ز سالمیسائش            |      |     | 68    | أي وساف خال معيم             | 80 |
| 74 | كيامره آئ الي مين على  |      |     | 66    | ال كي آعمون يرفدا            | 81 |
| 74 | نعت كفيويات الملاح     |      |     | 66    | وأحسن بنك لوكر أطرعني        |    |
| 75 | برتفذل اور برعظمت      | 116  |     | 67    | ترجدا بدماكولي فسيس          |    |
| 75 | نعت كياب               | 117  |     | 67    | الله الماءول أ               | 84 |
| 75 | حبيب باك               | 118  |     | 67    | کیا فرا منہ                  | 85 |
| 76 | كاش بكفاجس ستعل        | 119  |     | 67    | الاري كالصراك                | 86 |
| 76 | April 19.143           | 120  |     | 67    | وشاك بكسوس كامبارا           | 87 |
| 76 | かっとり ショラ               | 121  |     |       | الشكاع والاليل موسكنا        |    |
| 76 | جبافك كردياض           |      |     | 68    | كيالغف يخرناكا               | 89 |
| 76 | خوال وجمل سال          | 123  |     | 68    | شابتدا وك نسر عائبا ون       | 90 |
| 76 | 20250                  |      |     | 68    | どしまりかによる                     | 91 |
| 77 | يحرآ رزو مے شيشہ دل    | 125  |     | 68    | ادان ہے                      | 92 |
| 77 | يتمال مطلق كاتوري      | 126  |     | 69    | للغسان كاعام                 | 93 |
| 77 | وروازه كولية بي فرشح   | 127  |     | 69    |                              | 94 |
|    | _                      |      | 9   |       |                              |    |

| -,45:                              | اهات                                      |
|------------------------------------|---|
| راست                               | <b>L</b>                                  |
| تبريك معرم مؤتم                    | نبرغار معريه صخافير                       |
| 53 . E. E. 21 L AS 31              | 5 £ - 5 ( E = 2 )                         |
| 32 وَالْمِحِوبِ كِي مِنْقُلْ ہِ 34 | 2 آوابونقامت عي نے 5                      |
| 33 القابات معلى الدياء لم 34       | 3 بي عب على خان اخر عديم 6                |
| 34 ئىرىلەت 35                      | 4 كيول شآواب فظامت 6                      |
| 55 F = 6 8 35 Lx 35                | 5 اشاب 5                                  |
| 36 تعت رحت كااثارا بي 36           | 8 فيرست 8                                 |
| 37 نعت ائنال مقدر باور 38          | 7 سران كامد الالاعم 14                    |
| 38 تعدم راايان ٢٥                  | 8 فان اخر نديم كي المقيضات 26             |
| 57 Callibration 39                 | 39 2121 9                                 |
| 57 (5) 1210 40                     | 10 محتور الم                              |
| 57 (43/3/12 41                     | 11 عظمیدندت بیال 41                       |
| 57 JUNISQUE 42                     | 42 state 2 12                             |
| 58 12/10 43                        | 13 يارب اعرامول 42                        |
| 58 البريم والما والمارك 18 44      | 14 نعت مقب رب كريم ب 43                   |
| 45 تهوريوان فاحدوافت 58            | 45 UNUE 15                                |
| 46 فره جير فرورمانت 58             | 45 15 100 16                              |
| 58 أغير متدن ايمات × 58            | 17 رحمة للفالين علي 17                    |
| 48 بدمدرول عظياء 59                | 47 كال الما الما الما الما الما الما الما |
| 59 10 2019 49                      | 19 منورياك عليه 19                        |
| 59 be - 50 6 50 50                 | 48 20 20                                  |
| 59 كال شاوب براي 51                | 21 نعتین تعات 49                          |
| 52 اب يرى كادبي شي                 | معظومات اورنثري لعيس                      |
| 53 خداراميري آشائي نيايين 59       | 22 سنقائل 50                              |
| 54 موجول پر مفيده کي بيك 60        | 23 كزرى بدائيمارى 50                      |
| 55 مارے 160 ش ایک اف               | 24 نست الحکام ایمان کارکل کے 50           |
| 56 شان د مول كرم 56                | 52 را اعر جس عادا كرول 52                 |
| 61 HULLELZEUCET 57                 | 26 مقدور ين لب 26                         |
| 61 ようがか 58                         | 52 462 4107 21                            |
| 61 נישון של אונין 59               | 52 45 8 28                                |
| 60 مِيتِنْيت 62                    | 53 29                                     |
| 61 ندشاء معرف الحاليات 63          | 30 دهاوارب ساوكل 33                       |

| آجاب نظامت |                       |     |    |   |
|------------|-----------------------|-----|----|---|
| 98         | فتع الدن كاجنام أكيب  | 227 | 90 | 194 آقال الريوام  |
| 99         | درو دونعت كي مخفل     | 228 | 90 | 195 עומבשלטאני  |
| 99         | الونديد كاول          | 229 | 91 | 196 الن يقوب والشية   |
|            | こりかから                 |     | 91 | 197 طىل مولى عيروا  |
|            | Ind Stage             |     | 91 | 198 موال بيرك والريف  |
| 100        | دو کی پدیمول عل       | 232 | 91 | 199 ما عالي ال  |
|            | کیایاں میں ایامدی     |     | 92 | 200 اگراهدين واد نيخ ا  |
| 101        | محرى وعافاروق العلم   | 234 |    | 201 وَلُكُمْ وَلُهُ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى |
| 101        | وين كروير إلى حال كي  | 235 | 92 | 202 نعت ام مراكل ديالا  |
| 101        | حايت في المحت في      | 236 | 93 | 203 دوان كدائي رات  |
| 102        | الل تقرى آخمة البرا   | 237 | 93 | 204 فالكوش كالركواب   |
| 102        | رياش ي ك كلفت كل      | 238 | 93 | 205 - July 10180 Carl 205   |
| 102        | شاومردال معير يزدال   | 239 | 94 | 206 جسيكن كادول كالميسين  |
| 102        | يسي افرشبو إوراب عي ب | 240 | 94 | 207 كيامندركيا كتارا  |
| 103        | راحي جان ودلي         | 241 | 94 |   |
| 103        | 4 4                   | 242 | 94 | 209 رزق کی معادی کیا  |
| 103        |                       |     | 95 | 210 برار بار بخوي   |
| 103        | ( FIRELLE POLK        | 244 | 95 | 211 براد إددان كالماب   |
| 104        | مهداد وحرب            | 245 | 95 | 212 يَا صَاحِبُ الجُمَالِ   |
| 104        | ع ول ياك دسول اكرم    | 246 | 95 | 213 است کرشن  |
| 104        | مروز مشر ماري محل     |     | 96 | 214 جب دس قياان كاجووترا  |
| 105        | وبدرا فرنال ا         |     | 96 | 215 الايدومية   |
|            | كيال بيكوني تهاري شال |     | 96 | 216 محرب كي على كومانات   |
| 108        |                       |     | 96 | 217 مركارايل ي آپ   |
| 106        | مطاكرم كالثاران       | 251 | 96 | 218 سيد فالان الم   |
| 106        | کیاملین نام ہے        | 252 | 97 | 219 م جاري كا ي   |
| 107        | آئے ہمکاری دریہ       | 253 | 97 | 220 مناه كية بن   |
| 108        | توروقاوامام جعفر      | 254 | 97 | 122 CD1500 Jen  |
| 109        |                       |     | 97 | 1152 - 12 222   |
| 110        | صوفي منيرخان كاماد    |     | 98 | = Value 12 223  |
| 111        | نعت بالحافك شهراجريها | 257 | 98 | 224 الشريخ بخوا   |
| 112        |                       |     | 98 | 225 טושרונטון בט  |
| 112        | البديورش طوقال        | 259 | 98 | 226 لذت تعيب ب  |

| آ واپ نظامت  |   |  |  |  |  |  |
|--|---|--|--|--|--|--|
| 84 122 EKALER 161  | 128 عربيان چان  |  |  |  |  |  |
| 84 Nycarlot 162  | 77 Joseph 129   |  |  |  |  |  |
| 84 JUNE 163  | 130 كى كارىدىن 130  |  |  |  |  |  |
| 85 5-1708 164  | 131 مج حيات ندفوف تغنا 78   |  |  |  |  |  |
| 165 مِ إِنْ آبِ كَ الموران عن 165                        | 78 = Punt 132   |  |  |  |  |  |
| 166 قرآل دو گذر 85                                       | 133 ما كي المورد ي إلى 193  |  |  |  |  |  |
| 85 State 10 7 187  | 134 و کری مظول عی رہے ایں 79  |  |  |  |  |  |
| 85 ( ( 10 2 ) 168  | 79 124/1/1/1/1/ 135   |  |  |  |  |  |
| 85 70 2 174 1711   | 136 جوازول عربيان ب 136   |  |  |  |  |  |
| 85 = 4/1 170   | 137 و المالية عالمالية عام 137  |  |  |  |  |  |
| 171 وميف كرد إدول 85                                     | 138 مرے کے کہاؤں کی 138   |  |  |  |  |  |
| 172 كي عضادد مريف 86                                     | 139 مائوں کرم ہوماب 80  |  |  |  |  |  |
| 173 المنتامين المؤادات 86                                | 140 فرداعال على 140   |  |  |  |  |  |
| 174 كولا قول عن جمالول 86                                | 141 يم وحول إك  |  |  |  |  |  |
| 175 من اعد الديل ا 86                                    | 142 مرلامكال عطاب اول 80  |  |  |  |  |  |
| 176 مس رمزام على 176                                     | 143 عنليا عصايا 80  |  |  |  |  |  |
| 177 حيال اعتدل ع   | 81 2 . 18.00 144  |  |  |  |  |  |
| 178 على دائے يك الله 178                                 | 145 ז טייט של אוט 145   |  |  |  |  |  |
| 179 سل اندال كي وت 27                                    | 146 مركارمرا باللت ين 146   |  |  |  |  |  |
| 87 460000 180  | 147 يرم الحرب كالال اورا قاب 81   |  |  |  |  |  |
| 181 آپکسے تا ا   | 148 واعداناآن ب 148   |  |  |  |  |  |
| 182 تىللىلىدىلى موسى 182                                 | 149 ففن طيبرش جب 82   |  |  |  |  |  |
| 183 مردرانها کی ہے قتل آق                                | 150 كامت عياد كما 82 م  |  |  |  |  |  |
| 184 وأَيْرَبِ مِرَكَادِكَا<br>185 أَنْ يَحْضُورِ إِلَّهِ | 151 مقام ترا بحد ش و آئيل 82<br>152 درد مول يقدي ملام 82  |  |  |  |  |  |
|  |   |  |  |  |  |  |
| 186 أبرج ب 186<br>187 أم غريات ع                         |   |  |  |  |  |  |
| 187 م غويلها ۽ 188<br>188 آياست ڪون د يکن ا              | Co  |  |  |  |  |  |
|  | 156 م المراجع |  |  |  |  |  |
|  | 157 سلية دعرى على 157   |  |  |  |  |  |
|  | 83 ショイルニーハントラ 158   |  |  |  |  |  |
| 192 آپکارتے ہے 90  |   |  |  |  |  |  |
| 193 ول لما عرفوار ول الله 90                             | 160 والدري 44   |  |  |  |  |  |
|  | 10  |  |  |  |  |  |

| 440 1544 4 000                       |  |
|--------------------------------------|--|
| 358 محمد عمراقبال 148                | 137 二樓 些小 32   |
| 359 عبدالمسرة ورك                    | 32 أيراناهـ 138  |
| 360 گرماويد فريدي                    | 32 الحاج يست عن 139  |
| 149 ปมชีบิสเสี 361                   | 32 عيارون مي   |
| 362 نعت ملد بري أو 149               | 33 توكت معلقال 139   |
| 150 2 363                            | 33 عطاء أرحمان قاكل 139  |
| 364 صولي عبراستم فان 151             | 33 ماشد ي 33   |
| 365 عزيزالدين عاكي 151               | 33 موفي عليل الرحمان 140   |
| 366 آيا کوبرگل 152                   | 33 افرائيم 340   |
| 367 مرسام فرسك المدني 152            | 33 سيدة والكفار مسين ثنا ونقوى 141   |
| 152 איניה פונט 368                   | 33 فوادرميب تعشيدي 141   |
| 369 مُرْيف الدين يَرْ 369            | 33 موني مي المان المان المان   |
| 370 منكور سين كلوكم                  | 33: عبدالقادر بلك أوليل عين 141  |
| 371 استباليارازاز كالريات 154        | 33! سيف فرح الجيري 342   |
| 372 مولي مبراستم خان مشندي 154       | 34 ارتري احراقاري 142  |
| 373 فبالودد وبال                     | 34 سين مالمريك   |
| 374 الحاج مشن الى الحتى 155          | 143 مول و شرك الله الله الله الله الله الله الله الل   |
| 375 احتبالي على مقام ه 155           | 34: ميدادين ريي الم  |
| 376 برتدرك عدد 376                   | 344 عبدالوديرمان مراعدي 143  |
| 377 جُرُفناكِلات 156                 | 341 كرمنف فيرادي 341   |
| 378 جب طامور هم 378                  | 341 عابد كامطارى فيرازى 341  |
| 379 مارك او ماي                      | 144 (الاربال 144) 347  |
| 380 الشرائية 156                     | 341 مرشيب 341  |
| 381 كوك وراني ادكا لوى 381           | 34! كُوْلُ مِد فِي تَعْتَبْدِي ظَامِرُي 34!  |
| 382 ميراللانب إي                     | 350 ترابالدين€دري 145  |
| 383 واكرستدانوركل نيازي 157          | 351 ميتن الدين مباي 351  |
| 384 سيوم الميد شاه ا                 | 352 كرخالو 148   |
| 385 ذوالتقار حمين أفتوى 158          | 148  |
| 386 محرم خان اخرعه م                 | 35 سياريمان الله عليه المعالمات المع |
| 387 مطل كيفل عراداد 58               | 355 اسطاله م   |
| 388 آرگا ارائ الله النوند الرامال 59 | 358 ميش عفر 147  |
| 389 كىين ومحسنين 60                  | 357 الروح على 357  |

| آماب نظامت           |                       |     |       |                         |  |
|----------------------|-----------------------|-----|-------|-------------------------|--|
| 121                  | : اوآئی ہے شب برات    | 293 | 112   | 260 أدج يرايخ مقدركا    |  |
| 122                  | الحاج خورشيدا تعد     | 294 | 113   | 261 خلائے ا             |  |
| 122                  | : سيدضامن كلي سني     |     | 113   | 262 سامانت أكالرف       |  |
| 123 2                | : غراك شوق وجنول      | 296 | 113   | = 1,000 UT 263          |  |
| 123                  | : رّے بغیر سکون وقرار | 297 | 113   | 264 الشالشيه ماراشغل    |  |
| 124 4                | الول يقلوه بحاليل     | 298 | 113   | 265 مثن القديم الال     |  |
| 125                  | الحاج محش البي        | 299 | 114   | 266 الله الشكاعره       |  |
| داد, 125             | : كاركبات كتاب        | 300 | 114   | 287 كتبريز يدومتك       |  |
| 125                  | ورجع شاويلال          | 301 | 114   | 268 الشاشانيب أن ك      |  |
| 126                  | : سيد قرائذ مال شاه   |     | 114   | 269 الله ق آ قا كوبلايا |  |
| 126                  | こうしょくだい:              | 303 | 115   | 270 مالاتسب بليدي       |  |
| 127                  | مبي مبلي عليدانان     | 304 | 115   | 271 مرشد اک-دیس ب       |  |
|                      | : نام إن كالصل رب     | 305 | 115   | 272 ق كى يوكىت يادى     |  |
| 127                  | 3 15 Con 25           | 306 | 116   | 273 ماغرى آراد ي        |  |
|                      | في بيانت كولي كات ملم |     | 116   | 274 30 60 200           |  |
|                      | 3 خدا محفوظ رمے خال   |     | 116   | 275 جب الساكانة         |  |
|                      | 3 كتيرالكالمين عرسة   |     | 116   | 276 لعدي منامامية (آن)  |  |
| 128                  | - UNICO 3             |     | 116   | 277 تريمان المي سق      |  |
| 128                  | و معتى احد مال مكاني  | 311 | 116   | 278 ياريم عمال          |  |
|                      | 3 محبوب عالم شيروالي  |     | 117   | Japan 279               |  |
| 129                  | 3 محمد من الكالي      | 313 | 117   | 280 مبنى ري كرواسط      |  |
| 129                  | 3 مسكراكرد مكنا       | 114 | 117   | 281 אנגנים ועבל בנט     |  |
|                      | 3 اناكالى عندكى       |     | 117   | 282 أن الأدالي ب        |  |
| 130                  | 3 - 19 10 10          |     | 118   | 283 جس ملاؤاتی ہے       |  |
| 130                  | 3 مم تاخوان ي بوار    | 17  | 118 . | 284 عمال عال عال        |  |
|                      | 3 3 2 3               |     | 118   | 285 آئے تک کیال ملام    |  |
| 131 5/1              | 3 محرسعيد شيش مبدالوه | 19  | 118   | 286 مؤمنوازب سے کرو     |  |
|                      | 15/22 Est 3           |     | 119   | 287 يكفيت كى إدم        |  |
| 132                  | 電影1 3                 | 21  | 119   | 288 جكوة ال كا تنات     |  |
| 134 עווין            | المالكالاروال         | 22  | 119   | 289 أبا لـ وي الماين    |  |
| الملت 135<br>135 مام | 3 مازوسطىال فليال     | 23  | 119   | 290 ال كاعاد كرم        |  |
|                      | 3 ييما والماعداني     |     | 120   | 291 سيدسن على عابدي     |  |
| 136                  | 1/5 3                 | 25  | 120   | 292 مفتى جمال الدين     |  |
|                      |                       | 4.0 |       |                         |  |

### بهشارانديم

# دوران نظامت

ال لئے نعت وہ بات اظہار ہے جس کی بدولت بندگان خدا کومجوب کا حات کی بدولت بندگان خدا کومجوب کا حات کی بدر قرصیف کا موقع میسرآتا ہے۔ جب بی تو کا خات کی برشے براحد فا سے حضور میں مشترق ہے۔ جر جگہ براحد، جرساعت، برآن، براحظ ای ذات ایس کے حضور میں مشترق ہے۔ جر جگہ براحد، جرساعت، برآن، براحظ ای ذات ایس کے حضور میں مشترق ہے۔ جر جگہ براحد، جرساعت، برآن، براحظ ای ذات ایس کے حضور میں مشترق ہے۔ جر جگہ براحد، جرساعت، برآن، براحظ ای ذات ایس کے دیار فیرکی صدا کی گوشی نظر آتی ہیں۔

ید کرم خداد ندی ہے کہ اس پر خطا کو ادائل عمر سے بی ذکر مجبوب ملک ہے ۔

ہاس کرنے کا حوصلہ ملا ہے۔ 1976ء میں جب میں نے نظامت کا آغاز کیا تو اہل اس کرنے کا حوصلہ ملا ہے۔ 1976ء میں جب میں نے نظامت کا آغاز کیا تو اہل اس سراہنے گئے۔ میں نے دوران نظامت سامین میں عشق وستی پیدا کرنے کے سے کے عمر واثر پذیرادر جوش وجذ ہے ہے ہر پوراشعار سنانے کا سلسلہ شروع کیا۔ یہ سلسلہ اس قدر کا ممیاب ہوا کہ میرا شار حیور آباد کے نمائندہ نقیبان محفل میں ہو کے سامہ اس قدر کا میاب ہوا کہ میرا شار حیور آباد کے نمائندہ نقیبان محفل میں ہو کے ایک دوبارٹیں بلک عشق و

مجت کی دوراہ ہے جس میں دشواریاں زیادہ جیں۔ مگر جب میں نے اس راہ کا انتخاب کیا تو بھے پر رحمت وکرم مصطفیٰ میں کا کہ دروازے دا ہو گئے۔ آج بھی بیسلسلہ اس طرح جاری وسماری ہے۔

> شامری میری منول تو برگزشیں بال نظامت مری خاص پیجان ہے

میراسفر نظامت کم وثیش 32 سالوں پر محیط ہے۔ جس میں میرے تمام چاہنے والے مشاگرد اور محقین حضرات نے بھیشہ جھے سے دلی عقیدت کا اظہار کیا ہے۔ اگراس موقع پر ش اپنے لائق صدمحتر محسنین کا ذکر نہ کروں تو یہ بوی ناانسانی و ہادنی ہوگی ۔ ان حضرات میں چند نمایاں نام یہ جیں۔

الحاج سيدقسر الزمان شاه صاحب كي نوازشات

حیدرآباد کی نعقیہ تاریخ یس معزت قبلہ الحاج سیدقر الز مال شاہ صاحب کی شخصیت کی تعارف کی گئی ہیں۔ آپ نہاہت خوش طبع کم کو خوش لباس اور دین دار انسان مونے کے ساتھ ساتھ ایک ہے عاشق رسول ہیں۔ بار بارح مین شریفین کی انسان مونے کے ساتھ ساتھ ایک ہے عاشق رسول ہیں۔ بار بارح مین شریفین کی

من شن شریفین کی حاضری کا شرف الما۔

پیچلے مال 2008 ویں ہمی شاہ صاحب نے اپ گر پر منعقدہ شب معران ل کفل میں میرے لیے عمرے کا اعلان فر ایا تھا۔ لیکن پوجیطالت آپ جھے عمرے کے افراجات نہ وے سکے شاہ صاحب کی علالت کی وجہ ہے اس مال 20 جولائی 2009 وکڑاہ صاحب کے گھر شب معراج کی مخل نہ ہوگی۔ ذیا ہے کہ اللہ دب العزت شاہ صاحب کو مضور علی ہے کے مدتے میں جلاصحت کا لمہ عطافر مائے۔ آمین

گلشی نعت کا مهکتا پهول العاج گلش الفی فریدی فریدی جیلانی

رهد کرای معرت الحاج گلش الی فریدی جیلانی القادری د فرخهم

بالا تفاق رائ الساره مین نعت حیدرا باد کا کلوت ، تایاب ، کمیاب اور میک کلاب این سر مین نعت میدرا باد کا کلوت ، تایاب ، کمیاب اور میک کلاب بین آب نهایت مونس و بعدرد ، فلیق اور لا جواب و با وقار انسان بین به پایند سوم وصلو قاود طریقت و معرفت می اعلی مقام کے حال بین الشدة ب امو ت نے آب کو باتی در معرفت می اعلی مقام کے حال بین دانشدة ب امو ت نے آب کو باتی در انده ترب امو ت نام کو الحال بین دانشدة ب امو ت نے آب کو باتی در انده کا در انداز این کے ماتی در انداز این کے در انداز این کے ماتی در انداز این کے در انداز این

حضرت قبله الحاج مسلم المنى صاحب كي شخصيت اتنى يركشش اور محوركن به كرجال جائية جس سے ملئے برقض آپ كى تى تعرب كرتا نظر آتا ہے۔ ترقی نعت اللہ محترم حاتی صاحب كی خدمات بے شاروا گفت ہيں جوروز روشن كی طرح سب بر حیال ہیں۔ حیور آباد جس كی خدمات ہے تاروا گفت ہیں جوروز روشن كی طرح سب بر حیال ہیں۔ حیور آباد جس كثیر محافظیں آپ می كے ذرك شرے جائی جاتی ہیں۔ مثال بورس سے زیادہ تقریبات منعقد كرنے كا اعز از صرف آپ می كوماصل ہے۔ معرب تیر خال گاشن النی صاحب تقریباً 25 سال سے متواتر خانوادہ آل

زیارت ہے مشرف ہوتے رہتے ہیں۔ کیرنعت خوانان مصطفی اللے اورعلائے کرام کو اپ ذاتی فرج ہے عمرہ دیج ہے مستفید کرواچکے ہیں۔

1980ء میں ہیرآباد میں منعقدہ ایک کل پاکستان مخلی نوت میں ہیلی ہار عالی مرتبت آبلہ شاہ صاحب نے جھے سنا تو ہے حد پہند کیا۔ میرے انداز نظامت و خطابت سے متاثر ہوکرآپ نے اپنے گھر پر منعقدہ کل پاکستان مخفل نوت میں نظامت کی دعوت دی۔ چنا نچہ بیر مرے لئے اعزاز ہے کہ اس دن سے آئ 2008ء تک میں شاہ صاحب کے گھر پر منعقدہ ہے شار کل پاکستان محافل نعت کی نظامت کر چنا ہوں ۔ حرید یہ کہ وسمال تک شاہ صاحب کی قیادت میں منعقد ہونے دائی ہفتہ دار چنا ہوں ۔ حرید یہ کہ وسمال تک شاہ صاحب کی تجھے ہی حاصل ہے۔ ان محافل میں بھی بھی میں حاصل ہے۔ ان محافل میں بھی بھی محمد من مرید ہوا کر تے تھے۔

آپ کالبت ہے جو کو باصب عز ونرف آپ کی مدحت وسلد ہے میری تقدیم کا

پلکجیکے 28 سال گزر کے ہیں۔ لیکن حیدراآبادی مرف قبلہ الحاج سیّر قرائز ماں شاہ صاحب کی وہ فخصیت ہے کہ جنہوں نے جیجے اب تک یاد کرر کھا ہے کو کہ جھے شک اب وہ طاقت و تو اٹائی نہیں ہے گرشاہ صاحب کی حیت اسی طرح قائم ودائم ہے۔ امید ہے کہ یہ سلسلہ ان شاء اللہ آئدہ جسی جاری وہماری دے گا۔ آجن۔

# مدح محبوب شي كاسب سے بڑا انعام

بدوالدین گرامی، بزرگول کی دعاؤن اور میرے آ تا تا تھا کی نگاہ کرم ہے کہ جھے ندیہ خوانی کا سب سے بڑا انعام قبلہ شاہ صاحب کے ہمر نہ 1987ء میں

٣٠ ل عَلَيْكُ مُحْجِيدُ تَغُوضُ و بركات تحرت في سيّد ناعبدالو بإب شاه جيلاني" كاسات

روز ہ تو س شریف اور چھروز و معین انملت معطائے رسول قواجہ مخواجگان حضور خواجہ
غریب نواز کا غرس مقدس اور ویگر اولیائے عظام کے احراس مبارکہ فیتیہ
کا نفر نسز ہوائی سام و وعظ کا انتظام والصرام ہیڑی خدہ پیشائی و جاس قشائی سے سر
انجام دے رہے ہیں۔ جو کسی دوسرے کے بس کی بات نہیں۔ کیٹر علاہ وائر کی اعانت
فریب سادار و بے بس مفلس و تو محر حضرات کی خیر گیری بالمخصیص ان کا ہر طرح
خیال رکھنا آپ کے معمولات میں شامل ہے۔ بیا کشر و یکھا گیا ہے کہ آپ ہر ایک
خیال رکھنا آپ کے معمولات میں شامل ہے۔ بیا کشر و یکھا گیا ہے کہ آپ ہر ایک
حیدر آباد میں آیکا مانی نہیں۔ اللہ و تا الحق سے تاکہ و تے ہیں۔ تی بیت کہ اس وقت
حیدر آباد میں آیکا مانی نہیں۔ اللہ و تا الحق سے تنظر بدے محفوظ رکھے۔

ال آمام منتقوے ذرا میٹ کریے بتاتا چلوں کہ جاتی صاحب ال خاکسارے بھی دلی میت رکھتے ہوئے ہیں۔ جس کا اندازہ اس بات ہے لگا جا سکتا ہے کہ 1998ء جس درگاہ عالیہ پر منعقدہ ایک محفل جس اس بات ہے لگا جا سکتا ہے کہ 1998ء جس درگاہ عالیہ پر منعقدہ ایک محفل جس محترم حاتی صاحب نے جھے سعادت عمرہ کی ٹوید سنائی تھی اور فرمایا تھا کہ ہے جر ساتھ مدینے چلیس کے لیکن اہلیکی ناسازی طبع جو کہ کئی سال پر محیط رہی اور آخر کا ران کا انتقال ہو گیا۔ گر کے حالات پر بیٹا نیوں کی نذر ہو گئے۔ جس خود کی بارطیل رہا۔ قبلہ حاتی صاحب پر الشرزب الموث ہے رہتوں کی بارش فرمائے ۔ اکثر فرمائے کہ رہا۔ قبلہ حاتی صاحب پر الشرزب الموث ہے رہتوں کی بارش فرمائے ۔ اکثر فرمائے کہ برائی مدینے کے لئے کیا پر وگرام ہے۔ گر جس اپنے مالی حالات و کیمنے ہوئے ہوئے ہوئے کہ دین جس نے قبلہ کرایا کہ جس ہیں شریغی مدینے کر دیتا تھا۔ مسلسل ناسازی طبع کی وجہ سے ایک دین جس نے تبلیہ کرایا کہ جس اب حریثان شریغین ضرورہ جاؤں گا۔ فروری ۔ باری 2009ء جس فاکسار نے اپناارادہ اب حریثان شریغین ضرورہ جاؤں گا۔ فروری ۔ باری 2009ء جس فاکسار نے اپناارادہ

قبلہ مائی صاحب کے گوش گزار کیا۔خدا گواہ یہ بات میں بری سیال سے کہ رہا ہوں ل حاجی صاحب نے قورا فرمایا کہ آپ ضرور مدینے جا تیں مے۔بالکل فکر نہ اریں ۔ جانے کی تیاری کریں اور پھر ایک دن ایا آیا کہ حضور علیہ السلام کی نواز شات کے درواز مدکمل محقے محترم حاتی صاحب نے ممل طعام وقیام کے افراجات عطافرمائ \_اسطرح بدراقم البيلعرت تديم اورجموني صاحبزاوي عاجي ساحب کی دعاؤں اور محبول کے ساتے میں حرمین شریقین عمرے کے لئے روات ہو ك ـ 16 ايريل 2009 مكوداليي مولى تواس مر ديجابد في دركاو عاليد برحظيم الثان التقباليه كاابتمام كيار حاتى صاحب كى نوازشات كيديسين لحات يس بمى فراموش نبین کرسکا۔ حرم دینہ جاکریت جا کر جاتی صاحب پر حضور کا خصوصی کرم ہے۔ وہاں الله الله الكاجيم من يهال خوديش آيا بك بلوايا كيابول-20 ون كستريس وره را ركيس مى كى بى يريشانى كاسامناندكرنا يدار كيكداس بى حاتى صاحب كى يائى جعموسى تصرف الكاوعنايت ادربنده يرورى شال تحى -

پیچاہوں میں مدینے در اور بیل فضا کی چکا میرا تصیا ، دربار مصلیٰ سے

بہر حال حاجی صاحب کی انگنت نعقیہ خدمات ، دیبی و غیبی تنظیموں کی قیادت ،علماء ملت کی سر پرتی ایسی کاوشیں جیں جنہیں کبھی فراموش نہیں کیا جا سکا۔اللہ زّب المعزّت آئیس ہر بلا وہر آفت سے محفوظ رکھے اور ان کا سامیہ ہم پر تاویر قائم ودائم رہے۔آھن

ہے۔ اللہ اللہ عزیز کے نامور شاع پر وفیسر سدھ یو نعور ٹی جناب میں احمد جیلا 🐔 کی گاوگاوائے علی نکات سے خادم کے علم میں اضاف کرتے دیتے ہیں۔ ان مرحوام مروراحدز فی کاتعلق ایک عمی کمرائے سے ہے۔ آپ نے اسے رسالے عیات من شنراد احمد عرجمد ونعت كے لكيے ہوئے مضمون" حديدة باد (سندھ) كے نعصت كمو شعراءً" من جمع شال كيا ب- جه يوجوان قلم كارة اكثر سيّد الواراعم ايك التصييح ال ہونے کے ساتھ ساتھ محبت مصطفی اللے ہے بھی سرش دہیں۔ بھیشہ اے مضا ان می محبوں سے سر فراذ کرتے رہتے ہیں۔ ان کان کمر می شعرائے حیدر <del>کے ای</del> بذريع اولي صفى بإسبان متعارف كروائ والاتمايات نام جناب مزيز احمد والمسأماكا ہے۔ ایک متنارشام دوانشور یروفیسر سرورلوار تجمیوکاشکر گرار ہول کہ آپ نے مسین بيه حي نعتون کي اصلاح فريالي - ١٠٠٠ معروف صاحب ديوان شاعر جناب سيد مستقيل اجد شارب كامنقوم \_ نعتي جموعد كلام ساقى كور ما كالله كى يشت برمرة م ب الم عبد الديد فورى ميدان محافت بن انتيازي ابيت كرحال بن - كل معروف اخبار است ل الى خدمات انجام دے يك يل دوزنام جرأت شي أن داؤنڈرر يوريم مي رے رہودنعت بیجھے ول عقیدت رکتے ہیں۔ الاہرادرم سعیدا جد ( ہوال شہرال عز دور یونین ) کے مهدر ہیں ۔ وفا شعار ،ورحوصد مند یو جوان ہیں کارگز رکی نصے ٹی مير كالعن سائلي بين- بههر ول مزيز المنسار ومهربان ، وبراطف **داكثر حا خزامه شعیب بیان 10 لطیف آباد کی سر برگ اور عانت جرمحد میرے شامل اللہ** ے اللہ براور اور من برجنا ہے اسلیم منتخ یونسٹریٹر اوقاف ایک سیجے بخلص اور ماون ا ست

محکہ بائد بخن دل تواز ، جان پر سوز کی ہے دنھی سفرمیر کا دواں کے لئے

نیز ممرے بہت تل بیارے شفق ومهربان سابق برلیل گورنمنٹ مرزاقلیج بيك بارسيكندرى اسكول وكالج حعرت خواجه مونى محمدا قبال شاه چشتى معيني ظهورى أي ب كمال على اولى اورروحاني اسكالرين -جو محمد جميث دعاؤس سے نواز تے رہے ہیں۔میرا نعتیہ جموعہ کلام آپ ہی کی وعاؤں کا ثمر ہے۔جہ یا کتان کے متاز نعتیہ اسكائر، شاعرداديب مصنف نعتيه انسائيكلويية بامر حدونعت كراحي جناب شخرادا حدى ه برانه کا وشول سے تی میری تمام کما بین اشاعت پذیر ہوئیں۔ جناب شنم اواحمد کی قلمی اورعلى محية ل كابيس تبدول سے محكور ومنون مول .. ماورمضان المبارك 2009 م یں وحوم نی وی سے نشر مونے والے انفرو ہو برقوی اخبار کے چیف جورو جناب سید راحت على كالمى كايس تهد ول ے مفكور مول من خطيب خوش وال مفتى زمن \_حصرت علامه منتى احد ميال بركاني أيك خوش مزاج اورشفيق عالم وين جيراآب نے میری کماب میلادسان پر محتول سے معورتبر ولک کرند صرف جم پراحسان فرمایا بلكه برمكنه تعاون ش چيش چيش ر ب- بهاستاذ الشعراء - ماير شعر دخن ععرت علامه الور يريكى كود نيائ شعر وفن على كون نيس جانبار بحثيب استادآب جحد يربيه عد شفقت فرائے رہے ہیں۔ مری تمام کابوں کی اصلاح آپ نے عی فرمالی ب-جيشبشاو تغزل كبدمثق نعت كواستاد خلش مظفر نجى بدے زمانے ہا فاكساركي رجمائي فرما رب بين كتاب كسر ورق ير أستاد كا قطعه آويزان

بدانہوں نے اینے شمر می فروغ نعت کے لئے تمایاں خدمات انجام سی میں۔ کامیب کافلیں کرناان کی شاخت بن چکاہے۔ میری کتاب کی تقریب روا کے بھی کر یکے ہیں سلیم میمن کا انداز نظامت مجھے یا کتان کے تمام نقیب ان محفل عد زیادہ پہند ہے دوسین اشعار سنانے میں کمال میدرت رکھتے ہیں۔ ایک بحثیت است اناونسر جناب اميد على بهلم كى نعتيد خدمات لائق صدستائش بين - تين نعتيد فتحاه کے مرتب کرتے اور بے شار نمائندہ مختلیں منعقد کرتے کا اعزاز حاصل ہے ہا<sup>ہ م</sup>ا مو مرمل يرائذ آف يرفارمنس (مدارقي الوارق) يافتاتنا خوال بيس يم من عاف یں درہے میں ایا کتان مجر میں کمیال ساعت کے جائے میں۔ جن انعت خوانی محس لا برا حرفر بدی کا این ایک شخص ب\_به سین آواز سے حزین بوتے کے ساتھ سانسے خوش ہوشاک بھی ہیں ہید فتقق الدین مہای کی ہے نظامت کا اعداز سب سے أ ووصرف اس کے کدیے نہاہت بااوب اور معنی رسول ہے بہرومند ایں۔ریکا فريدي آج كل دهوم في وي عد با قاعده وابسة جي اور بحيثيت ناظم نعت خوب فري ترتی کرد ہے ہیں۔ المحصد نعت کی پر کیف ساحتوں میں جس نعت قوال سے بسرا تعنق خالصتاً بها أيول جيها ہے، جے درگاو عاليكا در بارى نعت خوال بھى كہتے جي جيم شاعر بھی ہےدونام ہے محد جادید قریدی کا۔ برادرتقیس عالم ش کری نعت کوا ایس کر بھری ہوئی ہے۔ بیانعت س کر اکثر نمدیدہ ہو جاتے ہیں۔ان شاہ اللہ یہ بہتے۔ مير \_ ساته جابت كا اللهادكر تروي كربه العت خواني عن يحييت شاكر محمد جہا تمیر منتوری جمریم من اقبال اور تعمان توم نے بند مقام حاصل کیا ہے۔ اگر اس طرح ادب كرتے دہے تو بہت آ كے جائيں محد القادر ملك من تي علا م میں۔ برلحد تعاون علی بیش بیش رہتے ہیں۔ بیسر بیل کمپری بہیسید وائر سیکنڈری اسكول جناب برونيسر مح سعيد صاحب كي محبت قابل تحسين ب الإجناب تلمير احمد قریش، جناب اللیف احماجمیری و بنی کافل بین چیش چیش دیجے ہیں عوں شریف معزت خواجه غریب نوار سال سال سے بوے اہتمام سے کررہے ہیں جہا قبلہ يزرگوا بحترم عاشق رسول سائيس دا اكمز محد على صديق يك محبت بجرى شخصيت در مكنه تعاوں کرنے والے انسان ہیں۔ میرے کھر کی سال شکفل میں بڑے اہتمام سے شريك موت إلى - جهاد كرصاحب محافل ميلاد كي تقريبات سالها سال معقد كرف كا اعزاز ماص ب المسلك المستت ك لئ واكثر سيد الورطى إدى كى خدمات جيشه ياد ركي جاكي كي يهيم معروف نعت آرك زور مدوح روال الجمن الينان ساية بيتن في اكرم قرائي اخر العادري كي نعتيه كاوسي حماج تعارف حبيل -سالها سال عدمتوا ترعظيم اشان محافل مباز وتنتيم ايوار داور يوم حسين شاياب شان منانے کا اعز از حاصل ہے۔ یہ ایک سلقہ مند اور حکمت تق ون فرمانے والے کلعس دوست ہیں۔سید کاظم علی حشی شعراء کی معروف او نی سیھیم بزم فروٹے ادب کی ترقی کے ليے رات ون كوشال بين المحترم جناب محيوب عالم شرواني المجن شيدائيان رسول الله كالمن كرورة روال إلى بحب عيدميلا والني الله كالمناف كى باره روز وتقريبات يس جھے بھی حاضری کا موقع عط فرماتے ہیں۔ جہت ج کل معروف نعت کو عابد علی شیران کی بہت ک نعیس مقبول ہور ہی ہیں۔ یہ بیجہ نعت خوانی مجھے بوی عز توں سے الوازية بيل- المن فول بيان منا خوال رسول عليه معروف نعت آر كنائزر، شاعر بقیب محفل محترم استاد راؤ شو کمت علی مصطفائی کا تعلق نواب شاہ ہے مخصرے کہ آپ کاب کے یادے میں کیادات سکتے ہیں؟

الشاتبارک وقت فی حضورطیدالسل مستعمد فی میری استی کوتیوں فرمائے اور اس کے صلے میں تمام مسلمین ومسلمان میری ابید مرحومہ کو تر یا نواور میرے اور اس کے صلے میں تمام مسلمین ومسلمان میری ابید مرحومہ کو تر یا نواور میرے والد مین گرا می کو جنت الفرا اس میں اعلی شام عطا فرائے ۔ مار بارحر بین شریفیں کی ما اوب عاضری نصیب فرمائے اور ماضی حصرت الی ت کلشن المی صاحب کوداد مین میں مرفر وقی عطافر المے ۔ آئین ۔

این دعااز من داز جمله جهیسال مین باد منتظر کرم

صاحبزاده خان اختر نکه یم نقشیندی نتیب ایوان نست حیرته اور پاکستان

خان اختر نديم تتشبندي

سيريزى جرل المجمن عاشقان مدمعة مصطفى متائعة و من قاب اوب حيدر آباد يا - الوان تعت در قى 227 يون الطيف آباد حيدر آباد موياك 3838365 -0346 حسین کھو کھر ،استاد غلام حسین ،اشغاق الدین قریشی بداشد ﷺ جھے شہباز ،عطا ،الرحمٰن فریدی قامی جگرگاتی اوریز کیف آ واروں سے حزین ثنا خوانِ رسول ہیں۔ بیا کٹر میری نعیش پڑھتے رہے ہیں۔

یے دہ محترم عشاقان مدینہ ہیں حن کاعملی تعاون بھیت اپیار چاہت اور عقیدت آئے بھی میر ہے ساتھ ہے۔ وگرند من آئم کہ من دائم ،القدر ہے العزیت ال سب پر ہے کراں کرم فرماے۔ آجن۔

بہر حال آواب تقامت میری رندگی کا باحصل ہے۔جس میں میری 32 سالفتيدندگ كاسر اليشال هـ ين بيس وبنا كركوني شے جميائي والے الهذا اسيناس متبرك كام عدمة قان رمول من كونيسياب كرف كوشش كرد بابول. ايك دن الميهمجر مدنفرت عديم جوكه ايك نامود حراح كومكيم محمرا قبال كفض کی صاحبزادی ہیں۔ شعرواد ب سے دل جمہی رکھتی ہیں۔ فریائے لکیس کہ و متمام تعیس وقطعات درباعيات واحاويث وروايات جوآب اب تك مي فل مي مناجيكے بين انہيں سَمَا بِي شَكِل عِين ترتيب ديه وي تاكه عام صاحب ذوق ، ثناخوان رسول ، هراتل علم و بنر باخصوص مهنير راناوسرز معليس اور ناظميس محافل نعت منطقة اس ع بحريور استفاده رغيس بينانج ابديم مدت اصرار، لقدم وجل اوراس يحجوب الملطة ك مرم ب بایون بر تلیدر ساس کام کی تحیل کا آناد بردیاد اس تاب کے بارے یں جب میں نے اپنے استاہ جناب سیف محمر فی اورتایا تو انہوں نے کتاب کا تام آد ب نظامت رہی راقم نے اپنی انتہائی کوشش کی ہے کہ نماب شطیوں ہے مبر ا ہور مکرات رہے عظی مملن ہے۔ آواپ فظامت میں کوئی تیمرہ شامل بیش۔ یہ سے یہ

### كرتے دہتے إلى۔

فان اختر ندتیم کونعتیہ کمپیئر تک میں انفرادی سنام حاصل ہے۔ بھی ان کی وجد بہجان وشہرت ہے۔ان کے انداز نظامت کوسب تک بدکرتے ہیں۔ بیتلیم کے محے نتیب محفل ہیں۔ اس حوالہ ہان کے کئی شاکردے موقعیان محفل بن میکے میں ۔ جن میں خاص طور پرمجر رفیل شیخ فریدی محمد احمد ﷺ است کو آنسه نفید کا دری سیّد ذی شان قادری اور شعلہ بیان محمد شریف الدین نیر کوئما بال مقام حاصل ہے۔ ویسے المين بالانفاق مب عي استاد حمليم كرت بين - بلند باسيدت كو مفرت او يب رائ بوری اٹھیں شہنشاہ نقابت کر کارتے تھے۔موصوف، ال فن میں جوشبرت اور ا بندگی حاصل ہے وہ ان تی کا حصہ ہے۔ انصیں ہرنہ ان و ادب میں کی ہزار نعتیہ اشعار وقطعات اورر باعمات زبانی یادی بسر کابیا کست ندول می اظهار می کرتے رہے ہیں۔ جب کرامی علوم اسلام ہے جم گرانگا اے۔ بی دجہ ب کہ خاص ا حادیث ور دایات از بر بین به یمی خوبیان مین جوانعیمس سے ہم عصرول سے ممتار کرتی ہیں۔آج کمی ہمی نعقیہ مخل میں ان کی شرکت محف او دوب سے خوب تر بنانے ک منانت ہوتی ہے۔

جی ہے کہ خان اخر ندتی کی شخصیت ایک مستن اور مر بوط اکیڈی کا درجہ رکھتی ہے۔ کہ خان صاحب فروغ نعت کے مطلب ہوت ہمہ وقت کوشاں میں۔ ان کی بین فروغ نعت کے مطلب ہوت ہمہ وقت کوشاں میں۔ ان کی بین ویار کسی کی مرہون منت دیں بلک اس میں ان کی خدادا وصلاحیتیں اور ان کے دالد گرامی استاذ الشخراء آفاب طریقت کا بہتا سبطم وادب حضرت صوفی ماسٹر منیرخان بین کر آبر آبادی نتشیندی جماحتی رحمت اللہ سلیا حصوصی تصرف شامل ہے ماسٹر منیرخان بین آر اکبر آبادی نتشیندی جماحتی رحمت اللہ سلیا حصوصی تصرف شامل ہے

# خان اختر ندیم نقشبندی کی نعتیه خدمات

سر بین در دین در افزاد احمد در مرج اسکافر شعبه علیم اسلای جامد کراچی در احمد دافت " کراچی

# فان اخر عريم ك فخصيت أكيدى كادرجد كمتى بـ

خنوص محبت والمست عقیدت اوب اورا کساری سے ملتے والا ایک عام سما مختص جدب استی پر اپنی نظامت و خطابت کے جو ہرد کھ تا ہے تو عشا قان رسول میں فقط عش عش عش کر اشجے ہیں۔ ان کی زبان سے لگے ہوئے ہیں خند میر ملا کر جدند تا فیے ور قان مارو بھے دول کے اس خند کی مرال کی زبان سے لگے ہوئے ہیں۔

نتیب ایوان نعت و نعتیہ شاعر کی حیثیت سے شہرت رکھنے والہ فخرِ سند دہ نعت کمید کرنے والہ فخرِ سند دہ نعت کمید کر کمپیئر خال اختر ندیج نعشیندی تحریر و تقریر کے میدان کا ایک ایسا شرسوار ہے۔ جوایک طویل عرصہ ہے وادو ملویل عرصہ ہے ویجی قبل جس اپنے آئی کم لایت دکھا کر مجان مصطفیٰ میں ہے وادو محسین حاصل کر دیا ہے۔

فان اختر ندیم کے وجود میں عشق مسلفی میں کی روشی کا ایسا سمندر موجز ن ہے جس سے ہرانل ول مستفید ہوتا نظر آتا ہے۔ جب کہ ہرا کیک سے خندہ پیشانی سے منا ملا تا اس کا شعار ہے۔ ویسے تو حیدرآ ہوش نعت پرتح رکی کام نہ ہونے کے ہرا برہے۔ محر پھر بھی خان اختر ندیم اپنی بساط میں دیجے ہوئے کے دنہ کے تحریری کام أداب بنطانه

ے والد گرامی کے در جات عالی کو بلند قر است. اور ان کا فیض خان اختر ندیم پر جمیشہ جاری دساری رکھے۔ آجن

وجيشهرت وانتياز

نظامت کا خاراس وقت می خان اختر سی آن شاخت کا معتبر دمتند والہ ہے۔
خان اختر نہ تیم کا شاراس وقت میں مثالی نقیبا ہو گفل میں ہوتا ہے۔ حیدرا ہو میں ایسے
عینوں کی کوئی قدر نہیں۔ اس قدر ہوئا تا غیر شیر یہ ذیات گفتگو کرنے والے صاحب طرز
نقیب محفل کو تو بہت آ کے ہوتا جا ہے تو ہے کر حتی ہے کہ بیاب بھی اپنے منصب کے
اختبارے بوے مرتب پرفائز ہیں۔ انہیں سے الزاز بھی حاصل ہے کہ وہ پاکستان کے
اختبارے بوے مرتب پرفائز ہیں۔ انہیں سے الزاز بھی حاصل ہے کہ وہ پاکستان کے
تقریباً تمام می عامور علائے کرام فرا و حضر کان اید ح خواتان رسول الفاق اور نعت کو
شعراکی نظامت کا شرف حاصل کر بچے ہیں ۔
تعمراکی نظامت کا شرف حاصل کر بچے ہیں ۔
تصفیف و تا لیف

اس حوالے سے خان اخر عربیہ نے متفرق جہات میں جوہر دکھائے بیں۔ پاکستان کے تقریباً ہرا خبار رسائل و جیز مدیس ان کی بجوں رکھی گئ کہانیاں مضایمن تبعرے منظومات اور تعیس شائع معدیجی بیں۔ان کی نمایال تعنیف و تالیف کا جائزہ پھھائی طرح سے ہے۔

1) اخبارجہاں ش 7 جومائی 1974 وکوسیجی کے لیے سب سے پہلی تھم شاکتے ہوگی۔ خواکی ہمیشہ مہا حدث کروں گا خواسے ہمیشہ محصیت کروں گا آپ کے والد بوی روح م ور شخصیت کے حال سے ۔ آج بھی ان کا شار استاذ الاسائلة وش كيا جاتا ہے۔ وہ ايك روحاني پيشوا 'با كمال ثنا خواں وثنا كو تتے۔ اردو فاری اور صرف ونحویس متیازی مقام حاصل تق حقیقت بیاب که معزمت صوفی ماسترمنير خان صاحب رممت القدعديدي يوري زندكي عشق مصطفى عليفة كالملي تموند تمي زہد و تقوی تازید کی جاری رہار حق کر آپ کا وصال بھی اوا یکٹی ٹماز فجر کے بعد ہوا۔ عوامی فلاح و بہود کے ہے بے شار کام کے۔ جامع مجد سرفر ز کالونی کے صدر اور ز كو و وعشر كيمنى كے جيئر مين رہے۔ كى ورى كن بين اور الكسين \_ كوش تشين آ ب كى سرشت میں داخل تھی۔اس ہے بھی بھی نام ونمود اور ریا کاری کوایے قریب ندآنے دیا - خان اخر عربیم کے دامد کرای کی شاعری کا کشر حصد مدح مجوب مطافع بر مشمل ہے۔ صوفی مد حب کو با بد ملت معرت علامه بیر سید جماعت علی شاه محدث علی بوری ادر صاجزادہ پیرسید محرصین شوہ جماعتی سے نہ صرف شرف بیعت بلکہ خلافت واجازت بھی عاصل تنی اور بچھے یاد ہے کے صوفی اسٹرمنے خان صاحب اپنے تھر پر ہرسال عرت شریف کی تقریب منعقد کرتے ہے۔ جس میں نامور ثناخواں اور شعرائے کرام کی كشرتعداد بردي عقيدت واحرام معشريب بوتي تقي - 1992 مين فان اخريد كوان كے والد بزر كوارئے حدوث واجارت عط فرمان يدب كرموني عبدلمتيم خان نقشهندی مجی خان احد ندیم وخد ونت ب بور بیش بین - آب ایک وضعدار يرييز كاراورز بروتقوى يديمرف از محصيت ين - ين ووقوجبات اورتقع قات ين ك حبورات خان اختر ندميم كي زندى ش انقلاب بيدا مرديا ب-القدرب العزت ان

نتوی (شرید) (13) نعتیه انتخاب نمدیده تمدیدهٔ اور انگل چیده مرتب بعروف تنیب محفل ملک صوفی امیدیلی بهلم حیدر آباد انشرو بوز

پاکتان کے کیرا خیارات درسائل جی انٹرویوٹا کے ہو چے ہیں۔ جب کہ
دور نامہ" پاسپان" حیدرآ ہوجی تین مرتبہ کسل صفح پرائٹرویوز کی اش عند و تی ہے
ائٹرویور چیئر بین برم فلاح طلعت صابر علی ایڈوکٹ ڈاکٹر سیدانوارا جراحداز براجہ
وار ٹی نے تحریر کے ۔ جب کہ فان اخر تی تی کی واپسی کر بین ٹریفین پر معرو ف سحائی و
کالم نگار عبدالوحید فوری کی جانب سے دیے کیے مطبع الشان استقبالیہ کار پورٹ
دوز نامہ" کامیاب" حیدرآ باد نے فویصورت کیٹ اپ کے ساتھ آ دیے صفویرٹ کے
کی دریڈ یو پاکتان سے آکو تعین اور تھاریز تی بی ۔
مطبوعہ کتب ہا کے تعین اور تھاریز تی بی ۔
مطبوعہ کتب ہا سے تعین ۔ خان اختر تی بی مقتبد دی
مطبوعہ کتب ہا سے تعین ۔ خان اختر تی بی مقتبد دی

معبوعه رب باست وقت و حال المراعد به سبندی الرشال مت الرشال مت الرشال من المراعد با مرتب الرائد الم التب یا کشار الا مرتب الم التب المنافق الم

2) سب سے پہلی نعت 1978ء اخبار معدادت کراچی بیشہ ہے دل میں خیال تھر نظر دیکھتی ہے عمال تھ

3) ابتدائی غزل اقبار پاسیان سوریا اور تکس حیدر آباد 2 ستبر 1986 م لیول په شکوه سیا تبیس ہے کول شکایت بھی کی تیس ہے

4) سب سے بہلاانعام-1978 ویس مقابلہ صن قرائت جمی اول پوزیش

ال رسائل وكتب من تبعرول نعقول اور تعارف كى اشاعت بهوكى

(1) نعتیدانقاب "كونیدت" مرتب سیدهامی طی هنی (2) نعتید این کشش انتهامی الواره تعیدت "كرا چی مرتب د افزاد احمد (3) سمال "شهره" معروف اسكال پردفیسر شیق احمد جیل فی سنده ایندر کی (4) ما بهنامه" نوای نعت "كرا چی مدید و برین الحکی می ارسول الله ین فاتی القادری (6) نعتید انتها ب با رسول الله کی ردا نعت کو و برین لدین فی تی القادری (7) نعتید انتها بی الدین قریش معین فال قادری كرا چی فی القادری (7) نعتید انتها قی الله ین قریش معین فال قادری كرا چی العید انتها به الله ین قریش معین فال قادری كرا چی المعید بی "كرا چی (10) میمیام " عقیدت "سید زیر حدیدرا به (9) میگذ" سلور چی استید بی شریع الله ین فی تی طیح جعفری حدود آباد (11) نعتید مجوعد "كرا من قرید الله ین فی تی القادری ( 12 ) " افت " فعت قبر جلد ادل لا بهدر قاکش آفی احد

اعتراف2001ء

خان اخر عربی فتشندی شعبہ نعت کے بہت مخلص، نمان ہیں۔ حیدرآباد
کشعراء کی حدوفعت نگاری کو پاکستان مجرش متعارف کردا ۔ بیل خان صاحب نے
مثالی کردار ادا کیا ہے۔ '' اعتراف'' خان اخر عربی کی و الآب ہے۔ جس میں
نوجوان نعت کو دیدرج خوان رسول مخط عزیز الدین خاتی انقادری کی نعتیہ شاعری
کے حوالے سے پاکستان کے ممتاز شعراء حصرات کی آرا ادمنظوہ ت شافل ہیں۔
اعتراف حقیقت کے حوالے سے بیا کیک عدہ کاوش ہے۔

آ واب نظامت

فظامت نقابت اور کمپیئر گل ایک ایم فنی شعبہ ہے۔ بیس علامات اعلان
کے دسرے جس می شامل کی جاتی ہیں۔ قان اختر عدیم نے اس آن کو مرتظر رکھتے ہوئے
آ داب نظامت تری کے ہے۔ موصوف نے اس پڑکشش کسیب جس آ داب نظامت
کے حوالے سے ناظم کی خوبیاں معرکت الآراحمد بیو فعتیہ اشعار قطعات منا قبات اور
ان منظو مات کوشامل کتاب کیا ہے جو بیر مرصہ 32 سال سے مختف فریمی اور فعتیہ
عافل جس سنا کرداد و خسین حاصل کرتے رہے ہیں۔ انشاعہ ادا آ داب نظامت ان کی
و کے کہ کابوں کی طرح اثر پذیر اور متبول بارگاہ و تب العزامت تا ہے تا ہوگی۔
بہیا دی معلومات

صوفی ماسر منیر خان ساحب پیکر اکبر آباد سی نشیندی جماعی کے صاحبز ادے کا پیدائی تام خان اخر تدیم ہے۔ یہ اختیام حرفیقت نقشیندی قادری

6 نعتیه مجمور کلام ساتی کوژ اس اله این بل 2004 و 2006 میلادستان الله 2006 و 2006 میلادسته پنجتن عبد العمد قادری مرتبه: .. قان اخر تدیم 2007 و 2007 و نعتیه مجموعه کلام سماتی کور علیه الله میرانید و کلام سماتی کور علیه میرانید و کلام سماتی کور علیه میرانید و کلام سماتی کور علیه کار علیه میرانید و کلام کار علیه کلام کار علیه کار علیه کلام کار علیه کار علی کار علی کار علیه کار علی کار علیه کار علیه کار علیه کار علی کار علیه کار علی کار علیه کار علی کار علیه کار علیه کار علیه کار علی کار علی کار علیه کار علی کا

ساق کور علاقے خان اخر عمری تشخیدی کا اولین نعتیہ ویوان ہے۔جس کی طباعت کا اجتمام الجمن عاشقان مدحت مصطفی تلاہے اور آفیا ب اوب حیدر آباد نے کیا ہے۔ انعتیہ مجموعہ کا اجتمام الجمن عاشقان مدحت مصطفی تلاہے اور آفیا ب اوب حیدر آباد نے کیا ہے۔ انعتیہ مجموعہ کا ام سرق کور علاقے وراصل آفاعلیہ السلام کی ان پر بین کرم قربائی کا انعام و فیضان ہے۔ اس کی آب مبارکہ میں 128 اردو تعییں 10 سندھی تعییں اور 31 منا قبات شامل ہیں۔

ميلاوحتان علف

خان اختر ندیم نتشندی ایک قابل فخر اور لائق عزت انسان میں۔ جن کے
اندر محبول کا سمندر سایا ہوا ہے۔ یہ براو عشق رسول انگائے میں سرشار رہے ہوئے ترقی
فعت کے لئے بکھند کھ کرنے کی فکر میں گے رہے ہیں۔ چنانچ انھوں نے اپنی رات
دن کی کر ل قدر محنت ہے نہ بسطانی مطابق اور اخل ق مصطانی مطابق کو عام کرنے کے
دن کی کر ل قدر محنت ہے نہ بسطانی مطابق اور اخل ق مصطانی مطابق میں میں ان کے کے
معراج مصطانی مطابق اور فضائل وُرود کو ہزے دل پذیر آور پزیشش انداز میں میان کیا
ہے۔ ان کی یہ کتاب عاشقان رسول ملے قاور بالخصوص میلا دخواں خواتی نے لیے
ایک عظیم مرمایہ ہے۔

جیلانی ہیں۔ شعر دخن میں تدہم ہیں۔ ٹجی ادر نعتیہ زعر کی میں خاں صاحب۔ بھائی جان سر فحر منت استاد اور فخر سندھ جیسے محبت بھرے القابات سے بکارے جاتے ہیں۔ انعامات واعز ازات

فان اخر ندیم کے اعزازات وانعامات کی تفصیل مختصراً ملا حظہ بیجیے۔ ابہترین نعت کمپیئر ایوارڈ۔1982 منجانب آ ما کوهرمجس حساب پاکستان استو شید نخسن کارکردگی نعتیہ ایوارڈ۔ 7 8 9 1 فیم بیک منعل ۔ برم نوجوانان شائے مصطفیٰ حیورا ہاو

٣- بيث نعت يرفارمرالوارد -1992 - عابد في منده يوته ويلفيرَ سوسائل حيدرآباد

مى رنعتيد خسن كاركروگى رحمت ميذل ايوار في 1996 - بدست ممتاز ما برقانون جسنس رحمت جعفرى وجيئر مين هلعت صابر على ايد وكيث برزم فلاح پاكستان -٥ - بهترين كهيئر ايوار في 1996 - اميد على بهنم بانى الجمن فروغ نعت پاكستان ٢ - رحمت للعالمين نعت ايوار في 1997 - بدست البيكر قومي آسيلى الجي بخش موم وادور الى ج سير قر الزمال شاوية غاكو برعلى مجلس حسان پاكستان -

٤- تاج پوشى - 2 اپريل - 1998 - كمپيئر ونعت كومحد احد شخ قادرى سرفراز نعت كوسل حيدرآباد

٨-تاج پوتی ٹرانی ایوارؤ - 1998 میونی خلیل الرجمان ، قاتلی رحمانی قاوری
 ٩-تاج پوتی منظوم تراج عقیدت ایوارؤ - 1998 سیف تحد شخ - انجمن فدائیان پاکستان -

۱۰-تاج بوشی شیلتر ابوار فر 98 و 19 انسار احمد سیروردی برم غلامان صطفی میلین حدیدرآباد

الدرود كا خات خاد في نعتيدا إوارة - 1999 - بدست مبارك معزت على مديروفيسرة اكثر المرادد كا خات خاد في الإسلام المرادد كا خات خاد في المنظمة الموارة الموارة المؤلم المؤلم المؤلم المؤلم المؤلم المؤلم الموارة المحارة المحارة

سال مديندا يواردُ وميدُل 2000 \_ اعظم قريشُ المدنى \_ ماسرُ محمد قاسم نعت كُنسل حيدرآ باو

المار بهترين نعبت كمييتر الوارة و سند 2000 - مافظ سمي افرحمان و المجمن فدائيان دسول معلق حيدرا باد-

10۔ شعبۂ نعت کمیسیر تک کی اعلی ترین خدمات کے اعتراف میں رحسن کارکردگی نعتیہ ایوارڈ-2000۔ مشاور تی کونسل معدر نعت نی نطقہ ایوارڈ۔

\* و-الواردُ رئيس المجد وين معزت قارى محد طفيل تعشيندى ـ علامه قارى محد سليمان الوال آف مرويد ـ 2001 ـ المجد وقر آن اكيدُى بإكتان ـ

۱۵ ایقم فرایخ تحسین ایوار و 2004 مای محمد یوسف اقمرانگش پلک اسکول گلفس مالی ۱۸ میل انگلس پلک اسکول گلفس مالی ۱۸ میل و اطلیف ۱۸ میل و اولیف میل داد و بیستر سر و رئواز بجمهیو بیشا و اطلیف علمی واد فی مرکز کوفری دادو

19\_ بهترين مناخوال وكميسير الوارق 2007 - محمد اكرم اختر القاوري يختصيل ناهم صابر

یں کو تیں تھا میری حقیقت بھی کی کھے دلتی اُن کے کرم نے زیست کے رہے پڑھائے ہی

وجه تصنيف آداب نظامت

و کھیلے زیانے میں مشتر کری الل میلاد کا طریقہ راستان الیکن اب اندار اور طریقہ بدل کی ہے۔ نیاد و تر کافل نعت منعقد کی جارتی جیس، چس بی شاخوانوں کو افزادی طور پر دعوت نعت دی جاتی ہے۔ یہ الی صورت ہے کہ جس بی ناظم محفل معفن ساناؤ نسریا کمپیئر کی خدمات اشد ضروری جیس شام ملوم وفنون کے محفل معفن ساناؤ نسریا کمپیئر کی خدمات اشد ضروری جیس شام ملوم وفنون کے محتب اور درس گاجی موجود جیں۔ گرفن نظامت کی با قاعدہ محفظ درس گاہیں۔ چنانچہ اس فیامت کی با قاعدہ محفظ درس گاہیں۔ چنانچہ اس فیامت کی با قاعدہ محفظ درک گاہیں۔ چنانچہ اس فیامت کی با قاعدہ محفظ درک گاہیں۔ چنانچہ اس فیامت کر ہے کی آئے۔

داظم محفل كي ذمه داريان اور اوصعاف

کپیئر با صاحب ، نار دوصله مند اور تعنیم یوفته سید این ای واجه در مت اور شیری زبان بود بنا مسافی ساخته سیم سیم الله ای این به در بنا محب مسطفی ساخته سیم رشاد بود به الم طب دت پنده بخوش الباس اور نماد کا یا بند بود به نام محد من محبر اور دیا کاری سے حقیالا مکا ما شیخ کی کوشش کرے دین مور و بیاد می این مور درجه بیاد کرے دین مور و بیاد کو اناین رسول الله و و داری سے حد درجه بیاد کرے دین محمل کو ایس طرح منظم کرے کہ کی نعت خواں سے مام اور معزز و فض کی دل آزاری سے بواور محفل کا فروق برحت با جائے کہ آزاری سے بواور محفل کا فروق برحت با جائے ہے دیا تھی و کرے اس کے کہ مردری ہے کہ نائم محفل کو تقیر نہ جائے ۔ بیسب کی تعظیم و محمد اکر تا ہے۔ اس لئے کہ مردری ہے کہ نائم محفل کو تقیر نہ جائے ۔ بیسب کی تعظیم و محمد اکرتا ہے۔ اس لئے کہ میر بان محفل اور ایل ول حضر ات کو بھی جائے کہ و مناظم کو بالسختان تا توال کی طرح واد

حسين قائم خانى الجيئر \_ المجمن فدائيان رسول حيدر آباد \_ ٣٠ \_ نحسن فعت رسول الفضة الوارة بحثيبت جي - 2007 \_ سيد اكرم على شاه المجمن اساتذه يا كستان

الا يبشن حيد ميدا والتي تفاقية بحسن كاركروكي الوارف فيان اخر تديم بحيثيت كيدير 17 يبس فوراني 17 يفت كو شاهر - 8 0 0 2 - بدست مبارك حضرت علامه كوكب فوراني اوكا ذوى الحاج كلفن البي فريدي في تفسيل عاظم الجيئر من برحسين قائم فاني محود قريشي في المن البي فريدي الجمن فدائيان وسول ملاقية في اكتان و المركي المتر القادري المجمن فدائيان وسول ملاقية في اكتان و المستركية والمناف ورسرى برائذ آف برفاره من الوارف 8002 - قارفت أينال والمشركية في اكتان و مبدالي وروماني عبد لوديد فوري سيده بدالحديث و المناف عبدالي وروماني عبد لوديد فوري سيده بدالحديث و المناف عبدالي وحضرت صبا الكرآبا وي الوارف 2007 م

10- فان اخر مرئي 25 ساله نعته فدمات الدارد - 2009 - ميدالرجم كدى - آل إكتان كدى پنون البج يشتل موسائل بدست الجيئر مسارقاتم فانى يحرعرشادكدى -٢٧ - بهلى بارزيارت عمره - 1987 - بهمر و معزرت الحاج سيد قمر الزمال شاه -١٤ - دوسرى بار زيارت ممره - 2009 - بدسيله معزرت الحاج كلشن البي \_ جيئر مين ٤٠ - دوسرى بار زيادت ممره - 2009 - بدسيله معزرت الحاج كلشن البي \_ جيئر مين ٤٠ الموركين درگاه كن سيدنا عبدالوماب شاه جبيلانی فرست ايبري مي ايش الوارد الحق البيري مي ايش الوارد الق اعودُ بالله من الشيطُن الرجيم ٥بسم الله الرحمن الرحيم

# ابتدانيه

آج میں بہاں جس ذات بایرکت کے ذکر فیر کے لئے عاصر ہوا ہوں وہ اس یا کمال و با جمال ایس ہے کہ جس کے دوئے تابال کے سامنے فور ہید جہال تاب کی روشنی بھی مائد ہے۔ جس کے درخ اتور کے سامنے تمام رعنا کیال نظام جیں۔ جس کی شہنشائ کے سامنے بوے بوے تا جور۔ اولیا ہ۔ اصفیا ہ۔ فوث۔ تظہ۔ ابدال۔ تکندر۔ اہل علم و دائش کے ترب کئتہ دال۔ وحش و طیور۔ حور وقصور جن والس و تکندر۔ اہل علم و دائش کے ترب کاتہ دال۔ وحش و طیور۔ حور وقصور جن والس و تک میں۔ اور آپ کی شان تو یہ ہے کہ جہاں جریل بھی ہاتھ کا کھے۔ سے کہ جہاں جریل بھی ہاتھ کا ایک ہے۔ اور آپ کی شان تو یہ ہے کہ جہاں جریل بھی ہاتھ کا کھی۔ سے کہ جہاں جریل بھی ہاتھ ہے۔ اور آپ کی شان تو یہ ہے کہ جہاں جریل بھی ہاتھ ہے۔ اور آپ کی شان تو یہ ہے کہ جہاں جریل بھی ہاتھ ہے۔ اور آپ کی شان تو یہ ہے کہ جہاں جریل بھی ہاتھ ہے۔ اور آپ کی شان تو یہ ہے کہ جہاں جریل بھی ہاتھ ہے۔ اور آپ کی شان تو یہ ہے کہ جہاں جریل بھی ہاتھ ہے۔ اور آپ کی شان تو یہ ہے کہ جہاں جریل بھی ہاتھ ہے۔ اور آپ کی شان تو یہ ہے کہ جہاں جریل بھی ہاتھ ہے۔ اور آپ کی شان تو یہ ہے کہ جہاں جریل بھی ہاتھ ہے۔ اور آپ کی شان تو یہ ہے کہ جہاں جریل بھی ہاتھ ہے۔ اور آپ کی شان تو یہ ہے کہ جہاں جریل بھی ہاتھ ہے۔ اور آپ کی شان تو یہ ہے کہ جہاں جریل بھی ہاتھ ہیں۔

اب میری تکاموں میں چھا تھیں کوئی جیسے میرے سرکار جین ایسا جیس کوئی

دیمی جیس می نے اگر شان مصطفی و کیمے کہ چرکنل ہے دربان مصطفیٰ

پیاران کا اگر ماصلی ایمان شب گا موس آو بری بات ہانسان تدب گا تعظیم محمد می تو ہے جان عبادت عابد کوئی کتنا می ہومسلمان نہ ہے گا و خسین دے کر ہمت افر انی کرتے رہیں تا کہ دہ محفل کو خوب سے خوب سنوار نے علی اپنا فعال کر داراد اور کرے بہتے کہ وقت میں اچھی تفتگواور خوبصورت اشعار سنا کر سامعین کوستنفید کرے بہتا تاظم میزیان محفل کے ذیر اثر ہوتا ہے۔ اسے جائے کہ دو دوران محفل میزیان سے مشاورت کرتے ہوئے انکی بات کو اولیت دے در ایک بات کو اولیت دے در ایک بات کو اولیت کا در سے بہت بھی شائل ہے کہ تاظم معزز وجمتر م شخصیات کی اسے بی شائل ہے کہ تاظم معزز وجمتر م شخصیات کی آلے برگاہ گاہ استقبالے کل سے سے نواز تارہے۔

آ واب نظامت کی تصنیف و تالیف کا اصل مقصد یہ ہے کہ ناظم محفل ہیں شعور و آسمی پیدا ہو۔ معرک الآرائ کشش عشق رسول مقائد ہے۔ حرین اشعار کے استخاب سے مدد لے۔ انجی اور معیاری گفتگو کا ملیقہ پیدا ہو۔ مجمع امید ہے کہا کر تاظم محفل نے ان فکات برحمل کیا تو

وه ایک مثان تقب محفل من سکتا ہے۔ الحمد اللہ اخواج کو نیمی مقالی کے صدیقے اور وسلے سے براورم مقان اختر ترتیم آواب نظامت میں اس تمام امور کو یکی کرویا ہے۔ اس سے ہرعافتی رسول میں مردو خواتین بکمال مفید ہوسکتے ہیں۔

\_ آداب بظامت

پھر جھے خط کار سر ایک معمولی نعت کمپیئر اس محبوب بے مثال کی تعریف و
توصیف بیان کرے۔ بیناممکن ہے۔ جھے بیل نہ جاتی وسعدی کی ہوتی ہے۔ نہ بی
احمد رضا اور بہنراوجیں وجدان ۔ نہ بی اقبال اور شرہ الطیف جیسا عشق اور نہ بی فوٹ
اعظم معین و فرید اور لعل شہباز جیس انداز فلندرانہ میں سرایا تنفی اور مدھیا
محبوب میں لب کش کی ۔ ذبال کھلے تو کیسے کھلے یو ابنی مشکل مرطد ہے۔ عالب
نے کیا خوب کہا ہے۔

نالب ثنائے خواجہ بدیز دال گزاشتیم کان ڈاست پاکس مرتبہ دان تھر است لیکن اس آئیندش ٹمانلیستے کی تعریف وقو صیف اور مدح وثنا بیان شکریں تو پھر کس کی تعریف کریں ۔۔۔ بھنیتا مدح وثنا اور تعریف وقو صیف القدمو وجل کے بعد آپ مستهانی می کوزیما ہے۔۔

میں شکر گزارہوں کہ آپ نے بھے اس وجدانی۔ حقائی۔ مرفانی۔ یزوانی۔
ایمانی۔ مرفانی۔ رحمانی۔ کیف آگیں۔ جال نفین وول نفین۔ روح پرور۔ معطر معظر۔
آرائش وزیبائش۔ سے حزین ومعمور۔ مشق ومستی سے ٹیریز۔ محفل و کرشان صبیب
الرحمان الفیقہ میں بلا کر جھے اور ہم سب کوالٹد زب الموز ت کے شاہکا یو تقیم معزت جمد مصطفی ملائے کے ذکر عائی شان سے کما حقد تیش یاب ہوئے کا موقع عطافر مایا۔ اللہ مصطفی ملائے کے ذکر عائی شان سے کما حقد تیش یاب ہوئے کا موقع عطافر مایا۔ اللہ تب الموز ت ہم سب کے درجات بلند فرمائے۔ آئین۔

تعت بی ول کے دھڑ کنے کا ڈراجہ ہے ترتیم نعت بی میری ساعت مری بینال ہے نعت مرکار دو عالم بی کے جاڈ سوا ورند کس کام کی ہے تعمید سمویائی ہے

### (صاحبزاده خان اختر عرتيم نقشوندي)

مطلب نعت بال کرنے کی نیت کی ہے اس طرح تیری ہی مقلت بیں اضافہ ہوگا تھوے بہتر تو بہت آئیں کے لین اے ندتیم کمپیئر کھے سا کوئی اور نہ پیدا ہوگا

(صاحز اده خان اختر عرتم نقشندی)

ردتی ہے جس شے پر نظر اس میں نظر آتا ہے تو

تیرا ندیم ہے تو

کیے تائے کی ہے تو

اذل مجی تو آخر مجی تو باطن مجی تو ظاہر مجی تو

مجد میں تو کیے میں تو میرے ہر اک مجدے میں تو

قادر کوئی تھے سا نہیں عابر کوئی مجھ سا نہیں

از نے دیے ہیں جان وتن

اس ختم ہے میرا خن

اس ختم ہے میرا خن

## نعت سقيد رب كريم ہے

نعت ہے دونوں جہاں میں ازوال نعت ہے خس طلب کا واسطہ نعت ہے باغ دیہ بطحا کا پھول نعت ہے ہوتا ہے قرب حق نصیب نعت ہے ہوتا ہے قرب حق نصیب نعت ہے ایمال کی دولت ہے گماں نعت سے ایمال کی دولت ہے گماں نعت سے پرواز بالی جرئیل نعت کا مشر جہاں میں سعب ہے نعت صمیر حضرت الیجب ہے نعت کا بانی ہے زب ذوالجدال نعت ہے شاہ عرب کا واسط ورحقیقت نعت ہے شن رسول نعت اظہار جمال مصطفیٰ نعت لے جاتی ہے آ قاکے قریب نعت ہی تعلیم ہے آ واب کی نعت جمی تعلیم ہے آ واب کی نعت خوال شخے آ وم ونو ح وضیل نعت نوس کی حیات قلب ہے نعت کویا کریے بیقوب ہے نعت کویا کریے بیقوب ہے R

روح کے تازک تارش آ ہے سانسوں کی تحرار میں تو ہے قرآل کے افوار میں تو ہے م کے انکار ش ق ہے محد عل بازار عل و ہے مرشد میں سرکار میں تو ہے عاشق میں تو یار میں تو ہے رودول کے اقرار کی تو ہے سرا میں گزار میں تو ہے وریا کی کہار کی تو ہے كميت في الدارار في تو ب بخول ش اشجار ش او ہے عُنِوں میں تو خار میں تو ہے پیولوں کی میکار میں تو ہے ساعل میں متجدحار میں تو ہے مشتی میں جوارش تو ہے

> تو ہے سب کا پالنے والا بر مشکل کو ٹالنے والا کم تھا تدیم ماجزو خشہ تو نے دکھا یا سیدھا رستہ (صاجزادہ خان اخر تدیم نششندی)

ارب! برا مولا ہے تو بندہ بول میں آقا ہے تو ادراک ہے بالا ہے تو بندہ بول میں آقا ہے تو ادراک ہے بالا ہے تو رزاق ہے بہتا ہے تو بر دل میں تو بر جا ہے تو دزاق ہے بہتا ہے تو بر دل میں تو بر جا ہے تو دزاق میں داتا ہے تو پہتی بول میں بالا ہے تو ادفیٰ بول میں اکلی ہے تو تظرہ بول میں دریا ہے تو ذرہ بول میں صحوا ہے تو تو درہ بول میں صحوا ہے تو

### يسبول

ترکیخ کا حرہ ہے اور میں ہوں دل ورد آشنا ہے اور میں ہوں تسور میں ہیں جنت کی بہاریں دیار مصطفیٰ ہے اور میں ہوں مری کشتی نہ آئی ہنور میں نگاہ نا غدا ہے اور میں ہوں شہیدان وفا کی یاد آئی خیال کربا ہے اور میں ہوں گزاروں عمر قدموں میں تمہارے کی اک مدعا ہے اور میں ہوں تگاہوں میں ہے بیکر ان کا میلوہ ہے اور میں ہوں تگاہوں میں ہے بیکر ان کا میلوہ ہے اور میں ہوں

( معرت صوفی اسرمنیرخان پیرا کبرآبادی نقشهندی مجدّ دی جاعی )

معزاج
معزاج کے لئے جو حبیب خدا چا

ہمر سلام قافلہ انہا چا

ہمر سلام قافلہ انہا چا

ہمر سلام قافلہ انہا چا

ہمرات بجد لیے

ہمرات بجد لیے

گر جہاں می محفر کے فوقاں کے باوجود

ویکا چلی اُدھر عی جدھر ناخدا چلا

ہنگام نزع کون ومکان و کھتے رہے

ہنگام نزع کون ومکان و کھتے رہے

ویکا کے نشان منزل تن ناخدا چلا

ویکا کر نشان منزل تن ناخدا چلا

شیوہ برم محابہ بھی ہے نعت
حضرت حتان نے رکھا قدم
نعت سے حیور کی حیثیت بن
آل شاہ دین کا دل نعت ہے
دب کے مب عادے دہ جی نفت
اپ دل سے بھی ساکرتے تھے نعت
ہر گھڑی دہ نے تھے خوش حال ادر گھن
نعت سے قائم ہے شان کی بائٹ
نعت ہے فرمودہ خالق کی ماخت
نعت سے ان کو جلا وجمان ہے
نعت سے ان کو جلا وجمان ہے
نعت سے آئے جل

مصحف دی کا فلا صدیمی ہاندت بیروی دب میں از داو کرم نعت کو صدیق و فاروق وغی فاطمہ زہرا کی منزل نعت ہے اولیا سارے دہ ہیں نعت کو فوٹ بھم بی پڑھا کرتے تھندت نعت بھی فوہ بمعین الدیں حسن نعت بی خبری نشان عمنی بخش نعت ہی خبری نشان عمنی بخش نعت ہے ہوئے تھے خوش بابا فرید نعت ہے جاتی وقدی کی شاخت نعت ہے جاتی وقدی کی شاخت

اس نے سب نعت پڑھتے ہیں تدتیم نعت ہے اک سقیہ زب کریم (صاحبزادہ خان اخر تدتیم نعشوندی)

\*\*\*

----- اذاب مظامت

ہو جائے

جو بھی ان کا غلام موجائے

تاجدادول ش نام موجائ

رحمت من مذام ہوجائے

ور پ حافیر غلام جوجائے

طاب دیر سب جی اے آتا

جلوءُ تحسن عام جوج*است* 

شاہ بلیٰ کے در یہ جانے کا ۔

اے خدا ہتمام ہوجائے

وه باليس اكر مسية عن

ویش خدمت شلام ہوجائے

حير حميا ذكر أن كالمحفل عن

اب درٔود د سلام موجائے ذکر یاد رسول میں پیگر عمر ساری تمام موجائے

( حصرت مونی ماسترمنیرخان پیکرا کبرآ بادی نششندی مجد وی جماعتی )

حضور پاک تک

بہت تھی دُور منزل پاگیا ہوں حضور پاک کو یاد آگیا ہوں نبیس طاقت تھی آتے کی ذرائبی کرم ہے اُن کا بلوایا گیا ہوں ول بحى اى كرساتد جلاً جان بمى جلى جب جانب مدينه كوئى قاظه جلا

پیراب الی حال بیال جموعت رہے می افت پڑھ کے پی عقیدت شاہ جلا ( معنرت معوفی ، سٹرمنیر خان پیگر اکبرآ بادی نقشبندی مجدّ دی جماعتی )

رحمته للعاكمين ينتخ

خدائی سے بہ شان بندگی استے قری تم ہو وہ زبّ العالمين ہے رحمتہ للعالميں تم ہو

بهار اولین نم مو بمال دل نقین تم مو که آغاز دو عالم ادر ختم الرسلین تم مو

کہ اعالہ دو عام حمد ن کے معلم ہوا عبادت سے قری تم ہو

يدونياجس سے زينت بائل ووشاودي تم مو

عمی ارول کو کیا ڈر ہو صاب روز محشر کا عمر معطفے جن شفاعت کے ایس تم ہو

مجمی تحلیل بی شان شفاعت جلوه فرما ہے مجمی میرم تقور میں جہتم آ قریس تم مو

تمہاری شان دشوکت کا بیاں بیکر ہے کیا ہوگا غلام آونی ہے جس کا طائر سدرولشیں تم ہو

(حضرت صوفي ماسرمنيرخان بيكراكبرآبادي تعشيندي يجة دي جماعتي)

نعتين

قطعات منظو مات

اور

نثرى نعتيل

یباں بنتی ہے تقدیر دو عالم ای باجٹ مدینے آگیا ہوں اشہ بطحا کے ردھنے پر بنگئی کر کبوں گا لیجے ہیں آگیا ہوں ایس معدقہ بی تو ہے ہیںرے نی کا بہت چھپے تھا آگے آگیا ہوں انہیں ہے خوف ٹاکامی ذرا بھی مدینے کے قریب اب آگیا ہوں کہ کسی ہے خوف ٹاکامی ذرا بھی مدینے کے قریب اب آگیا ہوں کہ کسی رویا بیٹ کر جالیوں ہے کہی گرا گیا ہوں کسی ہے بھی نے پی گرا گیا ہوں کسی ہے بھی ہے کہی کرا گیا ہوں کسی ہے بھی ہے کہی کرا گیا ہوں کسی ہے بھی ہے کہی اگیا ہوں کسی ہے بھی ہے کہی کرا گیا ہوں کسی ہے کہی ہے کہی کرا گیا ہوں کسی ہے کہی کرا گیا ہوں کسی ہے کہی ہے کہی کرا گیا ہوں کسی ہے کہی کرا گیا ہوں کی کہی کرا گیا ہوں کا کہی کرا گیا ہوں کا کرا گیا ہوں کیا کہی کرا گیا ہی کہی کرا گیا ہوں کا کہی کرا گیا ہے کہی کرا گیا ہوں کسی کرا گیا ہے کہی کرا گیا ہوں کسی کرا گیا ہے کہی کرا گیا ہوں کی کرا گیا ہے کہی کرا گیا ہے کہی کرا گیا ہے کہی کرا گیا ہے کرا گیا ہے کہی کرا گیا ہے کرا گیا ہے کہی کرا گیا ہے کرا گیا ہے کرا گیا ہے کرا گیا ہے کہی کرا گیا ہے کرا گیا ہ

# ناتم الرسلين تلك

آپ کے نام پر جو فا ہوگئے الیتیں دو قریب فدا ہوگئے اور تی فور آیا نظر ہر طرف جس طرف آپ طوہ تما ہوگئے آئے دُنیا جس طرف آپ طوہ تما ہوگئے آئے دُنیا جس خاتم المرطیم سے ذھی آساں پُر فیا ہوگئے آپ کانام لے سے کرچیج ہیں ہم قدا ہوگئے خوف محشر ذرا بھی نہ اُن کو رہا جو تقلام رسول خدا ہوگئے ذکر پاک آپ کاجب ہے ہم نے کیا ہوگئے دکھتے کیا ہے کیا ہوگئے دکر پاک آپ کاجب نے کیا ہوگئے ہیں اُن کی حمرانیاں جس مصیبت میں حکل کھا ہوگئے ہوگئے ہر مصیبت میں حکل کھا ہوگئے

(حضرت صوفی ماسٹرمنیر خان پیگیرا کبرآ یادی انتشاندی بجد دی جناعتی ) بند بند بند بند بند فراق شی میوراور حالب وصال می فائیت و است ہے۔

اس کے سہبا اخر نے کہا کہ

قدت وہ معراج فن ہے کہ جس کے پہلو سے بیٹار

یہ میر سے ریک سخن کو ریک ویٹی ہے ہزار

یکھ وعاکیں، یکھ فضائیں، یکھ صدائی ، یکھ میں کو بیٹار

یکھ وعاکیں، یکھ فضائیں ، یکھ صدائی ، یکھ اول میں

یکھ حبت ، یکھ مقیدت ، یکھ ادب لکھتا ہوں میں

فدت جب لکھتا اول میں

فدت جب لکھتا اول میں

فدت جب لکھتا اول میں

جب نہ تھا کوئی اکیلا تھا وی اجب نہ ہوگا وی جب نہ ہوگا وی اس ہوگا وی صلح کرتا ہے جو پیدا شام ہے ایٹا کرتا ہوں اس کے تام ہے

(انوارمزى)

گزری ہے رات ساری جمائی ہوئی ہے ظلمت ٹارے بھی آساں کے بین آج کور خیرت ففلت کی فیدش ہے اس وقت ساری فلقت اک ہم جیں خیرے در ی امیدوار رحمت بین خیرے در یہ امیدوار رحمت

نعت استحکام ایمان کی دلیل ہے

نعت رسول ثابت آدم ب\_ بجات نوح ب نعت وفاع ملل برانعت

مغائے اساجل ہے۔ نعت گربہ بینوب ہے۔ سوائٹی بیسف ہے۔ تعت میر ایجب ہے۔ نعت اجابت کے درمیان ہے۔ نعت اجابت بیس ہے۔ درخقیقت نعت درسول انتی اور دسول طابعہ کے درمیان ایک مختفر ترین داستہ ہے۔ نعت ملب اسلامیہ کے لئے داؤ سریری ہے۔ نعت ملب اسلامیہ کے لئے داؤ سریری ہے۔ نعت کی سرشاری ہے۔ نعت واردات قبی کا اظہار ہے۔ نعت کا سرشاری ہے۔ نعت واردات قبی کا اظہار ہے۔ نعت عاشقان مصطفیٰ کے لئے عشق کا پر تو جمیل ہے۔ نعت شوق و ذوق والہانہ کے لئے ایک عاشقان مصطفیٰ کے لئے عشق کا پر تو جمیل ہے۔ نعت شوق و ذوق والہانہ کے لئے ایک کی مستند ترین سند ہے۔ نعت استحکام ایمان کی دیل ہے۔ داو باطن کے سے سراغ ہے۔ نعت جمی قبر کے لئے تعتم داہ ہے۔ عالم

چشم زمس کی قسول کاری ہوتی شاب سوس کی خوش گفتاری۔ نسیم سحر خرامال ہوتی شہر مردی بہارال رفضال ہوتی شارت ویلیے کی دل رہا صفاعی مردی بہارال رفضال ہوتی شد رقعی طادی ہوتا نہ چینے کی دل رہا صفاعی آتیں۔ شیر ہوتے نہ جمر حداد بیب کہ کھی نہ ہوتا آپ او ظلفیت کا نتات ہیں وجہ وجو دِکا نتات ہیں۔ مبنب کا نتات ہیں۔ اور یہ پوری کا نتات آپ کا صدافہ ہے۔ وہ خفا نے ہے مرتبہ تھے کو دیانہ کسی کو طلا وہ خفا نے ہے مرتبہ تھے کو دیانہ کسی کو طلا کہ کام جبد نے کھائی شہا ترے شہر و کلام و بنتا کی قسم کہ کلام جبد نے کھائی شہا ترے شہر و کلام و بنتا کی قسم کو اعلی صفرت)

وہ ماہ عرب، ماہ میں ماہ لقا ہے تصویر ہے، توریہ ہے تجیر ہے اکیا ہے اک تورکا میکر ہے کہ بردے جی فدا ہے آفاق میں ایما نہ تو ہوگا نہ ہوا ہے (ادیب دائے اوری)

کتی قومتی وجود علی میں دہر علی نکک و تر کے رہیتے ہے ہم نے بنباد دوئی رکھی یاد خیر البشر کے رہیتے ہے (قمرالدین البحم)

ذکر محبوب کی سید محفل ہے۔ اس میں حاضر ہے جو بھر یارب مرد و عورت گدا بغریب و ابیر سب کی بوری مرادیں کر یا رب (جیل قادری رضوی)

\*\*\*

ر اشکرجس سے اوا کروں مرے مند جس الی زبان کہاں

یہ لوازشیں تری ہے بدہ بے یہ عنایتی تری دم بددم

قو رجم ہے تو کریم ہے مری لفزشوں پہ نظر ندکر

تری خوصلا مری خوضلا ندوہ تھے جس کم ندیہ جھے ہی کم

مقدورہ میں کب ترے ومغوں کی رقم کا حما کے خداو تھ ہے آو لوح و تھم کا جند جند جند جند مری اعتبائے ٹکارٹن کی ہے ترے نام سے ایٹرا کر رہا ہوں

\*\*\*

# ظقت كاتنات ﷺ

 جهال عرش مكال شاو شابل محسن ان نيت معاهب لولاك وجبه تخليق كا كات مصدر لطف وعنايت مجسم لطف وعنايت شير يار ارم متاجدار حرم الي القاسم محراين عبدالله في دمن تورالله بعني صغرت محرمصطفی صلى الله عليه وآله وسلم

نثرى نعت

نعتیہ کمپیئر دوران نظامت بیریا کیزہ جملے بول کرمخل جس محبت مصطفی ملک ہے۔ مجر پورا منا فہ کرسکتا ہے۔

یدوہ ذکر خیر ہے۔ جس کو ہر پاکرنے سے فرال رسیدہ زعدگی ہیں بہار آب تی ہے۔ وقت مشکل جس نے جب ہی جہاں بھی ذکر سرکار کیا۔ یا کرم سرکار کی صدادی۔ وقت مشکل جس نے جب بھی جہاں بھی ذکر سرکار کیا۔ یا کرم سرکار کی صدادی و بین اے موج کرم نظر آئی۔ آپ کا کرم اور آپ کی عطا تو مصیبت کے اعد میروں کا در آپ کی عطا تو مصیبت کے اعد میروں کا در تا ہے۔ آ ہے اب ای بارگاہ مجبوبی ہیں جدید نعت کی سعاوت حاصل کر ہے۔

#### \*\*\*\*

میرے آقا فخر کا نتاہ بھتے ہے پیٹان حالوں اور قم نصیبوں کے احساس کے راز دال ہیں۔ قد بیری کرور اور تعزیری مُند زور ہوجا کیں تو آپ ہی کی نظر کرم پا تسہ پلٹ ویٹی ہے۔ اور پھر تا کامیوں کو کا مرانیوں کا عنوان ٹل جاتا ہے۔ بیہ جناب رحست للحالیون حضور احر مجنی کی تھے ہے ذکر بایر کت کا ہی کرشمہ ہے۔ لبذ ا دوستو ذکر رسول سیجھتے ہے کہی عاقل میں ہوتا جا ہے۔ آ ہے سعادت نعت حاصل کریں۔

# القابات مصطفي سلى الأعليدة آلديمتم

صاحب تائي هم نبوت\_مددنعين بزم دمالت\_اذفع الددجات\_ا كمل البركات - جامع الحنات في آدم حسن مرايا فيرجهم - آية محكم ردمير المقم يخزن جود وكرم في مهل تحم رسل يكعبهُ ول-جال تفيس وول تيس مرور و نياو وي- يتر بطحارماه وني الماستوكعبا منع جود وسخارقاهم كوثر وجنال يخزن سرچشه مدق صفار بَيرِ بربي سفاردافع رفي و باز مشافع محشر يحبوب داور مامل قرآن مارة ب **چارگال عُم خوادِ عاصیال ۔ سرخیل مرسلال ۔ آ دمیت کا پاسبال ۔ سرتاج مرسلال ۔ گخیر** مادق معصب ناطق مطلع الوادحق آشناك منزل ناز و نياز ما في ملهم و كوثر - امام القياضين - فالتي بدروجنين - رسول التقلين - مه لقا- ول كشار خوش نوا- خوش ادا پیشوا رونما مجننی مصطفی بیسین و طنه مزل و مدر بیر و تذیر حمادی و منذر معلم كتاب وتحكت راعي الي الله عاحب قول قيمل مرايا جايت روف الرجم مادب فلل مظيم مركوى و كم يرق صاحب كور ميدكال تاريكول ے لکالنے والے صاحب رفعت و شان ایمان والول کی جان عاشتوں کی مان - ب كسول كاكس \_ ب بسول كالبس \_ بيتى بل يقين \_ ب قرارى بس قراراور فرزال من بهاريش الفي برزالدي قور المعدي كعت الوري ممباح الكلم يشمل أهيم فتلمئ الامم مهاحب الجود والكرم يسيدُ المرملين \_خاتم النبيين يشفيع المذنبين -انيس الغريبين \_ راحت العاشقين \_ مراد المثينا قين مثمس العارفين \_ مراج السالكين رحمت للعالمين- معساح المقريين سيد التقلين- بي الحرين-امام القبلتين حصاحب قاب توسين يحبوب رب المشر قين ورب المغر بين -جد الحن والحسين بمولانا و مولى التقلين- مرسل داور-خاص بيبر بحتى المرتبت سيد عالم بمردد عالم بنود مجسم بنير اعظم معالك جنت رآئ دحت مثافع امت فحج عنہا کی آنکھوں کے تارے ہیں۔ اور سننے جو میرے آقاعلی کونہ مانیں وہ مجرتے مارے مارے ہیں۔

#### ជាជាជាជាជា

نعت رسول علی ان فی زبان می قرآنی بدایت اور روثی کتار ات کا اظهار

منت محبوب کا نکات علیہ کے انسانیت پر لامحد دوانعام واکرام اور احسانات

کے شکر کا اقرار ہے جب مشق رسول اللہ برحتاجا جاتا ہے تو خود ہا خود نگاہ وول اور زبان و میان نعت پڑھنے ہیں۔ نعت شریعت کے آئیے می طریقت کا حسن تصوف کا جمال اور معناتی کا حوال ہے۔

عشق کی ابتداء بھی تم، صل علی مختبہ مختبہ مش علی مختبہ مشق کی اجبا بھی تم، صل علی مختبہ مان میں مجتبہ میں نہاں تہاں میاں میکھ بھی تم ، صل علی حمیم دوا بھی تم ، صل علی حمیم دوا بھی تم ، صل علی حمیم (بنرادکھنوی)

چکے کا کوشہ کوشہ لید کا جائدنی ہوگی قبر کے اعد آئی ہے جس دم کون، محد اصلی اللہ طبے وسلم ہے، نہ ہوا ہے اور نہ ہوگا آپ ساکوئی دونول جہال میں فخر دو عالم کون محد اسلی اللہ علیہ وسلم

تعجب تو یہ ہے کہ فردوں اعلیٰ بنائے خدا اور بہائے محمد کمات اور بہائے محمد کمات اور بجھائے محمد کمات اور بجھائے محمد (علاماقبال)

### نعت رحمت کا اشارا ہے

سرکار مدینہ اللہ کی رہت کا اشارہ انتاء اللہ بر سختی مشکل میں ہمارا زاد راہ ہوگا۔اورآپ بی کی شفاعت کے تورے ہمارے گنا ہوں کی سیاجی ڈھل میائے گ۔ اس لیے کے ہم اللہ عزوج مل کے مجوب کا ذکر کردہے ہیں۔ ہمیں یعین ہے کہ ہم حشر میں سر بلندر ہیں گے۔ فرشنے کہیں کے بیکون ہے؟ پھر سرکار قرما کی سے بد میراث ا خوال ہے۔

#### ជាជាជាជាជា

نفت انتہ کی مقدر اور پاکیز وصنف فن ہے۔ مشق رسول اللط کے بغیر فعت کا مرفان ماصل کرنا نامکن ہے۔ نعت محبت مصطفی اللط کے مشاف قد کرتی ہے۔ نعت مسئنے مناف اللہ کرنا نامکن ہے۔ اور دو لطف دیتی ہے۔ جس سے ایمان واجان میں پہنٹی تی دل پر اثر کر جاتی ہے۔ اور دو لطف دیتی ہے۔ جس سے ایمان واجان میں پہنٹی آ جاتی ہے۔ اس کے کہ نعت سنت ور در ممان ہے۔ تعسیر قرآن ہے۔ نعت و کھا کف کی جان ہے۔ نعت حضور عدید العمل و دو السلام سے عقیدت و محبت کا مؤثر ترین اظہار ہے۔

## نعت میراایمان ہے

میرے آقا علیہ کین دمکان کا دجدان رکھتے ہیں۔ یہ میراا بجان ہے۔ آپ ہی عہد ہ نامہ دفا کا عنوان ہیں۔ عشا قان رسول کے دوں کی دھر کن ہیں۔ محفل اصغیاء اور مجلس انہیاء کے چرائے ہیں۔ شرعبت کے شر ہیں۔ طب اسلامیہ کے جیارہ کروشنی اور شخص اسلامیہ کے دخشتہ و ماہتا ب ہیں۔ کا نتات عالم کے دخشتہ و ماہتا ب ہیں۔ کا نتات عالم کے دخشتہ و ماہتا ب ہیں۔ اور کہیں تو ذرااور کھس کے کہدوں میرے آقا مصطفیٰ میں تو ہر تی اور کہیں تو ذرااور کھس کے کہدوں میرے آقا مصطفیٰ میں تو ہر تی اصطفاٰ میں اللہ تعالیٰ تعالیٰ اللہ تعالیٰ اللہ تعالیٰ اللہ تعالیٰ اللہ تعالیٰ تع

مدت رسول سے قلب کو قرار ہے طلقت رسول ہی رب کا شاہکار ہے عظمت رسول تو سب پر آشکار ہے حرمت رسول پر جان بھی نثار ہے عظمت رسول تو بیان بھی نثار ہے (صاحبزادہ خان اختر ندیم نششیدی)

نی دائم چہ منزل ہود شب جائے کہ من ہودم

ہمرسو رض نبل ہود شب جائے کہ من ہودم

رک چکر نگارے مرو قدے لالہ دخمارے

رایا آفت دل ہود شب جائے کہ من ہورم
خدا خود میر مجلس ہود اندر لا مکاں خسرو

مد شع محفل ہود شب جائے کہ من ہودم

محمد شع محفل ہود شب جائے کہ من ہودم

(امیرضر

و کمی و بیجئے دکھی و بیجئے مدینہ یا رسول اللہ خطاؤں پر ہے تادم ہید کمینہ یا رسول اللہ (خالد مجدور)

کوں نہ ہو بہ ہر لی جبتو مدینے کی نشرگ کا حاصل ہے آرزو مدینے کی اس لیے ہارزو مدینے کی اس لیے ہارزو مدینے کی اس لیے ہاتے ہی اس لیو مدینے کی

مريش جركام شكل ب جينا يارسول الله

چميالوچميالواين والان شفاعت ش

اب ميري نگامول بيس جي حيين كوكي

ائز از بيرهامل بي و حامل برزيس كو

(غالد محود) جیسے میرے سرکار ہیں ایبا شہیں کوئی افلاک پہ تو گنبد خطرا شہیں کوئی (غالہ محود)

خدادا میری آشائی نہ چین مرا دوق مبر آن کی نہ چین متاع دل و جال میری لوٹ لے تھ کے در کی گدائی نہ چین (بدربان خورشیداھ دل پذیر جملے

وہ گورے مکھڑے والہ جس کے روئے زیبا کے واسطے سے ابر رحمت کی وعا تھی انگی جاتی جیں۔ جو بیموں کا وال ہے۔ غلامول کا مولی ہے۔ اور ہم سب کا مجاو یادیٰ ہے۔ اک عظیم ترین ذات گرامی کی بار گا و جس سعادت نعت حاصل کر رہے جیں۔ جناب۔۔۔۔۔

#### **ሲ** ሲ ሲ ሲ ሲ ሲ

اب بل جمل جمل تنا وخوان محتر م كود كوت نعت و ب د با بول وه ميدان نعت كر عليم البيان به خوش الحان به خوش زبان ثنا خوان شيرين بيان جناب . جي - بهن ورخواست گزار بول كه تشريف لا كي اور بارگاه وسالت منطقه مين بديه هفيدت ويش فرما كين - مب ل كركه و يجهه بسجان الله .

مشہموار میدان فعاصت و بلاغت \_ خطیب قادر الکلام \_ فخر ابلسند \_ حاکی طریقت وشریعت \_ مقرر شیری بیان حضرت علاً مدمولانا \_ \_ \_ ادب سے درخواست ہے کہ دہ آنٹریف لاکی اور اینے ایمان افروز بیان سے سامعین کو توازیں ۔

نعرہ مجیر نعرہ رسالت آج ہرسمت رحمت کی برسات ہے محفل نعت بھی حق کی سوعات ہے ہوں غلام نی، اے جہم مجھے تو جلائی کی، کیا تیری اوقات ہے (شبیرانساری)

# نعت رسول ﷺ

شبشاه شعروض مشاعر فوش أواسا ديب يمثال جناب قبدعان سراتور بريلوي آج على في بوا يار الداز على كي البان كي ثناء جموعة جموعة على سناتا مول أفعت شه دومرا، شفية شفية ورا مجموست مجموست آب کور قلم کوبیگونے لگا، میرا وجدان کفتوں کو دھونے لگا يكرية أبنك موتى يروف لكا، وجد شريتون تما جموع مجموع ش نے متی ش ان کا تصور کیا ، پھر تصور مدینے مجھے لے جا ان کی خدمت شل ہوں اب شی پہنچا ہوا،مث کیا فاصلہ جمو سے جموعتے یہ جواحمہ میں ہیں اور حمد میں ہیں، ہرمسمان کے اندال کا مقصد میں ہیں نام ان كا ذرا لے كے ديكے كوئى، مست بوجائے كا جموعے جموعے كونى قسمت كوكر ليجيد يول كرى، ديجي آنا كدربارير ماضرى ان کی قربت لے کی بغضل خدا ، تیجے دل سے دُعا مجموحے مجموعے ومرسكين جال إلى الاست في سب سكوب إلى بياس بياس في جب یہ انوار تے برم تی جماکیا، پر سجی نے کیا جموعے جموعے

وفررشوق میں ہر جذب ول میرے کام آیا مجمی کب پر درود آیا بھی لب پر سلام آیا جہاں کی مزل تم میں کوئی شکل مقام آیا وہیں تکیین دیئے میرے لب پران کا ٹام آیا نہ منا یا گئل جمیں و تیا ایکی مضبوط تر بناہ میں ہیں دو سال کا گاہ میں شد سمی ہم قو سرکار کی نگاہ میں ہیں دو سماری نگاہ میں شد سمی ہم قو سرکار کی نگاہ میں ہیں دو اللہ میں شد سمی ہم قو سرکار کی نگاہ میں ہیں دو اللہ میں الجم

موجول پے سفینہ وکی کے سامل پر سفینہ ویکھیں سے
اے ذوق نظر مایوں تہ ہواک روز مدید دیکھیں سے
اے جذبہ ول اے شوق طلب آداب دفا محوظ رہیں
جو مرش پہ بہنچا رہا ہے اک روز وہ زید دیکھیں سے
جو مرش پہ بہنچا رہا ہے اک روز وہ زید دیکھیں سے

سارے ترفوں میں ایک حرف پیارا بہت اور بکا بہت
سارے ناموں میں اک نام سوہنا بہت اور بہار ابہت
میری دنائی اور مرے ذہن سے تو ہوتا نہیں
میں نے دوئے فیر کو سوچا بہت اور چاہا بہت
میرے ہاتھوں ساور بر سام توں سے توثر رو کی جاتا تیں
میرے ہاتھوں ساور بر سام توں ہو کہ کھا بہت اور چا بہت
سے بیتیں داستوں می سر کرتے والے سافر ایے بن
سے سیاروں کا سیا سیارا ہے اک کملی والا بہت

(سليم كوثر)

ثان رسول محترم ہوگی کسی ہے کیا رقم ثت ہوا مید تقم فت ہوا منہ دوات کا انواد خوش نوا رہا ان کی تاء میں لب کشا . نطق کا حق ادا کیا لفف لیا حیات کا میرسول مالینگھ انور بریلوی)

حن صدف نه تابش کو ہر کا ذکر ہے وارا کی بات ہے ند سکندر کا ذکر ہے نے مفغرت نہ عرصہ محشر کا ذکر ہے مخشن کی بات ہے نہ کل تر کا ذکر ہے مير إيول يانعب ويبركا ذكر م واليل جس كى زلف معتمر كى بي حمم وبد سکون سائی کوٹر کا ذکر ہے (تريزواني)

مہتاب و آفتاب نہ اختر کا ذکر ہے تیمر کی گفتگو ہے نہ کسرٹی کی بات ہے ميران عدل ويرمش اعمال كالميس ذكر شيم ل په نه ذكر حيم ہے الله تظر ب اس زئ ير توركا جمال والقس جس كے چروانوار كى ہے تم ان دور اضطراب شی میرے کے قمر

ئی کے دریہ ٹی کا فلام آتا ہے ئى كى مرح كاجس دم مقام آتا ہے ند شاوممر نه سلطان شام آتا ہے ي جرأت إلى وإعداب كانب المناهول

فنت اسلامي ثقالت كا تماكده اصول نعت كالمحفل شرائركت بجي معادت كاحصول (قعرى كانيوري)

فعت نقذيس رسالت دفعت تحريم رسول نعت كرم لنظام معتاب وحت كانزول

تعد کیا ہے ، وست یستد ان کی دریائی کا نام نعت کیاہے، روخہ اقدی ہے ممانی کا نام فدت کیا ہے، اب براب طیب کے سے خانے کا نام فعت کیاہے، آنسوول کے رقص عی آنے کا نام تعت کیا ہے ، اور جال پر پھول بھرانے کا نام تعت کیا ہے، ان کی چوکھٹ بریکل جانے کا نام

كياكيون وعنائين كاكون مااعداز ب نفدنعب رسول ياك كا آغاز ب

نعت ایواب محمد کا جلی متوان ہے ہم قلامان محمد کی کی پیجان ہے

مدهاني وشواسيا كمال ثناء خوال وشاء كور خليفة مجاز معرسته فلأ مسيرسيد شاعت على شاه محدث على ميوك هرية مونى، مرمنير خال پيكرا كبرآ ما دى نتشدى عاى رمية الله عليه

بدية تبنيت

آرام گاہ حفرت صوفی منیر خال اور تے جمائی بھی باشر (ب کمال ادماف منف نعت میں تے ان کے بے کراں تقدم سے ملاتھ جمیں ان کا آستال بے نک رسول یاک بھی تھان یہ ممر ہاں ادر أب معطفا يرجز كت تعالى جال ول نعت كوبحي كيي انبل نيز نعت خوال علق خدا کو اینا سیمنے یتھے خاعراں یاد الی آپ کے سر بر حمی سائیاں بات مضان في في جي منظل اورجوان الله اور رسول دے ال یہ ممریال جب شمراً كره على موئ آب ضوفشال سن دو ہزار ہتھے میں ہوئے خلد کورواں فرزند خوش تعيب باخر عديم خال مدّ المصطفا وخطيب اورنعت خوال اللہ ان کو رکھ ای داہ م روال

اللہ کے کرم سے حرم رہے سدا نبسة تفى تقش بندو مجدد ے آپ كى کرتے شامل بی پیرکے نامے تق حفرت عامت عل شاہ کے مرید یہ عالمٰق رسول تھے ایسے کہ واو واو الله كروليول كامشق ان كردل عن تعا كبته تقدادر يزهة تفيعتس رمول ك روحانی چیشوا بھی تھے اور منتی بھی تھے ان کو علوم ویں بید کھمل عبور تھ استادم رال بھی تھے خلقت کے واسطے روزہ نماز آپ کے محبوب محفل تھے بان اک بزارنوسواور انیس تھا وہ سن عای سال علم وسل کے گزار کے بیٹا ہےان کاان کے طریقے پر کاربند يه ناهم محافل نصب رمول بين والدك اين بيمي مجازي خليفه ين

أحاب مظلمت

وہ ماہ عرب بن اے نیم اپنا تو جہاں میں سہارا ہے جوجا کی فدائس نام پہم، بینام بی ابیا بیارا ہے (مولوی شفع الدین نیم)

جھ پر بھی کوم سیجے سرکار مدینہ دل میرا بھی ہے طالب دیدار مدینہ جو کھر بھی کوئی آکے بہال السینے ، ملے گا ہر چیز کے مخار میں سرکار مدینہ (حسرت موہانی)

پُیا سے آثارہ راہ گزر کو خبر نہ ہو جبریل پر بچھائیں تو پر کو خبر نہ ہو فریاد اتّی جو کرے حال زار میں ممکن ٹیس کے خبر بشر کو خبر نہ ہو (مولانا شاہ اجررضا خال فاضل بر الدی)

حق جلوه کر زطرز بیان محد است آرے کلام حق برزبان محد است عالب تناع خواجر بردان محد است عال ذالت پاک مرجد دان محد است عالب تناع خواجر بردان محد است (غالب)

وہ وانائے شکل ، قتم الرسل ، مولائے کل جس نے فہار راہ کو تختل فروغ وادی سینا کا محتق میں وہی اول وہی آخر اول وہی آخر وہی فرقال، وہی فیس وہی فیس ، وہی فید

غرق اللت ويرؤ نمناك بهونا حامية نعت كني ك ليدل يك مونا عام (رياش مين چوهري) نہ بندگی ند سمی خسروی سے ملتا ہے غال محش کھنتہ ول سے ملا ہے جو کیف روح کونعید نی سے ماکا ہے ندوع ملك عامل دمير جنت س (اوعبدائے اوری) ال سے بڑھ کراور کیا ہوعظمت نعت رسول مدحت محبوب مي آيات قرآل كانزول میں تھی وامن ظہوری پیش کیا کرول تذرادماف ني بين چھ يەشعرون كے پھول ( مرا تروي) نعت ني ش جب ش محل ابكا اوا محد يرمرے في كاكرم اور سوا موا مكريه كهدر إب كدكيا ماجرا جوا قرآن کھدرہا ہے تی اوش یر گئ (سردمهارندوی)

موہد کوڑ نے لب پر آکے لیں آگزائیاں فرسوں سے مل دیا ہے اپنا انحاز بیاں یا اورب! سطح دیں، باہوش، اوج آسال مرح تغیر میں کملی ہے مقیدت کی زبال میں کملی ہے مقیدت کی زبال ہے کہ مجدے میں مرح مصطفا کے داسطے لیے داسطے داسطے لیے داسے لیے داسے

(صااكبرآبادي)

نازال ہون معادت کے گیر دول رہا ہوں میزان عقیدت جی آئیں لول رہا ہوں میزان عقیدت جی آئیں لول رہا ہوں میران مگر بول بوے بول رہا ہوں تربیب محمد جی زبان کھول رہا ہوں \_\_\_\_\_ (ادیبدائے بوری)

(اتَإِلَ)

تزجمه

اور جیل آپ ما واللہ کس مان نے نہ جنا اپٹی مرض کے مطابق ہوئے جنوہ فرما (عزبرشاہ وارثی) آپ ما کوئی حمیل ہم نے شد کھاند سُنا پاک دطاہر ہے ہراک عمیب سے ذات حضرت

یہ انتخاب بھی معمول انتخاب نہیں وہ آدی ہے گر و کھنے کی تاب نہیں یہ کہد دیا ترا فائی ترا جواب نہیں کداس کیاب سے بہترکوئی کماب نہیں

ش جاہتا ہوں آئے جس کا بکر جواب میں نگاہ برق خیل، چبرہ آفاب میں خدائے محینے کے نقشہ رسول اکرم کا میں تیرے معجفہ ڈرخ کا مطالعہ کرلوں

بناکے آپ کو خالق نے یہ کیا ارشاد مرا جواب تو تو ہے ترا جواب تیں شاہ شاہ شاہ

کیا موا مشہ بیمری دے نگاری کیا چر جب خدا خود ہے تا وخوان رسول مر بی

ہم ہول اور کوئے ہی کی فاک ہو

موت چاہے جتنی دیت ناک ہو

(مبا کرآبادی)

دنیا کے بیکسول کا سہارا حضور ہیں

میری مراد میری تمنا حضور ہیں

(مبا کرآبادی)

اس طرح استی کا قصد باک او جان دی مے ہم تو پڑھ پڑھ کے درود

ونیا کے بیکسوں کا سمارا ہے اور کون میری مراد میری تمنا نہیں کچھ اور ز مین از مُب أوسا کن ، فلک در محش أوشیدا نه آدم بانن توبه نه نورج از غرق کنیجا (مولانا جای) ومُسَالُ اللَّهُ عَلَى نُورِ ، كَرُوشُد تُورِ ہا پيدا اگر نام محمد را نيا ؤردے شفع آدم

شار ہو نہیں سکتے، شار کر دیکھو یقیں نہ آئے تو ان کو بکار کر دیکھو (حبدالعزیز خالد)

خدا گواہ ، خدا کے رسول کے اوصاف تم ان سے دور ہولیکن وہتم سے دور نہیں

ہر کوشے ہر طبقے میں حمرے شددائی ملتے ہیں کوغ رہا ہے سرور عالم!کون ومکال میں نام حمرا

، لیکن وہ خطا پوٹس ہمارا بھی خدا ہے ملے میں ہمارے بھی تھے کی شاہ ہے (اویب رائے ہوری)

ہم کو بھی خبر ہے کہ گنا ہوں کی سزا ہے زاہد کو اگر ناز عبادت ہے، بجا ہے

وی ہے توج بشر کا معلم اعظم تو ساتھ جوڑ دین تھک تھک کے تل سکو یوم (عبدالعزیز خالد)

اُی کو صاحب خُللِ مُقیم کیتے ہیں شارکرنے چلیں اُس کی توبیوں کا اگر

جن کی تعت میں دینے کے نظارے ہو تھے کیے جبریل نے لیات گزادے ہو تھے (محد ملی ظہوری)

ان کی آنکموں پرفدا جا عرستارے ہو تھے رہ کے سدرہ پہمرکی رفاقت کے بغیر

وَأَجِمُ لُ مِنكَ لُمْ قَلِدُ الْبِسَاءُ كَانَكَ قَد خُلِقَتْ كُمَا تَشَاءُ كَانَكَ قَد خُلِقَتْ كُمَا تِشَاءُ (حَالَى مَن البِت)

واحسنُ منکَ لم تَر قَطُّ عيبي خُلِقت مُسرًا مِن كُلَّ عيب. شاعری میری منزل تو ہر گزشیں ہاں نظامت مری خاص ریجان ہے نعت مولائے کل ہے شخف ہے جھے یہ میرا دین ہے میرا ایمان ہے جوئت میرے بیارے نی کائیں ہے "وہ میرا بھی نہیں" رب کا فرمان ہے

جب تلک سالس ہے تعت ہو معنا رہوں اے عدیم حزیں ہی ارمان ہے

"ابخش دی تیری امت" بید علال ہے اب ہمارا بھی اللہ جمہال ہے بالیقیں مری بخشش کا سامان ہے ان کو بے شہر آ قا کا عرفان ہے ان کو بے شہر آ قا کا عرفان ہے نعت خوانی تی اس کمر کی پہیان ہے ان سے معراج پر میرے رب نے کہا اہل ٹروت تو پنچ مدینے مگر آج میں کررہا ہوں فظامت یہاں مرتضعیٰ و بنول و حسین و حسن سے تمر الزمال شاہ کا دولت کدہ

آرزو کوئی باتی خیل ہے تھی ہے بال مدید محر دل کا امرمان ہے

شاد ہر نا کام او ای جائے گا

کھ شہد انعام ہو ای جائے گا

دل کو بھی آرام ہو ای جائے گا

(موار ناشاہ احدر شاخال فاصل ہر طوی مرے جسے میں آئی ہے تھے کی شاہ خواتی مرے جسے میں آئی ہے تھے کی شاہ خواتی اے بوگ شدروز حشر کوئی بھی پریشانی اسے بوگ شدروز حشر کوئی بھی پریشانی اسے بوگ شدروز حشر کوئی بھی پریشانی اسے بوگ شدروز حشر کوئی بھی کے میں کے آئے کی گھڑی ہے بیرہ در کوشین کے آئے نے کی گھڑی ہے

لطف ان كا عام عو على جائك كا ساكو داكن تني كا تنام لو ال رضا بركام كا اك وقت ب

مقدر کومرے بخش کی رصت کی تاباتی عجبت سرور کونین کی جس دل کوحاصل ہو

برست بری او کی دهت کی جعری ب

ماصل کوئی فیضان نبیس موسکنا انسان مجھی انسان نبیس موسکنا (میااکبرآبادی) اللہ کا عرفان نہیں ہوسکتا دِل میں نہ محبت ہو تھے کی آگر

ملیا تیل ہے درد جو اُن کی تظرید ہو آئے در حبیب تو اچی خبر شد ہو

کیا لطف ہے تن کا اگر چشم تر نہ ہو ہوائی طرح سے اٹی مدینے شک حاضری

خدا کی حد کرد مصطفا کی بات کرد خیائے مظمر ڈات خدا کی بات کرد (آباد)

ند ابتداء کی ند پکته انتهاء کی بات کرو پامو ورود پامومصطفا کی بات کرد

ہم دیے سے اللہ! کور آ کے ظہر تیران کی سکیں وہی روگی دل وہیں روگیا، میاں وہی روگی، فم ای در پانی جیل روگی زندگانی وہیں کاش ہوتی ہسر، کاش بنراد آتے شہم لوث کر اور پوری ہوئی ہر تمنا گر ، یہ تمنائے قلب حزیں رومی

**ተተ**ተተ

ارمانہے

(صاحبزادہ خان اخر عدیم نشفیندی) میری کل زیست پر اس کا احسان ہے جھ کو جو کچھ ملا ، أن کا فیضان ہے

میرے دل میں جواک فردمہمان ہے شعری نسبت مجھے مرے والد نے دی

. آهاب بظلمت

کیا بات رمنا اس میمنتان کرم کی زبرا ہے کل جس میں حسین اور حسن مچول (مولانا شاداحد رمنا خال فاضل بریلوی)

بھرکوتو اپلی جال سے بھی پیارا ہے اُن کا نام اُسب ہے اگر دیات متارا ہے اُن کا نام ہے اِردن ہے اُن کا نام ہے اِردن ہے اُن کا نام ہے اِردان ہے اُن کا نام ہے جارگان دہر کا چارہ ہے اُن کا نام اللہ دہ اوا اللہ علی مذہ اوا اللہ علی مذہ اوا اللہ علی مذہ اوا کا اشارہ ہے اُن کا نام اللہ مذہ اُن کا نام اللہ مذہ اُن کا نام اللہ مذہ اُن کا نام اللہ علی مذال ہے اُن کا نام اللہ من خود کی سنوارا ہے اُن کا نام اُن ہے اُن کا نام قرآن ہاک اُن ہے اُنارا میا عمیم قرآن ہاک اُن ہے اُنارا میا عمیم قرآن ہاک اُن ہے اُنارا میا عمیم اورش نے اُن کا نام اُن کا نام اُن کے اُن کا نام کا

(اجرزتم قاک)

ش نے دوری کا شاید کیا تھا گلہ آپ نے مجھ کو روضے پہ باوا لیا جب مدینے کی جنت ش داخل موا

ذرے ذرے کو پڑھتے ہوئے ہے۔ نا فاتم الانبیاء مصطفے مصطفے اک خوش می خوش دل میں تحلیل تھی کویا حزل مری باب جریل تھی اُس ہے آگے وہ روضے کی قدیل تھی سرکار نے متان کو منبر پہ منعایا آٹا کے نتا خوال کی توقیر یوی ہے (محمطی تلمبوری) مجوب دوعالم کی رشت ہی زمانے ش ہر دکھ کا مداوا ہے ، ہر قم کا سازو ہے اللہ نے سن کی ہے قریاد سوائی کی سرکار مدینہ کو جس تے بھی یکارا ہے

صداکیں درودوں کی آئی رہیں گی مراس کول شاوہ وہارہ کا خدا رکھے آباد الل تظر کو، اللہ کا حیاد ہوتا رہے گا سکوت وں وجال خیال نی ہے، تکابول کا مرکز جمال نی ہے مشار کے ہے آرزد کے وصال نی ہے، وہ دل خم سے آزاد ہوتا رہے گا

( عرعلی تعوری )

قریان ان کے قدموں پر مرجانا جاہے اب تو مرا نصیب سنور جانا جاہے جود و کرم بہاں بھی بھر جانا جاہے دائن مرا بھی یا تی بھر جانا جاہے اب قاتی کو بعلی محر جانا جاہے اب قاتی کو بعلی محر جانا جاہے مشق ہی ش مدے گرر جانا جا ہے بدالتجاہے میری اے فم خوار ہے کسال وامن پ رے بیٹے ہیں مخل میں آپ کی دے دو جمے بھی صدقہ حسنین اتنا تم رہتا ہے روز وشب بڑا ہے جین ، یا نمی

\*\*\*

مرتا یہ قدم ہے تن سلطان زمن چول لب چول دائن چول زمن چول بدن چول دندان و الب و زلف و رُحْ شرك قدائل جين وُرِّ عدن لعل اين مشك نفتن چول جس طرح منے ہیں آب نام محد سے سب کاش ہم آل جا کی مب نام محد کے سب جب لیام میں مام محد کے سب جب لیام میں مام محد کے سب جب لیام میں مام محد کے مب مام محد کے مب مقط مراحب کا خیاں محمد کے مب میں مقط مراحب کا خیاں ہم مے شیکھا ہے اوب نام محد کے سبب

( پیقوب پرواز )

ذکر آقا کا سنتے ستاتے رہو یاد شی اُن کی روئے رالاتے رہو بس میں کام ہے وہ فدا کی هم روز محشر جو ماصی کے کام آئے گا

آنسو بصد خلوص بہائے کا وقت ہے لوج جبین گر جمکائے کا وقت ہے محفل کی جوئی ہے ورود وسلام کی یوفت نعت پاک سائے کا وقت ہے

مولا کی نوازش نہال کھنتی ہے مزت مری قش قد بیال کھنتی ہے کہد دو کہ طلک گوش پر آواز رہیں مقال جور کی زبال کھنتی ہے اور دو کہ طلک گوش پر آواز رہیں مقال کوروی) ایک ہے در کے جمیس بہتر ایک سے ایک ہے در کے جمیس بہتر ایک سے ایک ہوائے کے در کے جمیس بہتر اور سلطان زشل ہے کوئی اُن جیسا ایشر جاران نی جار تھے کہنے کو محر ا

(منور بدايول)

\*\*\*

لوگ نازال ہیں کہ وہ مدد یقیں تک پہنچ کی ارباب خرد لوح مبیں تک پہنچ کی ارباب خرد لوح مبیں تک پہنچ کی ایک ان ان و کین ایں دورکر زمات سے معد یوں پہلے میں سے آتا کے قدم عرش پریں تک پہنچ کے ان اقبال تعظیم) بیان کیسے ہوں الفاظ میں صفات ان کی نے ول وتی اللی ہے بات بات اُن کی میان کیسے ہوں الفاظ میں صفات ان کی دونوں عالم کو جس نے منور یہ برطرف تھی صدا مصطفے مصور تھی گئی گئی ہے۔ اور دورو وسلام و دعا اب پہسب کے درود وسلام و دعا دل جس سے دراود وسلام و دعا دل جس سے دراود وسلام و دعا

جی کو گیرے ہوئے ہیں زمانے کے خم میری حالت پہ سیجے نگاہ کرم آپ کا نام لیوا ہوں شاہ اہم آپ بی ابتدا مآپ بی انجیا مصطفع مصطفع مصطفع مصطفع مصطفع مصطفع

(مسعوداحد شفتی)

ماتئے ہو ہمی مدینے جائے گا جمولیاں بھر بھر کرم کی لانے گا مصطفا کے نام پر بک کر تو دکھ پھر خدا کیا کیا کرم قرمائے گا الفت آ تا کے رحمت کے طفیل جرم آبکی میں بدل جائے گا الفت آ تا کے رحمت کے طفیل بھرم آبکی میں بدل جائے گا ار طفیل نقش بائے مصطفا آمٹی ہر آبک بخشا جائے گا دائین اجمد سے دائیتہ جوڑ لے دائیتہ جوڑ کے دائیتہ دائیتہ جوڑ کے دائیتہ جوڑ کے دائیتہ جوڑ کے دائیتہ جوڑ کے دائیتہ کی دائیتہ کے دائیتہ جوڑ کے دائیتہ جوڑ کے دائیتہ کی دائیتہ کر آبائی کے دائیتہ کے دائیتہ کے دائیتہ کے دائیتہ کی دائیتہ کے دائیتہ کی در آبائیل کے دائیتہ کے دائیتہ کے دائیتہ کر آبائیل کے دائیتہ ک

(ارشدمحودارشد)

- آماب نظ**امت** -

ور و بام بیت الحرم چوم لول گا تیم بہار ارم چوم لول گا نظر سے در تحرّم چوم نوں گا در و فرش کو جی بیم چوم لول گا دب سے جی وہ چیم نم چوم لول گا خود اپنی زبان و تھم چوم لول گا جی ان کا دست کرم چوم لول گا

ند تم أس كل ك شربان جادل نى كى كلى دم بددم چوم لول كا

جرتقتری اور ہر متلمت کے شایاں ہوگئیں ۔ وہ زبانیں جو محد کی ثنا خوال ہوگئیں ۔ لے محصے تشریف وہ جب الا مکال کی سیر کو ۔ فعنیں ان کی بعید، زقکر انسال ہوگئیں ۔ نغمۂ نعت ورسالت تم نے جب چھیٹرا عزیز ۔ محصل میں وقائب سلطان رسولال ہوگئیں ۔ مرحی میں وقائب سلطان رسولال ہوگئیں ۔

(عزیز ماصل پوری)

نعت کیا ہے اک تلاوت کر بلائے معرض ہر بریزید کی دور پر عامب رہا جس کا جان ل چارہ کے چارگاں ہے ڈخم کا مرہم ہے نعت اپ آتا ہے تقیدت کا ہے عکس فوٹن نصال فعت صادتی چاہتوں کے باخ کا کھلتا گلاب معترت حسان بن ثابت کا گل ڈار خیال

(گهرفیروزشاه میانوا**ل)** دولاجواب مین، آن کا جواب کیا ہو**گا** 

حبيب باكسى كاخطاب كيا موكا

زعن تا بافلا بياكا كات أن كى

النيس كردم ب متورب يرم كون ومكال

مری طلب کا تفاضا دیادِ پاک حضور تمام تسن و تقدّل تمام نکبت و فور نه جھے کوخواہش جنت ندشوقی حوروتسور مقام ِ ارض مدینہ کسی کو کیا معلوم

جسم ملت پراگر چرزخم بین کاری بہت آپ کوائٹ ایٹ بیٹ بی ہے ہے بیاری بہت آواتوام جہال میں ہو چکی خواری بہت (سرفراز) آپ کی چٹم کرم سے مندل ہوجا کیں ہے اس کادا کن بیار کے پھولوں سے پھر بھرد بجئے نام لیوا آپ کے جیں بیجئے اب مرفراز

مرى تراد مدين كتاجداد ي

زے لیب البیں رہا مالیازارے ہے اُنہیں ہے ہوگا شفا صت کا مرحل آسال اگر ہے اُن سے محبت لو تھم بھی مانو

کیا حرہ آئے ایسے جینے میں میں یہاں دل میر الدینے عی میں کول کب بلاؤ کے آتا دہ یہ کہہ دیں ای مینے میں

( گُنُدولوي)

لعت ﷺ

(صاحبزاده خان اخرَ عَرَيْمُ نَعْشِندي)

عل أمّا كا دست كرم چم لول كا

كف بائ الل حرم جوم لول كا

پر آرزو ہے شیشہ ول چور چور ہو پھر کوئی شے تو تامل نذر صنور ہو بارب!اک التجاہے کے محشر میں جو بھی ہو نعت رسول پاک کی محفل ضرور ہو (ادیب دائے ہوری)

جمال معطفی کا تورہے دل کے جھنے بھی سمندر بی سفینہ ہے ہمندر ہے سفینے بیل مقدر کا لکھا تو سب کو دیتا ہے خدالیمن جو تسمت میں ند لکھا ہووہ مثاب مدینے میں (سمال مصطفے)

وروازہ کھولتے ہیں قرشتے قبول اک سسد ہے رہمبعہ حل کے نزول کا دونوں جہان گوش ہر آواز ہو گئے میں نام لے رہا ہوں خدا کے رسول کا (مظفروار فی)

یں جہاں جہاں موا موں ترے نام سے موالی تری رحمتوں نے بیدہ کر مری آبرہ بچالی کی محموں کی میں کی ایک جوموں کی میں کی ایک جوموں کر میں کی ایک جوموں تری استان کے جوموں کرے روضے کی وہ جالی

اے در در چرف والوجی تو آؤشد یں کے دریہ اس در پرتو سارے عالم کی جری کو بنایا جاتا ہے ارمان حضوری ہے دل میں اللہ مجمعے بلوا لیے اب بارجدائی اے آتا مجمع سے نداشمایا جاتا ہے

ہم کی دین سے ہوں قائل کروارتو ہیں تام لیوا ہیں محمد کے پستار تو ہیں عشق ہوجائے کسی سے کوئی چارہ تو نہیں صرف مسلم کا محمد پد اجارہ تو نہیں (مہندر عظمہ بدتی)

جب انتک کے دریا جی الفاظ رواں مول کے پہنچیں گی وہیں تعین مرکار جہاں مول کے محشر سے آگر محشر لیکن جمیں ممل کا ور

(اویبرائے پوری)

خوش ہو چس سے آئی تو محسوس ہیر ہوا ہمر چھولی جیسے محو ہو ذکرِ رسول میں . الفاظ ساتھ دیں تو میں اظہار کرسکوں لذت بی چھ بجیب ہے ذکرِ رسول میں

وہ نبی جس نے خدا کے دین کی تبلیغ میں ماکی اسٹی باتھ الب اظہارے

مانگتے کا شعور دیتے ہیں جو بھی ماگو ضرور دیتے ہیں مانگتے کا شعور دیتے ہیں مانگتے وال ہو آگر کوئی میرے آقا ضرور دیتے ہیں ہم نیارتی کئی ہے کوں مانگیں ہم کو سب بچھ حضور دیتے ہیں (بیازتی)

ذِكَرُ كَى مُحَفَلُونَ مِن رَجِعَ بِينَ شَاءِ يَطْحًا وَلُولَ مِنْ رَجِعَ بِينَ إِن كَ وَأَكُن كُو جِيمُورُ نِهِ وَالْمِ عَمَر بَعِرَ مَشْكُلُونِ مِنْ رَجِعَ بِينَ إِن كَ وَأَكُن كُو جِيمُورُ نِهِ وَالْمِ عَمْر بَعِرَ مَشْكُلُونِ مِنْ رَجِعَ بِينَ

چرو گردی ماحول تکمر جائے گا ایٹی دور کا انسان شدھر جائے گا اے گا انسان شدھر جائے گا اے گا اے گا اے گا اے گا اے گا استور جائے گا (بنگل انسانی)

جو راز دل می نہاں ہے نہاں سے کئے دے

کی کے بیار کا قم ہے خوشی سے تنہ دے

قدایا جس کو شرورت ہے دے اسے جنت
محمد حضور کے قدموں کے پاس رہنے دے
د

(3262)

اللہ سے بندے کو طا دیتا ہے۔ گڑی ہوئی گفتریر بنا دیتا ہے ہے نام محمد علی کی الکی تاثیر جو فقر علی شائی کا عزا دیتا ہے (عابد لگانی)

مرے لے کر پاؤل تک توری توریس جیسے مندے بولاً قر آن ، وہ تقریر ہے مویتی ہے دل جمل د نیامصطفا کو دیکھ کر وہ مصور کیسا ہوگا جس کی پیقسور ہے (قرجاالوی) نی کی یاد سے روش مرے دل کا محمید ہے وہ میرے دل میں رہتے ہیں ہمرا دل بی مدید ہے نظر افروز ہیں رعمینیاں فردوس کی لیکن جو تسکین ول و جاں ہے وہ آقا کا مدید ہے (نازی)

عم حیات نہ خوف قف مدینے ش نماز عشق کریں کے اوا مدینے عمل المجاج ل کی جب اختیا مدینے عمل الگاہ شوق کی ہے اختیا مدینے عمل اوھر اوھر نہ بھٹکتے گرو فدا کے لئے براہ راست ہے راہ فدا مدینے عمل جمیب کیف و مسرت ہے روح پر طاری الگاہ دل ہے اور دل مرا مدینے عمل قدم بر ھاد کہ سے کی مست اے قصری ہے گئی ملت اے قصری ہے ہے کہوں کا برا آمرا مدینے عمل

(تعرى كانيوري)

کزرا وہ جدھرے وہ ہوئی راہ گزرتور اس لورجم ک ب برشام و عراور کیمو کی منیا نور عاے کی چک لور ال آیة رحمت كا ب برزى وزير لور كب لور، وبأن لور، زبال نور، بيال نور ول لور، جگر توره جبین تور ،نظر تور مرتاب قدم نور عمال نور بنهال لور برسمت تري لور ، ا دهر نور أدهر نور نبت ہوئی جس کوری فاک کن یا ہے اه شمره وه کوچه وه در و بام وه کمر نور جس منتح اتارا مميا وه جاند زهل ير وه ماه دوه وان نور، وه ساعت وه محر نور كيول كرنه ببول زهرادحسين اورحسن نور اس کٹل رسالت کا ہے ہر برگ وٹمر تور جس روية منوريه مو" دالفجر" كي طلعت ب جانیس کر اس کو کیس الل تظرفور

( حراعظم چشی)

یوں دھڑ کتا ہے کہ جیسے پڑھ رہا ہو کوئی نفت ماضری طیبہ کی جس دم خبریا تا ہے دل (عزیز الدین خالق القادری)

داتا ، کی م یدافد تاج در بنده نواز ، بادشاه حسن سر بسر اترے بعکاری شاه و گدا اور تاج در سلطان دو جہان شبنشاه ، کر و بر بنده بندے بدایت میرکی جو جائے اک نظر ایک میں کی جو جائے اک نظر ایک میں کی جو جائے ایک نظر المجمال و یا سید البشر"

( عَبِّرِ مِثَاهِ وَارِبِیْ) آپ کی شان کے قربان کہاں تک پہنچ کو کی پہنچ ہی شہیں آپ جہ ں تک پہنچ یہ قو اک راز ہے محبوب ومحب وونوں کا کوئی کیا جائے کہ سرکار کہاں تک پہنچ ( عربی فاکی )

> مرکار مرایا الفت بین اب شرجهم رحت بین بین ایسے تی کا بیرو اول جو جود وسطا کے جیکر بین دیکھولواس عالم امکان میں برسو بین عیال انواران کے تم لاکو آئیش تاکی جالو ، وہ تور و میا کے جیکر بین

(اكرم في الخر)

ین م اجم ، کہکٹال اور آفاب و ماہتاب سب کے سب انوار آقا ہے ہوئے ہی کُیل یاب دونوں عالم میں کوئی ٹانی نہیں ہے آپ کا آپ ہیں اپنی نظیم اور آپ ہیں اپنا جواب (اکرم علی ایجز)

ساعتول پیارم بے صاب ہوتا ہے۔ اوب! کے ذکر دسمالت مآب ہوتا ہے۔ اوا میں خلق انظر میں مجاب ہوجس کے خلام ان کا وہی کامیاب ہوتا ہے (ابرادکر تجوری)

(ظَفْريرويزتقوي)

یزم رسول پاک اٹنی کی رہے ہرول میں مصطفا کی محبت ہی دہے صلی علی کی ذھوم جہال جس مجی رہے نصیب نبی سے بول بی فضا کوئی رہے مسلی علی کی ذھوم جہال جس بھی جشن ولادت ہوتا اید ان کے ہر استی کی غلامی ہو مشتھ

(رشیدوارثی)

مر لا مکان سے طلب ہو تی سوئے معجا وہ چلے نی

کوئی مد ہے ان کے عروق کی بلنے السفسلسیٰ بیکنسائیہ

(مجرشاہوارثی)

جونال یا نے کہیں اینا سکول یا تا ہے دل جب دیار سردرکوشن یا جا تا ہے دل

وہ باعب خلق ہے و کل ہیں، حقیقا خاتم الزسل ہیں یہ تھم ہے انبیا کو حق کا کہ ان کو اپنا امام کہنا مثال شبیر سر کٹانا ، اجل کو پھر زندگی بنانا تبیل ہے آسان اس جہاں میں زبال سے حق کا کلام کہنا (محمد جان الجمع)

فنل احق من اس المركز الله المنظل الم

قوتے پایا ہے مزش اور یس کا خطاب

(محد جان اہم)

مب مشلہ ہے ، جب بندگ ہے نظر روضہ مصلفا پر تھی ہے

ترا نام لینا، تھے یاد کرنا ہی زعرگ ہے، کی بندگ ہے

ترا نام لینا، تھے یاد کرنا ہی زعرگ ہے، کی بندگ ہے

(محد جان الجم)

سلیقے دعد کی جی بندگ کے جی پری کے اسلیقے دعد کی جی بندگ کے مطلوب ہوں وہ سکھ لے سید فتیبر سے سہارا ہے تجات آخری کا اک میں میرا بھیر سے بحصے اللفت ویبر سے ہے، اولاد ویبر سے

(محرمان الجم)

گلشن طیبہ میں جب رہیکھی بہار جان فزا پھر گیا میری نظر میں بائے جند کا ماں رات دن شغول ہیں آ قاتری تو میف میں میرا دل بمری نظر بمراقعم برمیری ذبال (اکرم علی آخر)

کتنا امت سے بیار دیکھا ہے آپ کو بے قراد دیکھا ہے مرش پر خود بلا کے فائق نے جلوہ حسن یار دیکھا ہے مرش پر خود بلا کے فائق نے جلوہ حسن یار دیکھا ہے (اکرم علی آخر)

کہ دو جہان بھی تیرا جواب، ناممکن ادائے اسم مرامی ، جناب ناممکن ندیرے تیرے کرم کا سحاب ، ناممکن دریرے تیرے کرم کا سحاب ، ناممکن (اکرم الحل اخر)

مقام حیرا سمجھ میں لو آئیں سکن خوشادہ لفظائم میں کہا کے چھے بغیر تری مطاکا اگر کوئی دل سے طالب ہو

یہ کام وہ ہے جو وہ میں وشام کرتے ہیں بذوق دشوق یہاں اہتمام کرتے ہیں (اکرم علی آخر) دیہ رسول پہ قدی سلام کرتے ہیں وہ خوش نصیب ہیں جوآپ کی محافل کا

آج احد على كم جلوول بي تقرب وه حدد كراد ك دل يمدكا سرب (محد مان الجم)

کیا چیز یہ تاہا کی خورشد و قمر ہے نیز سے پھی جو چڑھ کے رہامج علاوت

ہے مخفد الل ول کا ہر دم رسول حق مر سلام کہنا جو نام و جھے کوئی تو اپنے کو ان کا ادثیٰ غلام کہنا کریں ناقست ہاز کوں ہم کردہ بیں اس زندگی کے مقصد خدائے واحد کی حمد کرنا شائے خمر الانام کہنا کوئی کہنا ہے سرِ عرشِ علیٰ رہنا ہے اپنے محبوب کے جلووں ٹیں چیمیار ہتا ہے (ساحرصد لقی)

دیکھتے پر بھی مری آگھ تمنائی ہے دوکر بموں بٹی گذگار کی بن آئی ہے (اکتاب ثنان مصطفے ﷺ)

عاشق پر جس کے آتش دوز خ حرام ہے دائیم یہ مجزو ہے رسالت مآب کا (رشیدوارٹی)

اس کی تجدیت ش قدرت خدا کی ہے قر آدر والمنظم اللہ کا المان میم ہے (رفیدوارثی)

مالق کلالد بنعب فيه دوسرا يمي ب اسرار كا تنات كا عقده كشا يمي ب

عرفان ذات حق کی مقدس کماب ہو سلطان کا نتات رسالت تآب ہو (ستاروارثی)

آج ونیاش رسولوں کا امام آتاہے لومبارک ہو کہ اب وو تمام آتا ہے (ستاروارٹی)

تغییر ہو رہی ہے خدا کے کلام کی

کوئی کہتا ہے کہ کہتے میں ضدار بتا ہے ہم فقیروں کا عقیدہ ہے کہ معبود عظیم

یا نبی آپ کے جلووں میں وہ رعمنائی ہے حق تعالی بھی کریم اور تھر بھی کریم

قرآن وہ صحفہ تب انام ہے ہر لفظ جادوال ہے خدا کی کتاب کا

قرآل کود کینا بھی مہادت خدا کی ہے سیا وی کا قلب رسول کریم ہے

قرآن کیمیا مجمی الدور شفا مجمی ہے رب کی وی بھلی رسول خدا بھی ہے

یے حمل و بے نظیر ہوتم لاجواب ہو جاہ وشرف میں کوئی تہاری نہیں مثال

عرشِ اعظم ہے بیافائق کا بیام آتا ہے اور بھی آئے تی، چکے ستارے بن کر

المعيف كرديا يول ديول الأم كى

کرو نہ ذکر خطا کا عطا کی بات کرو سنو سنو!کرم مصطفا کی بات کرو اگریہ جا ہوکہ دو جا کی دل تمہار نے نی رسول پاک کے جود وسٹا کی بات کرو (دیاش سپروردی)

> وی آک در ہے تجدہ گاہ دل آو سوچنا کیا ہے وہیں ہل کر تعلم گا،زندگی کا مدّ ما کیا ہے خرد والے نہ سمجے ہیں نہ جمیس کے بھی اس کو یہ اہل دل تجمع ہیں مقام مصطفا کیا ہے

> ہتنا دیا سرکا ملک نے جو کو اتن مری اوقات جیس بہلو کرم ہے ان کا ورت جو یس تو الی بات جیس عض در بلخا ہے ہملے مفلس و خشہ حال تھا جی نام جو کے جس قرباں اب وو مرے حالات نیس

ر کور بر کھی ) بوی امید ہے سرکار قدموں میں بلائیں سے کرم کی جب نظر ہوگی مسینے ہم بھی جائیں کے اگر جانا مدینے میں ہوا ہم قم کے ماروں کا مکین مسلمیہ فصرا کو حال دل سنائیں کے

(ثربغه نیز)

میرے دائن میں جو کچھ ہے ان کے کرم کا صدقہ ہے
میرا دائی، میرا دائ شہر عینے والا ہے
کون ہوں میں اور کیا ہوں میں مید دتیا والے مجھے نیل
نعت نی کی پڑھتا ہوں میں ،جب سے ہوش سنجالا ہے
نعت نی کی پڑھتا ہوں میں ،جب سے ہوش سنجالا ہے
(میابدالوتی)

مفلس ہے کرم قرما کی مے نبیوں کے نبی رفتہ رفتہ تم دیکھو ٹس موجاؤں گا اک روز خنی رفتہ رفتہ واکن ہے سچاہے کر دِسٹر سرکار دو عالم کے در م جاکیں گے بھی اِن شاءاللہ ہم لوگ بھی رفتہ رفتہ

(شبیرحسن انساری)

جب محمد کی بات ہوتی ہے وجد عمی کا کتات ہوتی ہے ایک ایک اور کی ان کی ہر بلا سے نیجات ہوتی ہے ایک ایک اور کی ان کی ہر بلا سے نیجات ہوتی ہے (شاوانسارالہ آردی)

جو کملی والے نی کے غلام ہوتے ہیں معین و تعلب و فرید و نظام ہوتے ہیں معین معین متلوں کے کام ہوتے ہیں مرے مضور کی شان کرم کا کیا کہنا کہنا گیک جمیکتے ہیں متلوں کے کام ہوتے ہیں (مندش مظار)

نسل اتسال کی قیادت آپ کے باتھوں میں ہے اتسب عاصی کی عظمت آپ کے باتھوں میں ہے کیا خبر کس یا مد پر جند فے گی حشر میں ہم غلاموں کی تو جند آپ کے باتھوں میں ہے اسرار عارفی)

یے خودی میں میں کے آجاتے جیں آ ڈاکے غلام علی میں کھی جس جا بھی گئی میں کھی ایک مخلل میں بیارتی تعب جو میں نے پڑھی ماشقان مصطفا کو وہ بڑی ایکی کئی میں کھی میں ایکی کئی میں مصطفا کو وہ بڑی ایکی کئی

(عبدالتارنيازي)

یہ ساری کا نات خدا کی ٹا کے بعد تھے پڑھ ربی ہے گھ کے نام کی (رشیدوارٹی)

بھیجا ہے خدا درود شریف تم پ یا مصطفا درود شریف تام مصفا درود شریف تام مصفرت زبال پ آیا ہے سب پڑھو پر ملا درود شریف اس کو مشکل کٹا بھی پڑھتے تھے ہے ہے مشکل کٹا درود شریف مرتبہ اس کا ہو گیا انتی درد جس نے کیا درود شریف جس کومولود سے تی نفرت ہو وہ پڑھے کیا جملا درود شریف بر مرض کے لئے شفا ہے بی دائع بر با درود شریف بر مرض کے لئے شفا ہے بی دائع بر با درود شریف تیری بخشش ضرور ہو گی گئور تو نے تکھا پڑھا درود شریف تیری بخشش ضرور ہو گی گئور تو نے تکھا پڑھا درود شریف

اے شہنشاہ مدید العملوٰۃ والسلام ندید عرش معلی العملوٰۃ والسلام میں وہ کی ہوں جیل قادری مرنے کے بعد میرا لاشد ہی کے گا العملوٰۃ والسلام میں وہ کی ہوں جیل قادری (جیل قادری)

تھ کوآ تھوں میں چمپالوں کدر کوں دل میں تھے کوئے مجبوب خدا دکھ کے آتے والے دل کی دھراک سے بادبی ہے شوآل ہر دم دیکھنا کار جھے آتا میں بلائے والے

(سيدوماهت شين توتي) اس من دند خديد ماس

نعش پائے شبہ بحر و برال کی رہنما خوب سے خوب تر بل کیا اب جس کو مری اور کیا جائیے جب می مکرم کا ور ال کیا (سید عبول مین شارب) جب چر ہے یہ جو ہم چاہتے ہیں حضورا اپنی آتھوں ہی نم چاہتے ہیں حضورا اپنی آتھوں ہی نم چاہتے ہیں حضورا آپ کو کتا ہم چاہتے ہیں حضورا آپ کو کتا ہم چاہتے ہیں اس مرورکنی)

ہم نے دیکھا ہے صحن محکثن میں پھول خاروں کے ساتھ رہتے ہیں ہاں ای طرح شافع محشر گند گاروں کے ساتھ رہتے ہیں ہاں ای طرح شافع محشر گند گاروں کے ساتھ رہتے ہیں (قدرالقادری)

قیامت کے دن دیکمنا شان کیا ہے وہ خود کیا ہیں اور ان کا دامان کیا ہے مرے پاس نعت نبی کے علادہ بھلا اور بخشش کا سامان کیا ہے

آج افک مرے نعت سنا کی تو جب کیا

من کر وہ جھے پاس بلاکی تو جب کیا

ویداد کے قابل تو کہاں میری نظر ہے

لیکن وہ بھی خواب میں آ کی تو جب کیا

ان پر تو گذ گار کا سب حال کھلا ہے

اس پر بھی وہ دامن میں چھپا کی تو جب کیا

مند ڈھانپ کے رکھن کہ گذرگار بہت ہوں

مند ڈھانپ کے رکھن کہ گذرگار بہت ہوں

منت کو مری و کھنے آ کی تو جب کیا

وہ حسن دو عالم جی اد بیان کے کرم سے

صحرا جی آگر بجول کھل آ کی تو جب کیا

صحرا جی آگر بجول کھل آ کی تو جب کیا

(اديبراڪيوري)

سپ کے در سے ترآی کوئی بے تلی مرام کید جے جھ پر بھی کرم شن ہول غلام این غلام آپ کی ذات کری لائق صد احترام آپ پر ل کھول درود ادر آپ پر لاکھول سلام

(اسرآرعارتی)

تی ٹی اللہ ونیا میں ہوئے جب مصطفے پیدا تو ہے جانوں میں جینے کا ہواہے حصلہ بیدا دیر مصطفے بیدا دیر مصاب اس اللہ مصطفے بیدا دیر مصراتی الد جراج ارسوط رکی تھا کی گئے جدا اللہ مصطفے بیدا (سید و واللہ ارسین نقو کی)

سردر انبیا کی ہے محفل کی، لیجے کہ حرا مجموعے مجوئے
آپ شنے رہیں میں سنا تارہوں ، ذکر صلی علی مجموعے مجوعے
ہوت میں ساتا رہوں ، دانع رہ فی مرفع ہے میلاد ، نبی
اپ بینمیں جا کر ذرا برم کو، ہوگی رحمت فدا مجموعے مجموعے
عاشتو! حاصل زندگ ہے کی ازعرک کی حم بندگ ہے کی
ہرگزی ہوزیاں پر نیازی اگر، مدحیہ مصطفا مجموعے ہجوئے
ہرگزی ہوزیاں پر نیازی اگر، مدحیہ مصطفا مجموعے ہجوئے

(ميرالتارنيازي)

ولیز پہ سرکار کی جو لوگ پڑے ہیں وہ خود بھی بھلے ہیں ہوں نقشندی، چشتی، نظامی و فریدی سرکار کے سے خانے ہراک ست کھلے ہیں (نیازی)

آئے حضور یاد تو آئے جیے گئے۔ تاریکیوں ٹس دیپ جلاتے جلے گئے جن عاصول کومندندلگاتا تھا کوئی شخص سے نے اُن کو آپ لگاتے چلے گئے (مسرور کیف) منی ند ہو برباد پس مرگ اللی جب فاک اللہ برگ اللی جب فاک اڑے میری مدینے کی موامو دے ڈالیے اس بخشش کا صدقہ اے جارہ دل اور وحسن کی بھی دوا ہو

(حسرره برسوي)

این میخوب کو اللہ نے صورت بخش ید بیضا کی کلیم اللہ کو نعمت بخشی اور عیمانی کو مسیحائی کی دولت بخشی اور عیمانی کو مسیحائی کی دولت بخشی میرے سرکار کو بے مردہ زیارت بخشی

کولُ آجائے طلب سے جمی سوادیتے ہیں۔ آئے بہار تو ہر دکھ کی دوادیتے ہیں۔ گالیاں دیتا ہو کو کُی تو دھا دیتے ہیں۔ اعظم اللہ نے معفرت کودہ سیرت بخشی

(اعظم جشق)

جواب سے کہ ہو مح شا خدا جسے جواب سے وہ مخار کل بنائے گئے جواب سے کہ وہ نہ ہوتا تو کھیلیں ہوتا جواب سے کہ محمہ کا بول بالا تھا جواب سے کہ محمہ کا بول بالا تھا

اُٹھ جاتا ہے جدائی کا پردہ تماز میں عقبے کا چین مفلد کا وعدہ تماز میں سوال میر کہ ہو تعریف مصطف کیسے
سوال میر کہ کی وہ عرش پر بلائے مملے
سوال میر کہ انہیں کیوں کیا حمیا پیدا
سوال میر شب معراج کیا اجالا تھا

مودا ہے اپنے ملا ہے بندہ نماز علی میں موشقی

دو جہانوں پر ترا اور کرم چھایا مہے عاصوں پر سائبال بن کرترا سابیدہے (غلام علی بلیل اندن)

ایمی ایمان میں کال نہیں ہے ری مشکل کوئی مشکل نہیں ہے

(عبدالنن اكبدادر) آپ بي افضل خداك بعد تصديمتمر چشم الطاف وكرم مومرب باكتان ير

(رفع الدين وكي) جال قدائ الله إلى رسول الله

در ثائے تو یا رسول اللہ (شخصیری) اے رسول ہاتھی اے رحمۃ للعالمیں روز تحشر جب سوانیزے پرآئے آفاب

ئی کے در کا جو سائل نہیں ہے کرم سرکار کا جب سے ہوا ہے

آپ کا رتبہ ہے ادراک بشرے ماورا اے حبیب کبریا،اے مبزگنبدے کمیں

ول گدائے تو یا رسول اللہ کاش جر مونے من زبان بودے

آفاق با گردیده ام بمیر شال و رزیده ام بسیار خوبال دیده ام بیکن تو چزے دیگری من تو شدم تو جال شدی من تو شدم تو جال شدی تا کس ندگوید بعد ازیں من دیگرم تو دیگری

(اميرخرو)

ول ورد سے بھل کی طرح اوث رہا ہو سینے پہ تملی کو ترا ہاتھ دھرا ہو آتا ہے فقیرول پہ انہیں عار کھھ البا خود بھیک دیں اور خود کہیں مثلنا کا بھلا ہو

. آداب بظامت

موج لے محرابیا محکانا کس عالم میں وحوشے کا وداوں جہاں میں ان کا حوالہ کل بھی تھا اور آج مجی ہے کیے گمنا سکا ہے کوئی ان کی عزت وعظمت کو ان کا تا خوال الله تعالی كل يمي تعا اور آج مجي ہے جوليس ماني رجه ان كامياني أنيل اين جيها ان کے داول یر کفر کا تال کل مجی تھا اور آج بھی ہے مرش بری سے قرق زیل تک لو لو شام و سحر جنن ولاوت شاو جہال کا کل مجی تما اور آج مجی ہے حسن وحسين فاطمه زجرا بيارے بيارے مولا على آل ئي کا رحيہ إلا كل يكي تھا اور آئ كى ہ اک جادر کے مائے کے بے محرا مادا مرابے بیج تی کنے کا دو شالہ کل بھی تھا اور آج بھی ہے غوث وقريد وخوانيد وصابر سب تيرب ركموالي يي تو تو تدمیم أن كا متوالا كل بحى تما اور آج بحى ب

وہ جن کے دامن رصت سے آگئے ہے۔ گنہ گار کو ملک ہے مامنا کا بیار انٹیل کی ذائے گرائی سے فرض ہے بیادیہ بروز حشر جمیں بھولنا نہیں سرکار (ادیب)

خاک جی جی کمال رکھا ہے۔ مصلفا نے سنبال رکھا ہے میرے بیبوں پر ڈال رکھا ہے میرے بیبوں پر ڈال رکھا ہے میرے بیبوں پر ڈال رکھا ہے (انجازة دری)

جم كورور كى يجان شرمجا جائے عبر توركو انسان شرمجا جائے

بیرل نماز کیوں نہ ہو معراج موغین یاتا عروج وقرب ہے بندہ نماز میں (عدالسم بيدل) لو بجر دنیا میں کیا تھا ویکھنے کو اگر طبیبہ نہ ہوتا دیکھنے کو فب امری محد کو باوایا خدا نے ایتا جلوہ دیکھنے کو کیا ہے دوبان دیکھنے کو وہ جس نے ویکھاہے اک بار طیبہ زماند رک کیا تمنا دیکھنے کو چل تھا تور سے جب تور ہے (الآل جعفري) راز اس کو قائل کرتی ہے خوش نظر بخوش معاش کرتی ہے م دور کو عال کرتی ہے رحت مصطفح عليه خداكي فتم ((B,on))

#### نعت تك

(معاجبزاوه خان اخر عربيم نتشوندي)

نام محر الخل و بالا كل بحی تھا اور آئ بھی ہے مشکلیں سب كى نالنے والا كل بھی تھا اور آئ بھی ہے بدل فیل مشکلیں سب كى نالنے والا كل بھی تھا اور آئ بھی ہے مب سب سے بیارا سب سے زالا كل بھی تھا اور آئ بھی ہے معمل میں سب سے بیارا سب سے زالا كل بھی تھا اور آئ بھی ہے كام مبرا نی دنیا كا اجالا كل بھی تھا اور آئ بھی ہے كام مبرا نی دنیا كا اجالا كل بھی تھا اور آئ بھی ہے كل بھی مب ان كھائ ہے ،آئ بھی سب ان كھائ ہے ،آئ بھی مبان كھائ ہے ،آئ بھی مبان كھائ ہے مردو ان كو بھے والوا جاكو اابوش كے نافن لو مردو ان كو بھے والوا جاكو اابوش كے نافن لو مردو ان كو بھے والوا جاكو اابوش كے نافن لو مردو ان كو بھے والوا جاكو اابوش كے نافن لو مردو ان كو بھے والوا جاكو اور آئ بھی ہے دائے ہوں ہے مردو ان كو بھے والوا جاكو اور آئ بھی تھا اور آئ بھی ہے دائوں ہے ہے مردو ان كو بھے والوا جاكو اور آئ بھی تھا اور آئ بھی ہے

ہزار بار بشویم وائن زمشک و گلاب ہنوز نام تو محفق کمال ہے ادبی

براد بار دہن کو گلب سے دھویا پر اب بھی نام ترالوں تو ب اوب تھرول ہے میرے کھید دل میں ترا مقام سعید ای حالے سے میں کول فوش اقتب تھمرول

(منتوم أرد وترجمه: مصاجزاده خان اختر عرفم نقشوندي)

مِن وَّجهِكَ النَّبَيرِ لَقَد نُوَّرُ القَمَرُ بعد الاخدا بزرگ ترکی تصد مختر

يا صَاحِبُ الجمَالِ وِيَا مَيُّدَ الْبَشَرِ كَا يُسْكِنُ النَّمَاءُ كَمَا كَانَ حَقَّهُ

ا کے دیکر کسن اے بھر کے سرداد چہرے سے ترے علی جائد ہے پُرانوار حکن علی نہیں ادائے حق توصیف بس سے کہ خدا کے بعد میری سرکار

(منظوم أردوترجمه مصاحيز اده حان اختر عرتيم تعشيدي)

ایسے انسان کو انسان نہ سمجما جائے (سید حیدرعہائی آنوی)

(سید حیدر عباس اموی) سر پر دشت کی گھٹا جموم کے چھائی ہوگی محفل صل علی جس نے سجائی ہوگی

(نازی)

دو خیل میں تو حارا کھ خیل کوئی مجل مو وہ حارا کھ خیل

آئے مری تقدیر تمنا تو یک ہے والی شریس آئل کا جا باتو یک ہے جوانبيل كبتا بانان بين مير يي

جب گذگارول کی طیب یس رسانی ہوگی رد زیمشرونی ہوگا سرے آتا کے قریب

کیا سمندر کیا کنارا کھے نہیں جو نہیں ہے نام لیوا آپ کا

پہنچوں در سرکار پہ جاہ تو مجی ہے بیان کی رمنا ہے جمعے جمیعیں جمعےروکیں

## رزق کی کشادگی کیلئے

حصن حمین کی روایت ہے کہ سرکار دو عالم سلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے
ارشاد فر ویا ہے کہ جس کے یہاں رزق کی تلی ہے اور وہ پر بیٹان رہتا ہے تو
است چاہئے کہ وہ جب اپنے کھر جس وافل ہو تو سب سے پہلے المتام ملیکم
ورحمت اللہ و برکات کے اور پھر در وہ وسل م پڑ سے اور آخر جس ایک بارسورہ
اخلاص پڑھے۔ انشا واللہ جد تی رزق کی تنگی ختم ہوج سے گی۔

منانب: ١٠٤٠ كرجم على صد يقى متندى طابرى

ہم جہاں بھی آئیں جائیں دب ادارے ساتھ ہے خوف کیوں ول ٹس بٹھائی رب ادارے ساتھ ہے جو تی کا او گیا اللہ اس کا او گیا بخش ویں سادی خطائیں دب ادارے ساتھ ہے بخش ویں سادی خطائیں دب ادارے ساتھ ہے (الدمیاں حافظ ایکاتی)

جے اللہ کہتے ہیں ترائی شان والا ہے وہ عالم کا وہ خالق ہے اکیلا ہے ترالا ہے حقیقت میں جو ہے بعدِ خدا تعریف کے قابل وہ عمدِ اللہ کا بیٹا تھر کمل والا ہے (حمدِ اللہ کا بیٹا تھر کمل والا ہے

تری رحوں کا دریا سر مام کال رہا ہے کھے بھیک ال رہا ہے مرا کام کال رہا ہے مرے دل کی دھڑ کوں ہیں ہے شریک ہم حیرا ای عام کال رہا ہے اس عام کی دھڑ کوں ہیں ہے شریک ہم حیرا ای عام کال رہا ہے مرے دامن گوائی ہیں ہے بھیک مصطفا کی اس بھیک مصطفا کی اس بھیک مصطفا کی اس بھیک مصطفا کی اس بھیک مرا کام چال رہا ہے اس دہا ہے اس دہا ہے

(قاسم جمائلیری) کھے آپ نے باایا بیکرم ٹیس تو کیا ہے مرا مرتبہ پڑھایا بیہ کرم ٹیس تو کیا ہے درمصطفا ہے الجم میں خود آ کیا گردل سمجھی اوٹ کرنڈ آ یو بیرکم ٹیس تو کیا ہے (قرابھم) جب حسن تفا ابن كا جلوہ تما الوار كا عالم كيا ہوگا بركوئى فدا ہے من ديكھے تو ديدار كا عالم كيا ہوگا جس وقت شف خدمت بش ان كى بو بكر وعر مثان وعلى إلى وقت رسول اكرم كے درباد كا عالم كيا ہوگا

(جمنهانی)

محشرش شفاعت کا دو حق دار نه ہوگا مخد حار میں ڈوب گا بھی یار نہ ہوگا محفل میں ترا بیٹھنا ہے کاد نہ ہوگا کیا جھ پ کرم سبو ایراد نہ ہوگا (زاہد تیازی)

آتے ہیں وی جن کوسر کار بلاتے ہیں جو سرور عالم کا میلاد مناتے ہیں ہم نعت کی صورت میں قرآن سناتے ہیں (نیازی)

برسر ہیشدآپ کی چوکھٹ پھم دے ہر دم زبال پر مدحب شاو اہم رہے (رشیددارثی)

وہ خدا کو بہ خدا نزدیک پاتے جا کمی گے محرے آتا عاصع ل کو بخشواتے جا کمی گے (احمال حافظ مرکائی) سلطان مدینہ سے جسے پیار نہ ہوگا مشکل میں نہ جو یاد کرے اپنے نی کو دنیا بھی سنور جائے گی، جنت بھی ہے گی بدلے ہیں حضور آپ نے دنیا کے مقدر

محبوب کی محفل کو معقاق سواتے ہیں وہ لوگ خدا شاہر قسمت کے سکندر ہیں آقاک نتا خواتی در اصل عبا دت ہے

سرکار ایوں بی آپ کا لفف وکرم رہے فرصت بی ل سکے نہ ورؤ د وسمام ہے

سیّد کو نمن سے جو لو لگاتے جا کیں گے کوئی بھی پرسمال نہ ہوگا عشر میں حافظ کر درؤ و وقعت کی محفل کو بھگاتے رہو جائے مدست شام امم جلاتے رہو کی نہ آ لیکی زنمار خبرو برکت میں ہیشہ جشن صبیب ضدا متاتے رہو (رشید ہدم)

(علامها قبآل)

جس سے لی کونین کو فرنت اُس سے فرنت مانگیں ہم اُس سے ملے گی ہم کو فرنت ' عزت والد نام ہے وہ معتقر اپنے چھوٹے مندسے اُس کی کیا تحریف کرے جس کو خدا خود جاہے انیا جاہت والا نام ہے وہ

(منظرہائی)

ہم دینے اگر گئے ہوتے کا م بکڑے سنور گئے ہوتے اُن کی چٹم کرم جو ہو جاتی پار ہم بھی اُتر گئے ہوتے اُن کی چٹم کرم جو ہو جاتی پار ہم بھی اُتر گئے ہوتے (ظّفراکبر ہادی)

مخزن دوعطا کا ہے دوفیق کا دریا ہے
اے کا تی دوخا کی ہے دوفیق کا دریا ہے
(حضرت میدخا کن کی خاص کی خش)
مدشکر کہ پھر آیا سرکار کے قدموں میں
میں رہ کو پکار آیا سرکار کے قدموں میں
اک نعت سنا آیا سرکار کے قدموں میں
اک نعت سنا آیا سرکار کے قدموں میں
اگ نعت سنا آیا سرکار کے قدموں میں

جس کے در اقدی سے خالی نہ کیا کوئی مجڑی ہوئی اک بل میں تقدیر سنور جائے

اللہ نے پہنچایا سرکار کے قدموں میں زو کیے بھلا ہوگی اب کوئی وعا میری جھے جیسا جمی والال کیا تذرکو لے جاتا

لاریب دو عالم علی تیل اس کا جواب قرآن کے بائد نیس کوئی کاب اللہ اس کے اللہ اس کوئی کا جواب اک بار تو بر اس کوئی دیکھے وال سے مجر دیکھے کہ ملتا ہے اے کہنا الواب

(معايرين زوتي)

لذت لعيب ب جمي كور كے جام كى النج يور كے جام كى النج يور درود و سلام كى خال في النج يور و سلام كى خال في النج يور كي مقل تمام كى النج يور كي مام كى

(عيم جرا قال تلق)

شفتے الوریٰ کا جو نام آگیا ہے شفاعت کا میری بیام آگیا ہے سفاعت کا میری بیام آگیا ہے سفاعت کا میری بیام آگیا ہے سفتھ کی کم ہے کیا فخر میرا مرا نعت خوانوں میں نام آگیا ہے سفتھ کی کہا آبال گفتی)

حضرت ستيد تا ابو بكرصد بق مني الله تعالمة

کیا بیاں کیجے ' میں کی مدین کہ رہا ہے اضمی خدا مدین ہم نقی عارثور میں بھی رہے ہم نے آتا ہے کی وفا مدین مشکلیں اس کی موکنی آسال جس نے جب بھی کہا ہے یا مدین مشکلیں اس کی موکنیں آسال جس نے جب بھی کہا ہے یا مدین

حضرت ستيرناعمر فاروق يني الدنوالي منه

مجر کی دُما فاروق اعظم مجر پر فدا فاروق اعظم زمائے میں بہت مادل میں لیکن میں اُن سب سے سوا فاروق اعظم بشر تو کیا کہ رُدد نمل پر ہے تہارا دہدیہ فاروق اعظم

حضرت سيدناعمان غنى بنى الدنالات

دین کے رہ بر ہیں علی ان فنی تعلق دُنیا پر ہیں علی ان فنی دین کی خاطر لٹائے جان و مال دین کے یاور ہیں علیان فنی مرح ذوالورین ول سے کیجے جان تیقیر ہیں علیان فنی مرح ذوالورین ول سے کیجے جان تیقیر ہیں علیان فنی (فان اختر ترقیم)

حضرت سید ناعلی اگر تضی رض اشته لاهد حمایت بی امامت میں شجاعت میں حوادث بی علی واور علی رہبر علی حیدر علی مولی مرک عزت مرک منظمت مرک افغت مرک تبعت علی مولی علی مولی مولی مولی علی مولی علی مولی مولی مولی مولی در نی ہے رہوں جمل ہے کام ہوجائے مرا بھی اُن کے غلاموں جمل ہام ہوجائے دائے کہ زمانے جمل ہر طرقب دائے کام ہوجائے کر ایک ہار تی کا قطام ہوجائے رخیس حضور کی تعنیں تمام اہل و میال کروں جس سے کی اہتمام ہوجائے جو کی ہے جس نے نائے دسول و آلی رسول خوا کے خوا کرے کہ وہ متبول مام ہو جائے نظا کرے کہ وہ متبول مام ہو جائے در حضور ہے حاضر قلام ہو جائے در حضور ہے جائے در حضور ہے حاضر قلام ہو جائے در حضور ہے جائے در حضور ہے در

(صاجزاده خال الترعيم فنشيندي)

حضرت عا كشرصد القدرض الله تا كانتها المست عا كشر البشر البي عائشه ولي خير البشر البي عائشه وي عائشه وي عائشه وي عدد المرح الوكر أضل الم المحاب المن المرح الوكر أضل المن تمام المحاب المن المرح المرح

حضرت سيده فاطمدز برارسي الذي الا

نور چشم مسطق یا سیده یا فاطمه جان دول تم پر فدا یا سیده یا فاطمه مادر شیر وثیر راز ردار برتف اے اے بتول یا صفا یا سیده یا فاطمه (ستاردارثی)

منبل کے قوار علی ہے مبر کے قوار حسین آپ کی ستی میں دونوں ہی جوہر فاطمہ دی حسین امالی نسب زہرہ لتب دی الاحزام سب سے بہتر فاطمہ (نیازی)

حضرت سیدنا امام حسن رضی الله تعالی عند کا نکات مبرکے اے شہر یارِ محترم الل تسلیم در منا کو تونے بخشی زندگی اے تسیم باغ رصت قمع برم فاطی آشنائے سر وحدت اے حسن این علی (أعظم چشتی)

ریاض نبی کی نظفتہ کلی ہوں میں باران رحمت سے پھولی پھلی ہوں علی بلیل محلفن مصطفے ہے مجھے یہ شرف ہے قلام علی ہوں (غلام علی باران)

> شاہ مردان هير بردان مولاوهكل كشا مانظ دسن مين "في على جان على وه هجاعت بود عدالت بود سخاوت يا كرم بر درتى تاريخ كا ہے زير منوان على

(رثیروارثی)

جینی خوشہو ہو تراب جی ہے ولی ہو کب کسی گلاب جی ہے دم ہہ دم ہے علی علی لب پر یہ دکلیفہ عمرے نصاب علی ہے

(سيدذ والفقارعلى نفوي)

حضور سيد ناغوث اعظم دستگير رستاندهد جب دم آخر خيال آيا بدے فم ساتھ جي ان کي رحت بول آهي، فم شکر جم ساتھ جي اقر يا کيون دورے جين ميں کوئي تنها تهين اول غلام فوث اعظم فوث اعظم ساتھ جين

(مئور بدايوني)

ح**صرت خواجه غریب نواز**ره نداشطیه (الحاج گلش اللی قادری)

کیاں ہے کوئی تمہاری مثال یا فواجہ معین دین ہو تم یا کمال یا فواجہ ہے معطف بی کی جیسی تمہاری سیرت باک ہے معطف بی کا جیسا جمال یا فواجہ ہیشہ آپ نے مکتوں کی لائ رکھی ہے ہیشہ آپ نے مکتوں کی لائ رکھی ہے کی ہیس جب بھی سوال یا فواجہ کئی کے روضے کو روضہ ترا سیجھتے ہیں کئی کے روضے کو روضہ ترا سیجھتے ہیں کہارے در کے جو مثلاً ہیں سب فی تفہرے دیا ہے جو مثلاً ہیں سب فی تفہرے دیا ہے خواجہ دیا ہے تم نے آبیں اتنا مال یا فواجہ دیا ہے تم نے آبیں اتنا مال یا فواجہ مرے دیا کی کشتی بہنور جس آن کھنٹی خواجہ مرے دیار کی کشتی بہنور جس آن کھنٹی خواجہ مرے دیار کی کشتی بہنور جس آن کھنٹی خواجہ مرے دیار کی کشتی بہنور جس آن کھنٹی خواجہ مرے دیار کی کشتی بہنور جس آن کھنٹی خواجہ مرے دیار کی کشتی بہنور جس آن کھنٹی خواجہ مرے دیار کی کشتی بہنور جس آن کھنٹی مرے دیار کی کشتی بہنور جس آن کھنٹی

حضرت سیدناامام سین رضی الله تعالی مد دب دادیه محشر ہے تبی شاخ محشر محشر ہمی گذگاروں کی کیا خوب بنی ہے غرقاب مجسی ہو نہیں سکتی مری مشتی جب ساید گلن سریہ حسین ابن علی ہے

(ij)

ہے تول پاکورسول اکرم حسین جھے ہے جدائیں ہے جو این حیدر سے بغض رکے جارا وہ مخدائیں ہے تمام اصحاب میں حرم تمام رشتے می سے تھم مقام صرو رضا میں لیکن حسین سادو سرائیس ہے دیا

حفرت امير خسرو، نظام اوليا ہے پوچھ
کيا حسيں مقام ہے بايا فريد کا
جب كك روہ جہان عن ذكر في كرو
ونها كو يد بيام ہے بايا فريد كا
جو گلشن فريد پركتا ہے جال ناد
سيا وي غلام ہے بايا فريد كا
آتے كى كام حشر على تبعت فريد كى
جاديد كة خلام ہے بايا فريد كا
جاديد كة خلام ہے بايا فريد كا
جاديد كة خلام ہے بايا فريد كا

## عبداأة مإب جيلاني رمة الدمليه

آئے ہمکاری در یہ مہدالا ہاب جیال باکس کے مجدول ہر کر مہدالا ہاب جیال آتا ہے جو سوال جاتا تھیں ہے قالی تو ہم کا تو ہیں ہے قالی تو ہم کی اثرا در مبدالا ہاب جیال کھاتے ہیں دوز در یہ دان دات تیزا لکر اور یہ دان دات تیزا لکر اور یہ دان دات تیزا لکر قدموں میں جنوہ کر ہیں لخت جر تہادے کیا کی تو ہو اور نی تن کے مدتے داری مل کر عبدالا ہاب جیال مشکل عاری مل کر عبدالا ہاب جیال

لقب تمبارے ہیں ہندانولی عطائے رسول
دیا خدا نے تمبین وہ کمال یا خواجہ
تی کے صدقے میں کردہ نہال کائن کو
کہ اب تو ہوگیا جینا محال یا خواجہ

#### **ተተተ**ተ

عال صحب شق التمر فریب آواد بدال اتن علی مربہ مر فریب تواد غلام فواجہ کیا جارہا ہے محکثن کو ہے کیک اس پر کرم کی تظر فریب لواد

#### \*\*\*

مطا کرم کا اشارا ہو یافریب ٹواز حمیس تو سب کا سارا ہو یافریب ٹواز حمیس تو سب کا سارا ہو یافریب ٹواز تہارے در کا اک اوئی محما ہے گئش بھی بلند اس کا متاما ہو یا فریب ٹواز بلند اس کا متاما ہو یا فریب ٹواز (الی جھش الی)

#### بأبأ فريدرجة الشعليه

کیما حسین نام ہے بابا فرید کا مرد کا مرد کا مرد کا مرد کا مرد کا خواجہ تطب کے یہ لال ہیں چہاں میں مام ہے بابا قرید کا چہاں میں مام ہے بابا قرید کا

خوت و قطب ابدال وولی بھی خواد فرید اور میرے تی بھی خوش بین تمار سے میں آگر العل سٹی شہباز آلکندر گئندر گئندر کی بات میان ناتھ جوائے والے گئری بات مانے والے خال میں العل سٹی شہباز آلکندر خال سٹی شہباز آلکندر

آ فآب طریقت صفرت صوفی ماسر منبیر خال پیرا کرا کرآ بادی تعقیدی

رخصت ہوئے ہیں جب سے وہ محرّم قلندر

اب یاد آدہ ہیں دہ دہ کے ہم کو اکثر
مونی منیر پیلر ممونی منیر پیلر مونی منیر پیلر
مُرشد نے ہی ظاہت دے کر آبیں لوازا
دہ برسمرات کے ایسے نے اک شاور
مونی منیر پیلر مونی منیر پیلر مونی منیر پیلر
یہم ادب کی بے فک وہ کردہ جے فدرت
مونی منیر پیلر مونی منیر پیلر
ان کی جو شامری تھی ہے فک وہ دل نشیں تھی
مربوط آن کا لہذ مخصوص آن کا تیور
مونی منیر پیلر معونی منیر پیلر معونی منیر پیلر
مونی منیر پیلر معونی منیر پیلر

خوف و خطرتین ہے منگوں کو اب کمی کا

ر پر تی ہے چادر عبدالقہاب جیلاں

دب کی عزایتوں ہے، بیارے نبی کے صدقے

مغن کی ہے در پر عبدالقہاب جیلاں

جادید کی ہے خواہش، کنے فکر کے صدقے

ہو ہاتھ میرے سر پر عبدالقہاب جیلاں

ہو ہاتھ میرے سر پر عبدالقہاب جیلاں

و ہاتھ میرے سر پر عبدالقہاب جیلاں

(مجرجاویدقریدی)

يذران عقيدت معرت في سيرة على شهباز فلندر

(صاجر ادوخان اخر عديم نتشندي)

#### نعت

کھے افک شب ہجر بھا کیوں نہیں کہتے یوں ول کی گلی آگ بھا کیوں نہیں لیتے جب بخش دیا شرف غلای شد خوبال مِرُ رُحُ مے فتاب اپنے بنا کوں ہیں لیتے کر جٹے جو وٹو کے تم قرب ٹی کا ول اینا مدید علی بنا کیوں تہیں لیتے دیج ای وہ ہر ایک کو منہ یا کی مرادی أس ور كا كدا خود كو ينا كيول فيس ليخ ردية يو تريح بو يهال درد و الم ش اب جل کے مدینے اس دوا کول الیس لیتے اب بم ے سے جاتے ہیں جر کے مدے مركار مديد ش بلا كيول فيل ليج ساتی مجی تی اور این ساتے مجی اب رہز ے خوار و چاو بور کے اُٹھا کیوں قبیل لیے درکار ہے آجھوں میں اگر روشی عاقل خاک رور مرکار لکا کیاں جیس کیے جب بھی تھی ہاتھ اپنشفت سے میرے مرپر رکھتے تھے ہاتھ اپنشفت سے میرے مرپر رکھتے تھے ہاتھ اپنشفت سے میرے مرپر کر رمونی منیر پیکر اموان انجی الدین تھی)

آ قاب طریقت دعنرے صوفی ماسٹر منیر خال پیکر اکرآبادی صوفی منیر آخان کی یاد آئیگی ہہت صوفی منیر آخان کی یاد آئیگی ہہت تصدیخ ن وری کا چھڑا جب کہیں کمی نظرول سے دور ہوگئ ول سے نہ جانکے دیر ہوگئ وری کا آج مجمی محفق تی ہوگی (رشید ہورم)

ستناہے زمانے میں فریول کی مداکون سرکار دو عالم مرے آتا کے سواکون اللہ بھی بخشے گا خطاکون اللہ بھی بخشے گا خطاکون اللہ بھی بخشے گا خطاکون (روائل جودمیوری)

ب اجازت أس طرف تظری اف سكتا ہے كون وہ تد بلوائي تو الن كے دَر په جاسكا ہے كون بن كو دن اللہ على ہے كون بن كو دنيا شرق اللہ الن كى التفاعت إلى المقيل حشر شي أن كو جہنم ہے كون حشر شي أن كو جہنم ہے كون

آئی حمی جمل طرف سے وہ آواز ذم بذم فوراً نبی کے بوصف کے اس طرف قدم نزدیک تر خدا سے بوت سرور ام بات باتی تن کار بھی فصل کر دو کماں سے کم اب اس طرف رسول آدھ حمی خدا کی ذات کار کیا جدا م خربین پردے کی ہے ہے بات کار کیا جدا م خربین پردے کی ہے ہے بات

(الأكل أيس)

> منتی احمد عمرادل ال قدرمرشاریه دوزوشی میری دبال پرددت مرکاری د کید کرشان خی مکر بط بطت ریس بدهقیده جنت میل ان پر خداکی بار ب

(Ling 5)

#### نام محريظة كسب

الله بر تور ہوا نام جر کے سبب مریال ہوگا خدا نام جرکے سبب ہم کو کیا کچھ نہ ملا نام جرکے سبب ایک دہتا ہم جرکے سبب حوصلہ ہم کو ملاء نام جرکے سبب مرث کی آن کی خطا نام جرکے سبب مث کی آن کی خطا نام جرکے سبب فیل کی درج ویلا نام جرکے سبب فیل کی درج ویلا نام جرکے سبب فیل ان کا بھی ملا نام جرکے سبب محتر ہیں یا خدا نام جرکے سبب محتر ہیں یا خدا نام جرکے سبب محتر ہیں یا خدا نام جرکے سبب یہ کرم جو یہ ہوا نام جرکے شہدی)

جو لما ہم کو ملا نام محرکے سبب
کر لیے اسم محد کو دخلیفہ دل کا
زیب دیتا نہ تھا ہر در پہ بھنگتے رہنا
تفرقہ ہم کومٹانا ہے زمانے ہے ندیم
جان دتن آتا پہ قربان کریں گے سوباد
ایوں لماحفرت آدم کو بھی اس نام ہے نیش
جب ہمی جھکو ٹم واکام نے تھیراہے برتم
مرجیہ بھی جھکو ٹم واکام نے تھیراہے برتم
مرجیہ بھی جو کو ماکام نے تھیراہے برتم

تا اہد ہورش طوفاں سے رہیں کے محفوظ بو سفینے مرے آتا کے حوالے ہوں کے اُن کو جند کے دان کا خدا حشر کے دان مدرق دل سے بوائیس ہائے دائے ہوں کے مدرق دل سے بوائیس ہائے دائے ہوں کے

آدج ہے اپنے مقدر کا متارہ ہوگا جس کری محدد کا مقارہ ہوگا جس کری محدد خطرا کا فلارہ ہوگا فلاد وکور سے دے اُمت عامی محردم یہ کہاں رحمت عالم کو محادد ہوگا

(ٹرینے ٹیر)

مویٰ ہے کیا کم نہ جھے دیکھ سکو کے محبوب کو دیدار کرایا شب معراج کھ فرق نبیں طالب ومطلوب ہی فاقی محبوب ہیں محبوب سایا شب معراج (مزیز الدین فاتی القادری)

حالات سب بدل دید آقا کے نام نے
سب پر کرم کیے در خیر الانام نے
آجائے اِک جملک جونظر آپ کی آنہیں
لگ جا کی حن والے بھی دل اپنا تھائے
ایار مصطفا ہول مرا یہ طلائ ہے
اے باروائے چاو جھے دو نے کے سائے
اسے کی آرزو ہے ایسے کیجے آبول
سے نعت جوکمی ہے جہارے قلام نے

( المراحمة الادري)

مرشدياك

یہ کیف ہے مُرشد بیاک کا جدھ میں نے دیکھا خدا مل میا
علی ال کے لئے محمد لمے محمد لمے لئے اور خدا مل میا
تیری دَین کا کیکہ فیکا نہ کین جو ماٹھا تھا اس سے ہوا ال میا
بنانے کو داو جانت مجھے میرا مُرشد و رہنما ال میا
بنانے کو داو جانت مجھے میرا مُرشد و رہنما ال میا
بنانے کو داو ہوان جوگی اب زیادت میرک
برکی چوکھٹ ہوگی اب زیادت میرک
بزدہ کئی ہے اس قدر دال میں محبت دیرک
بیرکی احداد سے ہوتی جین آسان مشکلیں
بیرکی احداد سے ہوتی جین آسان مشکلیں
بیرکی احداد سے ہوتی جین آسان مشکلیں

کتبد بہر پہ رصت کی گھٹا چھائی ہے چائی ہے اللہ اللہ فلایان ہم کے لیے اللہ اللہ فلایان ہم کے لیے اللہ اللہ خلایان ہم کے لیے ایک جنت تو مدینے ہیں اُر آئی ہے ایک خردوں مہادک ہو تھے اسے داہد ولی مشاق مدینے کا تمنائی ہے میری تربت سے کیرین گے ہے کہ کر ایک ہی ہے کہ کر بیری تربت سے کیرین گے ہے گہ کر بیری تربت کے کیرین گے ہے گہ کر بیری تربت کے کیرین گے ہے گہ کر کر بیری تربت کے کیرین گے ہے گہ کر کر بیری تربت کے کیرین گے ہے گہ کر کے ایک مائے بیری ترب کی بیری کر بیری ترب کے مائے بیری ترب کو بیری کر بیری ترب کے مائے بیری ترب کی بیری ترب کے مائے ہے کہ کر کر کر بیری کر ب

(ماع محرقوال)

الله نے آقاکو بلایا شب معراج بے بردہ بھال اینا دکھایا شب معراج اللہ اللہ عمراج اللہ معراج اللہ معر

آءات تظامت

جو در شاہ دیں سے لما ہے وہ سکوں کب کین سے لما ہے ہم گدائے در محمد ہیں ہم کو سب یکھ سین سے لما ہے (محمر بدایونی)

تبلیخ دیں کے داسلے کھر کھر بھد نیاز ذکر نبی کی برم سجانے کا وقت ہے محفل تھی ہوئی ہے سلام وورود کی یہ دفت نعب پاک سنانے کا وقت ہے (پردفیسرا قبال تظیم)

بارہ رہی الاول کے دن کیا سال تھا جگ مگ جگ مگ پیدا ہوئے سرکا ردو عالم سارا جہال تھا جگ مگ جگ مگ طلع بریں ہے حوریں آئے میں آمنہ کی لی کے آگان میں لورانی تھا کوشہ کوشہ سارا مکاں تھا جگ مگ جگ مگ (محروجدانی)

آج میاا دُالتی ہے مسکراتے جائے پر چی رشان نی ہر سو اڈراتے جائے آج میاا دُالتی ہے آج تو دل کول کر اُج میان اللہ کے نعرے لگاتے جائے آج دسول اللہ کے نعرے لگاتے جائے آج فیضان نی کے نوٹے کا وقت ہے آج میاد دُالتی کے نوٹے کا وقت ہے آج میاد دُالتی کے گوئے کا وقت ہے آج میاد دُالتی کے گیت گاتے جائے جائے جائے

(طاہرسلطانی)

ساغر کی آرزو ہے نہ بیانہ چاہیے اس اک نگاو ترشدے قانہ چاہیے بیرم ٹمانے مشتل کی ہے خدا گواہ ہر وم تصور رئے جانانہ چا ہے بیرم ڈرائی)

یوں تو لاکھوں مدجیس جی آپ ساکوئی جیس ایک محبوب خداہے دوسرا کوئی جیس جم جتنا عی نہ کون ہو پخش دیتا ہے خدا وہ جے کہدویں کہ جائیری خطا کوئی جیس

(ع<sub>اد</sub>ری)

مدح خوانول كو مدعوكرنية كاشعار

جب گرے کوئی ند آیا تھائے آیرو رکھ کی ٹی کے نام نے کر رہا ہوں ذکر عمل مرکار کا محتبد معزا ہے ممرے سائے (عبورک)

نعت پڑھنا صاحب قرآن کی عروی ہے حفرت حمان کی وصف ہے نعت ہے ہور آپ کا کٹنا دوئن، ہے مقدر آپ کا بلاندین ہے مقدر آپ کا بلاندین ہے مقدر آپ کا

ترجمان اللي سقت آپ جين وارث راو طريقت آپ جين آپ جين هي شاخوان رسول آپ کو ماسل ب عرفان رسول بين سول بين سول

یہ اگر پڑم پی لب کھو<sup>©</sup> ہے۔ اس کی قسمت کا لکھا ہو<sup>©</sup> ہے واصف رمعرت روالا بن کر کان چی حرف کا دس کھو<sup>©</sup> ہے داصف رمعرت روالا بن کر کان چی حرف کا دس کھو<sup>©</sup> ہے

- آداب مظامت

فقا جلوہ حضور جبر تک نظر گئی چیوٹی می چیز کتا ہوا کام کر گئی ایسے شی اے اجل آو کہاں جا کے مرکئی جنت مری نگاہ ہے اول سے آر گئی جنت مری نگاہ ہے اول سے آر گئی (شیاب کیرانوی)

یہ کیفیت ہی بارہ جھ پر گزد گی آگھول نے خود ٹی سارا مدینہ سمولی پائے رسول پر ہے مرا سر جمکا ہوا دیکھاہے جب سے ٹی نے دیارتی شاب

> أبالے ذہن على إلى روشى همير على ب كدفاك كوك مريد مرے فير على ب مريخ بنجول كا يارو ضرور بہنجول كا كريد مولة مرے باتحدكى كير على ب

(مرشرمدی)

ان کے اعداد کرم کے کیا کہوں کتنے ہیں نام موج دریا ہی باراں دور بح جکراں دوستو! جب بھی دُعا مانگو او بید مانگو ضرور او کی نسبت ان کاغم اُن کی رضا اُن کی اہاں

(ادسیداست پوری)

جشن میلاؤالتی ہے اُن سے الفت کی دلیل ہر مسلمال کی ہے چاہت جشن میلاؤالتی جشن میلاؤالتی ہے داحت تھب ونظر ہے محبت کی علامت جشن میلاؤالتی

( ما برسلطانی )

ہے مکال سے لامکار تک رغبہ کا شان رسول جس طرف ہی جائے ما ہے ایک جنوب فیص الفردوس میں اک دن ٹیس جاؤں گا میں جمع کو کائی ہے غلامی غلامان وسول

(الميف آش) الله نظر كا بول دسالت ما بي ذكر كرد با بول دسالت ما ب كا الله كى نظر كا جودن نظر ب يرك من كما جواب لاؤ كر اس لاجواب كا (يرك يوش)

مو متوازب سے کرو ہر ہم سوالی مصطفا و کے اور سے خواب عمل اک دن جمالی مصطفا در بیل کچے جم محکمت بیل کلوں جمل جائے جم المحکمت بیل کلوں جمل جائے جمل جادہ کر ہر شے جم ہے حسن وجمالی مصطفا مشتق سچا ہو تو ایجر اہل نظر کے واسطے آئے جمل دنیا جس دوئن ہے جمال مصطفا

(سعیدنتشیندی)

## لوآئی ہے شب برات

(صاحبزاوه خان اختر ندتیم نتشیدی)

رب کے بندو! سر کو جمکاؤ او آئی ہے شب برات آن الی تقدی جگازاد آئی ہے شب برات اٹو اٹو مجد کو جاؤالو آئی ہے شب برات ووزرج سے چھٹارا یاؤالو آئی ہے شب برات آج اوا ہے خالق وحولا 'پہلے فلک پر جلوہ قرما مب این دائن پھیااؤالو آئی ہے شب ہرات کر بیں تفامال باب تبھارے رب بھی ندہوگا رامنی برارے یاؤں کا کر آئیں مناؤ لو آئی ہے شب برات کراو الیہ عام عوکراس ہے کما ہے الیہ کا الد محمر ابنا جت میں بناؤ او آئی ہے شب بمات الی بے بیشب بیداری رب کے صفور آنو بول جاری مجر جر جا او رب سے یاد او آئی ہے شب برات مَالِنَ كُلِ فِي عَم كُو مِطا كُارات بِ اللِّي بركت وال نعت أس كے محبوب كى كاؤا او آئى ہے شب برات ذكر أي ونها كي دوات ذكرتي عقبي كي راحت ذکر کرو اور خوش ہوجاؤ کو آل ہے شب برات آئ کی شب ہے ڈرودوں والی اپٹی کرو آ کا کوسلامی پڑھو ڈرود اور رب کو مناؤ کو آئی ہے شب برات سنتے ہیں ان سے نعت آؤ پاتے ہیں ہم ترور سیّد حسن علی کا یہ انداز و کھنے مرح رسول لے کر مدینے گئی ایر تم سیّد حسن علی کا یہ اعزاز د کھنے

(صاجزاده خان اخرّ يرتم فتشيدي)

منی زان فر السدد مرایارشدد بدایت مرحد منی دان فر السدد مرایارشدد بدایت مرحد منی جمال الدین بدردی افتادری دوش جمال الدین بدردی افتادری جمال دوش از شع درسات مخرس منی جمال دیم اللی طریقت شارع ز مو مدیث مرای مرای مرای خرس منی جمال بخر علم و مرح مکمت مخرس منی جمال ایمان کے داون می ان کی جابت ہے ترجم اللی ایمان کے داون می ان کی جابت ہے ترجم کرتے میں آت کی درست مخرس منی جمال کرتے میں آت کی درست مخرس منی جمال

(صاحبزاده خان اخر يم تيم فتشيندي)

غزل

غزل

رہے اپنیم سکون وقرار مشکل ہے ایک میں آئے ہے آیا کہ پیار مشکل ہے وفا کے بدے جاتا ہے توانا ہے تو اس میں اب بھی تر مقبار مشکل ہے کروں میں اب بھی تر مقبار مشکل ہے کیا ہے تیرے تفافل نے بھی کو وہواند سکون پائے لی سے قرار مشکل ہے تیرے میان مور بول رات وان جاناں تر وہ قید ہے جس مے فر ر مشکل ہے تر وہ قید ہے جس مے فر ر مشکل ہے ترکی وہ قید ہے جس مے فر ر مشکل ہے

ورب این آی کی بدولت دے ہم کو جند کی بٹارت کی کو جند کی بٹارت کی کے اور کیتے جاذ کو آئی ہے شب برات حاضری طیب کی تمنا کب ہوگ پوری اے آگا ایک آئی ایک شب برات ایک کا تاکہ کو آئی ہے شب برات ایک کا تاکہ کی تاکہ کا تاکہ کا تاکہ کی تاکہ کا تاکہ کی تاکہ

باکمال خوش الی من شاخوان رسول علی الی حقور شید احمد رحمہ الله مال موسکے خورشید احمد حر کے مہمان رسول دوست بھی اجتمع تھے اور اجھے شاخوان رسول خوش اداو خوش میان وخوش نعیب خوش اداو خوش میان وخوش نو ا وخوش نعیب شخے دو بے خیک اک کی تراز گلستان رسول جب خیک اک کی تراز گلستان رسول جب خیر آئی کہ وہ اللہ کو بیارا ہوا خرت عمر خر مم موسے سارے حیان رسول ور یقین آخرت میں سرخرد موں کے عرب خرج خم موسے سارے حیان رسول

(ساجر اده فان اخرى يم فتشدى)

فرشعر ع ديدرة باذاستادشعروش د جنمايرم فروغ ادب صرت سيد صاص على حسنى

لين مداهول كول ش ب يدفرمان مول

(صاجز ادہ خان اخر المر يُح مَن خشندى) جمكا تا رہا جس سے سدا الوان اوب روشن كا وبى جنار تے ضامن حسى تما ترقى كى طرف تافلة شعر عربيم بالدب قافلہ سالار تے ضامن حسى

آداب بظامت

سرهایهٔ ابلسنت می داند شمع رسالت امیرافشکرشاه خوانان رسول آلینی جمیر شن درگاه عالیه تخی سیونام بدالوماب شاه جیلانی نرست حید رآباد محکمت ال حضرت الحاج محسن المسحی قادری فریدی جیلانی

(صاحبزاده فان اخرّ يَدَّيَم نَعْشِيدي)

ل من قسمت سے جس کو قرب گاش الی مرال اس کے ہوئے ہیں معرب گلش الی اس کے ہوئے ہیں معرب گلش الی سے جی ان کا دیوانہ زمانہ سے سرا الن داسلول سے شہرت کلش الی حاضر خدمت ہوا ہے ہے ترجم ہے لوا بھی اس کوجی حاصل ہے بے شک نبست کھشن الی

#### **企业企业**

نور جہم رشاہ جیلاں یا کی عبدالوہاب اک نظر سوئے غریبالیا کی عبدالوہاب صرت کلشن الی بھی جی کتنے خوش نصیب جی تمیادے در کے دربال یا کی عبدالوہاب زمانہ اپنے معماعب بھی جاتا ہے عربیم بنے جادا کوئی خم محماد مشکل ہے (صاجزادہ خان اخر عربیم تعشیدی)

غزل

ایوں ہے ہی وہ سچا نہیں ہے کوئی شکانت ہی کی نہیں ہے اسے خبر کیا ہو زعری کی ارش آگر چہاب تک جی نہیں ہے اسے خبر کیا ہو زعری کی وہ جانے کیا لطف کیف وستی کہی تہاری نظر ہے جس نے شراب اللہ کی ٹیس ہے لگاو عالم میں چاہے کہ اومری نگاہوں میں وَرحقیقت فیل ہے وہ مافر جیب کتے مافت وی آدی آدی آدی نہیں ہے جی وہ مافر جیب کتے مافت وی گی خوش نیس ہے الم کا کوئی الم نہیں ہے خوش کی کوئی خوش نہیں ہے میں چر ہے سورج کو چ ہی خوش کی کوئی خوش نہیں ہے میں چر ہے امادی الم کا کوئی الم نہیں ہے خوش کی کوئی خوش نہیں ہے میں چر ہے ہی جر سے دی تبیں ہے جو جہے پرستش کی جب امادت میر نے بیر ہے دی نہیں ہے جمع پرستش کی جب امادت میر نے بیر ہے دی نہیں ہے جمع پرستش کی جب امادت میر نے بیر ہے دی نہیں ہے بی کر جس میں دکا بیتی جی جو بی کر جس میں دکا بیتی جی جو بیتی جی کر جس میں دکا بیتی جی جو بیتی کی جس میں دکا بیتی جی جو بیتی کی جس میں دکا بیتی جی دوہ بات دل کی ترتیم میں نے کہی کر سے کی نہیں ہے دوہ بات دل کی ترتیم میں نے کہی کر سے کی نہیں ہے دوہ بات دل کی ترتیم میں نے کہی کر سے کی نہیں ہے دوہ بات دل کی ترتیم میں نے کہی کر سے کی نہیں ہے دوہ بات دل کی ترتیم میں نے کہی کر سے کی نہیں ہے دوہ بات دل کی ترتیم میں نے کہی کر سے کی نہیں ہے دوہ بات دل کی ترتیم میں نے کہی کر سے کی نہیں ہے دوہ بات دل کی ترتیم میں نے کہی کر سے کی نہیں ہے دوہ بات دل کی ترتیم میں نے کہی کر سے کی نہیں ہے دوہ بات دل کی ترتیم میں نے کہی کر سے کی نہیں ہے دوہ بات دل کی ترتیم میں نے کہی کر سے کی نہیں ہے دوہ بات دل کی ترتیم میں نے کہی کر سے کی نہیں ہے دوہ بات دل کی ترتیم میں نے کہی کر سے کی نہیں ہے دوہ بات دل کی ترتیم میں نے کہی کر سے کی نہیں ہے دوہ بات دل کی ترتیم میں نے کہی کر سے کی نہیں ہے دور بی کر سے کی نہیں ہے دوہ بی کر سے کر سے کی نہیں ہے دوہ بی کر سے کی نہیں ہے کی نہیں ہے کر سے کی نہیں ہے کر سے کر سے کی نہیں ہے کی کر سے کر سے کی نہیں ہے کہیں ہے کر سے کر سے کر سے کی نہیں ہے کی نہیں ہے کر سے کر سے

(صاحبز اده خان اخر عربيم فتشبندي)

\_\_ آداپ *ب*ظامت

میکی میکی عفر بدال یا دسیم میکی میں معرض پہ اولئے والے عقل سلیم بھی ہیں برس نعت نی سے لے کر برس نطابت کک خان بھی ہیں بیاختر بھی ہیں اور عربی ہیں ہیں

(خَلْشِ مِثْلُغرِ)

نام اِن کا بہ فعنل دب کریم ہر جگہ یہ بی محرّم ہوگا خان اخر عربی یہ ہر دم شاہ لولاک کا کرم ہوگا (خلش مظلم)

حمق عِن کے کلیم میں بے فک مدتی دل میں عیم ہیں بے فک عالم و فاضل و خلیب و اورب خان افتر ندتیم ہیں ہے فک عالم و فاضل و خلیب و اورب خان افتر ندتیم ہیں ہے فک

یہ نعت محولی کا ہے سلسلہ بہت ہی قدیم شریک جرم ہے ہی جی تو خود بھی رب کریم سوائے عصرت رحتان نے کی اللقت سمالی کوڑ'' ہے ان گلوں کی تمریم

(طلمنيرمان جعفري)

خدا محفوظ رکھے خان اخر حقیقت ہے جو میں ہملا رہا ہوں پڑھی "میلادِ حسان" میں نے نیر سرورد احشق و مستی پارہا ہوں (طلاحہ نیر مہاس جعفری)

لیس الی تکمیں حضرت آپ نے واقعی کردی کرامت آپ نے "
"ماتی کور" ہے لافائی کتاب ہم کو بجش ہے یہ دولت آپ نے

ہو عربیم کمتریں پر بھی نگاہ الفات ہے نی کا یہ تا خوال یا گئی مبدالوہاب

مفلق ومريان ـ مدارع: كرخيرالانام عظيفة محت مجيوب لا معرت الحاج سيد قمر الرقاب شاه غلام مصطفة قرالا مان شاه

(صاجزاده فان اخرَ يَهِ مِنْ مُعَبِّندي)

مصف آواب تلامت الحال اختر ندیم انتهادی کالمار افغیان در فقی منتهادی کی المار افغیان در فقی مصف المار الفیان در فقی المار مقی المار المقیدت دعیت اور معبار آفتد در می المار می

طف موال ناعبدالنكور مبت شاہ نعت آركنا كر تھے حسين چيشتى كان ى محبت كے ساخر سے سرشارتم ہو محرحسين خوشا! عاقب شاہ ابرار تم ہو محرحسين تمہارى محبت كا ہے معترف بيتہارا تدتيم بين يقيماً بات كا ہے معترف بيتہارا تدتيم بين بين منسار تم ہو محرحسين بين منسار تم ہو محرحسين

(ص جزاده خان اخرَ عربم نتشندی)

مسكراكرد كجيثا

اپنے جاروں ست دنیا کو منور و کھنا
اے عربی خوش کام اپنا مقدر و کھنا
خوش وں کے شہر میں تم کو میسر آجھیا
نور خوش یو اور ہوا کا اک سمندر و کھنا
اک سلسل روشی چرے یہ بھیے گی عربی
آکنے میں تم مجی چرو سچا کر و کھنا
زعر کی تجر کا تہارا یہ افاقہ ہے تعربی
سبز گنید کو مسلسل مشکرا کر د کھنا

(الإى ثابر)

انا کانی ہے دیمگ کے لئے رکم لیں آتا جو توکری کے لئے میں جت مجی لا جواب محر میں تو نویا تری کلی کے لئے آپ پر آقا کرم کردیں نمیم ان سے کی کی محبت آپ نے کہ رہا ہے ذیر صاف کو کی ادا حمال کی سقت آپ نے (نیراحم جودی) کی مبکاریں خان اخر عمیم کل کی مبکاریں خان اخر عمیم کل کی مبکاریں خان اخر عمیم بارہا ہم نے پرکھا ہے شہم آئیں بیار بی بیار میں خان اخر عمیم بارہا ہم نے پرکھا ہے شہم آئیں بیار بی بیار میں خان اخر عمیم بارہا ہم نے پرکھا ہے شہم آئیں

استاذالعلی افتح الدین معرف عدر من احمد میال برکائی بنده فاص خدا بین معرف احمد میان نعت کوئے مصطف بین معرف احمد میان قادری بھی اور رضوی بھی بین برکائی بھی بین اے عربی اس سے سواجی معرف احمد میان

سکریزی جزل اجمن شیدائیان رسول جناب محبوب عالم شیروائی
اجمن شیدائیاں کے آپ بیں سکریٹری
کرتے ہیں ہے بارہ روزہ محفلوں کا اجتمام
مید دُعا محبوب عالم کے لیے کیجے ترجیم
ذکر محبوب رو عالم کا کریں وتیا جس عام

(ساجزاده خان اخر عربم ننشندی)

أحاب بظلمت

(صاجزاده فان اختر عرضم معشندی)

\*\*\*

أستادك لخندمتيت

مرے استاد کی جو پہ نہاہت مہرائی ہے استاد کی بدوات ہی جھے ہر کامرائی ہے لئے ایس جھے کوخان اخر ندیم استاد کیا اجھے کہ میری ذات ان کے فن کی ک ادنی نشائی ہے جھے استاد تخشا ایسا مرکار دو عالم نے لیوں پر جس کے ہر اور تی کی مدح خوانی ہے نظامت پر مرے استاد کی میب داد دیتے ہیں مادے واسطے یہ داد د جہ شاد مائی ہے میں ایٹ میں استاد دالا کا جیس میں کون طائی ہے

131

سیرت مصطفی تو اے عابد کی دادت ہے ذعری کے نئے (عابد شیرازی عطاری)

2-اريل 1998 مردد جعرات بموقع تاح يوشى رمطاك كالتعاب

نظامت میں ثانے مصفی کی ہویائے کرم اُن کی عطا کا ندیم نیک خو کی تاج پڑی ہے صدقہ سیف محبوب خدا کا آقا کا کرم ہے مرے آقا کی مطاہ دانان طلب گوہر مقصد ہے ہجرا ہے ہے سیف یہ پہیان غلاق نی کی یہ تاج ہے اعزاز اُسی ور ہے طاہے ہے سیف یہ پہیان غلاق نی کی یہ تاج ہے اعزاز اُسی ور ہے طاہے (سیف فر ہج چین)

تم نا خوان می ہو کر ہوئے عالی مقام اب تمہارا تن ہے جنعہ عمل مکال کوڑ کا جام ہے دُعا رب ہے ہی تم کو بلائس اے عربیم آرزو کی آرزو یہ ہے کہ ہو تم کو دوام (عیم قرآرزو)

معروف ومتازنقيب كافل نعت عظ

جناب محمد مليم ميمن اوريار محمد وفق يشخ جناب محمد مليم

سلیم میمن کا ہے نظامت کے فن میں بے شک مقام افسل رفتی ہے اس احرام افسل رفتی ہے ہے اور اس احرام افسل رفتی ہے کا جیں احرام افسل رفتی ہے کے دل میں بس گئی ہے اور تی ایس اس کی ہے اور خرالانام افسل لیول ہے اینے سیائے رکھتے ہو ذکر خیرالانام افسل (صاحرادہ خان اختر تی تی فشیندی)

جائم نے شق کیا ہے کلجہ ڈوبا سورج بھی پھر لوٹ آیا کیا ہے ان اشاروں کی عظمت از زیس تا فلک میماری ہے به محن وقریده دشا محی جای و سعدی آل مها مجی سب کی نعتوں سے میں نی کی ابوئے خوش دل کوم کار ہی ہے عرش پر بھی تو دھویں کی ہیں آساں پر بھی خوشیاں ر پی ہیں جشن معراج کی مجی بثارت جش میلا و سے آربی ہے از ابراہیم تا اتن مریم 'سب نے دی ہے گوائی یہ تیم آمد مصطفے ہے مسلم یہ خوش کی گھڑی آرہی ہے کیا کروں کیے چینجوں مدینے اکاش بن جا کیں ایسے قرینے یاد هم محمد کی ہر دم قلب کو جمرے تزیاری ہے اے تدمیم ان کی مرحت کئے جائوش تعیبی کے موتی لئے جا تھے یہ ان کی ٹکاو کرم ہے میسی تھے یہ ہیشہ دای ہے (صاحبزاده خان اخرّ عربیم نشوندی)

میں ان کی شان کے لائق کہاں پھے نار کر پایا یہ ول ان پر فدا ہے ان پہ قرباں زندگانی ہے یہ ان کا بی کرم ہے ان کی بی تعلیم کا تمرہ مرے اشعار میں دیکھو محمد کیسی روائی ہے ۔ مرے اشعار میں دیکھو محمد کیسی روائی ہے ۔

#### آمرمصطفيظ

آند معطظ برید دنیا کیس کیس خوش یا رس ہے سارے عالم میں ہے دھوم ان کی ہر طرف روشنی جماری ہے حعرت آمنہ کو مبارک ' رب کا بیارا ملا ہے آئیں کو اب محلے کی حلیمہ کی تسست کیے جوش ہو کے اِترا رہی ہے كول نه موسب محرول ش جراعال أدمعينظ ب تمايال رحت حل تعالی جہاں میں این جلوے جو و کملاری ہے اب اعرمے سے کول واسلہ واہر طرف جب نی کی میا ہو روشی بھی تو خود جگھا کرا گیت میلاد کے گاری ہے ما تک لوایا مکنا ہو جوتم کو جو بھی لیناہے مولا سے لے لو آج موقع ہے اے تاجدارہ عرش سے بد مدا آری ہے مب كم جملت ول كمل محة بين لا من جاك سبهل محة بي الی اُمِری ہے مج مسرت شام عُم دویتی جاری ہے معطفظ آمکے ہیں زہیں پر' بن کے ہم پُرخطاؤں کے رہ پر رّبِ رحمان کی شان رحمت کیارہ منظر بید دکھلا وی ہے

#### متناز وشعله بيال خطيبان ملت \_

علامه صاحبزاده الوالخير محمد زبير تنشيدي علامه مفتی احمد ميال بركانی علامه مساق احمد ميال الدين بركانی علامه موقی رضا محمد مبای علامه غلام احمد بیگ قامی مفتی جمال الدين لغدادی القادری علامه قاری محمد سليمان احوان علامه مولانا محمد بن يا بين مفتی مبد الرشيد نوری علامه مولانا دلدار حسین الرشيد نوری علامه مولانا دلدار حسین مختشدی علامه مران محمد شريف تنشيندی علامه مران ما مرادی مطاری -

## حيدرآباد كغما كنده نقيبان محفل:

مزت مآب جناب میف می شیخ بناب طفر قرایش بناب مین می میلیم مین بناب طفر قرایش بناب می سلیم مین بناب قبله امید علی بهام بی رفتی شیخ بی شیخ شریف الدین نیز بشفیق الدین عبال می می الدین می می الدین المی می الدین المی می الدین المی می می الدین المی می می الدین المی الدین المین الم

## حيدرآ باد كے متاز ومعروف ثناخوا نان رسول ﷺ

معفرت مونی محرجیل خان صاحب نششندی نیس احد کا دری\_آغا موهر على (معدارتي الواردُ ما فيز) \_ آغا ذوالفقار على (كل ما كنتان الواردُ ) \_ ساكي منظور حسین کھو کھر ۔ نڈیم احمد فریدی (محولڈ میڈلسٹ)۔ حبد الصمد قادری نعت کو مجھ جاوبد خان فريدى نعت مح راستاد عبد القادر طك رآعا المبرعل (كل الكتان الدارة) في عديم اقبال (كل ياكتان الدارة) عيد فاروق رحماني عمد المعلم راجیوت لعمان تومر (کل یا کتان ایوارد) منیف مع شرازی سیدسن علی عابدي (ايوارد يد) \_استاد غلام حسين \_ محد اخر فيخ \_ محد اخر في حد ع مع في عجد اياز فاروتي فيم وارقي فيم الجم (كل باكتان الوارة) يعبد الرشيد رباني آمف ا قبال وكيل حسين نظامي \_ آمف جيس عجروقارچشتي \_ حافظ عجم الدين \_حيدالرؤف ميمن مبد الرؤف في مجر الورسليم مسيد فيدعلى يجيم اختر قريتي مشابدهلي روش مسيد ذى شان الله عبد اللليف بالحى - اولى متين منيس عالم قريدى وحدمتنتم وحسنين سعيد فيم عمران لودي في همران ميمن سيروردي في عامر سيروردي استاد ثنا والله مهروردی۔اشفاق الدین قریش۔راشد شخ۔مطا ء الزمن فریدی قامی۔ارشد سبروردى محم شابد تنشيندى محم جباللير نتشيندى عجم شابد متبول فلام مصطل قادري معين قادري فيهم نظام فياءارجن شاه قاري عمير استادمحدا قبال الجم مجمه صدیق ندار داله محمد ایاس غوری - الی ج محمد اسامیل را تا محمد عاسر هیخ به سید سلمان قادري مولانا محمرا قبال دارقي محمدز وبيب اشرقي مولانا سيدمقبول محمرنوري مرزا فرخ بيك سيدند يم حسين سيدصا برحسين \_

شجره

(صاحبز اده خان اخر عربيم معتبندي)

حق نے مجھی ہے زبال حمد و ثنا کے واسلے اب کلے بیں محت شاہ بدا کے واسلے یا الجی رخم فرہا مصطفا کے واسطے یا رسول اللہ کرم کیجے خدا کے واسطے یا اللی جمع کو سجائی کی دوات کر نصیب معرت بوبكر يا صدق وصفا كے واسطے یا اہمی مجھ کو رکھ انسانے ہے تائم سدا حطرت رفاروق یا عدل وصلا کے واسطے یا الی جھ کو ہر بے فیرتی سے دور رکھ حعرت عان شاہ یا حیا کے واسطے یا الی جمد کو مصیاں نے متایا ہے بہت رخم فرمادے علی مرتعنا کے واسطے یا الی محمد کو آفات دمصائب ہے بیما کر بلائیں زو شہید کر بلا کے واسطے یا خدا محض البی کو غمول سے دور رکھ غوث أعظم تاج وار اولياء كے واسطے بو سدا پُرسوز قلب حضرت صوفی علیم قاسمید سلطے کے اولیاء کے واسطے یا الی جھ کو رکمنا قادری تازیرگی قدر عجبر القادر قدر ب تما کے واسطے

یا الی بھے کو ولیوں کی عقیدت کر عطا خواجہ سنجر عطائے مصطفا کے واسطے حضرت خواجہ بہاء الدین شاہِ فتش بند فیض رکھنا اُن کا ہر دم جھ گھا کے واسطے میں وہ سائل ہوں کہ جس کو ہانگنا آتا نہیں ہو نظر آئ ہوں کہ جس کو ہانگنا آتا نہیں ہو نظر آئ ہوں جہاعت میں علی کی اے خدا قبر سے آٹھوں جماعت میں علی کی اے خدا حضرت شاہ جا منا کے واسطے معزت متندا کے واسطے ہو تدیم نے توا پر حضرت بیگر کا لطف

## وربار مصطف تنطق سے

جو کچو کمی نے ماٹا دربار معطفے سے بی خورد پایا دربار معطفے سے جو کو طلا سے مردہ دربار معطفے سے آیا مرا بادہ معطفے سے آیا دربار معطفے سے کی اور اس سے بود کر ہوگا سٹر کہیں کا ہو کر ہے جو کو آنا دربار معطفے سے آیا ہوں جی جرت کو آنا دربار معطفے سے آیا ہوں جی جرت کو آنا دربار معطفے سے چکا مرا تعمیا دربار معطفے سے چکا مرا تعمیا دربار معطفے سے بیت جی مرا کے اندا کے بیت جی مال دل کا بیت دربار معطفے سے بیت جی مرا کو کا رشتہ دربار معطفے سے بیت جی مرا کا رشتہ دربار معطفے سے بیت جی مرا کا رشتہ دربار معطفے سے بیت جی مرا کو کا رشتہ دربار معطفے سے بیت جی دربار معطفے سے بیت بیت مرا کا رشتہ دربار معطفے سے بیت بیت مرا کا دربار کیا دربار معطفے سے بیت مرا کا دربار کیا دربار معطفے سے بیت بیت مرا کیا دربار کیا دربار معطفے سے بیت بیت مرا کیا دربار کیا دربار معطفے سے بیت بیت مرا کیا دربار کیا دربار معطفے سے بیت بیت مرا کیا دربار کیا دربار معطفے سے بیت بیت بیت مرا کیا دربار کیا دربار معطفے سے بیت بیت بیت مرا کیا دربار کیا دربار معطفے سے دربار کیا د

بلل جنستان رمالت عظية الولى بأكستان جناب

### الحاج محمر يوسف ميمن

طة ياك كے حتان بيں يسف مين واه کیا خوب شاه خوان میں بو سف میمن مدحت رشاہ مرید بیل گزاری ہے حیات يم خا خوانول كى بيان بين يوسف مين (صاحبزاده خان اخر ندیم نقشهندی)

مترات چرے خوش عن فوال جناب عبد الروف ميمن

عدبت مرکا یہ دیں کا بے فیغان ہے ۔ جو برحی نعت سب کو پہند آجی نعت نے تم کو بختا ہے رجہ رؤف اب یا نعت آئی ارب کو پتد آئی (صاجزاده فان اخر عرقيم نتشندي)

شامراديب تتيبه كافل فعة جناب شوكمت مصطفا في (نواب شاه) تقیب نعت شوکت مصطفالی! سدا مدح نی ش کم رہے ہو جا ں ہوتا ہے ذکر شاہ بلی جید برم کی جاں تم رہے ہو (صاحبزاده خان اخر عرفيم نعشيندي)

معروف ثافوال معييظ جناب عطاء الرحمان قاتمي تم معزد ہو مطاء الاتمان تم کو اللہ نے موت بجشی كرت يو مدت آقائ عظيم تم كو ال فنفل في عظمت بخشي (صاحبر اده خان اخر ندیم نقشیندی)

بیت الحرم میں گویا دل کھو گیا ہے میرا وابسة ہے تمنا وربار مصطفے سے روضے یہ جب پڑھا ہے میں نے وروو میم آیا جماب کویا ہربار معطقے سے اب كان موحشر كافم أب كيها خوف عصيان بخشش کا ب اشارہ وربار مصطف سے مولا على وزہرا " حسنين حيرے آقا لے لو عربیم! صدقہ تدیار معطف سے

مختل ماديب كبخ رنعتيه اسكافر مصنف مقيدمائل مدير جردنعت كراجي جناب

### شبزاداحمه

فروغ نعت میں یوں تو بہت سے نام میں لین نهایت علی ایم ضاحت بیل شنراد احم کی جہاں نعت کا ہر فرد ہد اقراد کرتا ہے مبارک کوششیں دن رات میں شنراد احم کی

میدان نعت کے جی یہ شفراد شہ سوار یں نعت کے زموز مجی ان یہ آشکار مجما عريم نے انھيں نعتوں كا اك چن الملع بي جس من محول مقيدت ك يديهار (صاحِزاده خان اخرَ يَرْتُمُ مُعْتَبِندي)

بله پیانت کو خالقاند جموم مکام ورفعا لک ذکرک جناب سید و والفقار مسین شاه نفو می کری

نعت کوئی ہے بلاشہ مباوت نقوی ہم کو اللہ نے بخش ہے سعادت نقوی " م کو اللہ نے بخش ہے سعادت نقوی " دوفعا لک ذکرک" کا کلام مسعود ہے تہادے لیے اللہ کی رحمت نقوی (صاحرادوفان اخر ترجم نشجندی)

ماجزادہ معرف خواج بر فرزدول جناب خواج برجیب نفسیندی خواجہ کریم ان کو گلے سے فکائیں سے درگاہ زر ول ہے جو سرکو جمکائیں سے ممثل ش ہی کی ہے جات کی ہے جب میں بھر خواجہ زر ولی وہاں تکریف فائیں سے

(صاجزاده فان اخر ترتم نعثبندی)

استاد ناخوان رمول بناب مونی محمد میل حال ساحب نعت کی دنیا عمل میں مقبول جیں صوتی جمیل جیسے اس کل زار کا اک چول جیں صوفی جمیل

(صاجزاده خان اخر تدیم نقشهندی)

معردف تاخوان رسول جناب عبد القاور ملک ادرا ولیس متنین عبد القادر کا ہے مقام بلند دیکے اللہ این کا نام بلند (صاحبز ادوخان اختر ندیم نتشیندی) مؤدب خوش می شاخوس جناب داشد سی خوش می موت در به معلقا می نعت خوانی کا صله سی بیم معلقا می نعت خوانی کا صله صدقی شیر و شیر فالمد زیرا او علی بیارے آتا ہے تارے شی داشد کو طا

(صاحبزاده خان اخرّ ع تيم نششندي)

مروف نعت آر گنائز رما حزاد محوفی خلیل اکر حمال تادری تا تی رحانی

یه ول وجال آپ په قربال چی صوفی خلیل

مرے ول جی آپ بی مہال چی صوفی خلیل

انعقاد ذکر آتا ہے ہے اللت آپ کو

آپ ی آتا کے یہ اصال چی صوفی خلیل

(صاجر اوه خان اخر عريم نشوندي)

ثناخوان مسلف ملک و و و گرافرد بی کافل انورسلیم ذاکر خیرال نام انور سلیم نیک خو نیک نام انور سلیم مکشن ذکر نبی کا پیول ہے۔ ادر ہے کلشن کا غلام انور سلیم

(صاجزاده خان اخر عديم فتليندي)

ور طریقت صرت صوفی غوت محد مطای کمیل بیش این است صوفی غوت محد مطای کمیل بی جوا دیتے ہیں ایک دوا دیتے ہیں بیاد کی بابا فکور ایک دوا دیتے ہیں جاکشیں خوث تھے ہیں مرے بابا کے میں صب کوجو دوں محبت کا پڑھا دیتے ہیں مس کوجو دوں محبت کا پڑھا دیتے ہیں م

ي كال كبرى مياسع بالرسيك فارك اسكول وكالج بين 10 مطيف آباد جناب يروفيسر

سعیدالدین قریشی
آپ نے اسکول کا معیار ادبیا کردیا
مرسعید الدین جی اک تعمید پردر دگار
کر رہا ہے افتراف ان کی مسامی کا عربی
دائی ان کی مسامی آری جی رد بہ کار
دائی ان کی مسامی آری جی رد بہ کار

سینراستاد نقب می الدن جناب سیف محمد میشیخ اجبری استاد کا ش کرتا اول حد درجه احترام این شد اور سیف محمد این کا نام این شیخ اور سیف محمد بی این کا نام عاشق محک کمینیم میسی اور نعب خوال مجمی این می این می اور نعب خوال مجمی این می میس اور نعب خوال مجمی این می میس این می میس این می میس کا مام میانا ہے این کا کام میانا ہے این کا کام

(صاحبز ادوخان احرّ عديم معتهندي) معردف نعطة آرگنا مُزرُ سيكريغري جزل المجمن فيضان سايه الجبن جناب

> اکرم قریشی اختر ولقادری ایند اکرم قریش میں وہ خوش نصیب ان کے دنیا دویں میں سنور جائیں مے ذکر کرتے ہوئے اپنے محبیب کا جانب ر همر خبر البشر جائیں مے

(صاجزاده خان اخرَ عرتم نشيندي)

الم فریدی النفس عالم فریدی دو بیا ہے نفیس زار نے دو بیا ہے نفیس زار نے میں گا ہے آپ کائی کا مقدر آپ ہیں میں میں میں کم ترین جائے کہاں ور چوڑ کر سے بی اس کو نیما کی بندہ پرور آپ ہیں آپ بی

(صاجر اده خان اخر عربم نعشیندی)

معروف معالی جناب ذاکر حافظ کھر شمعیب (یرب کینک)
خوش علق مجی جو اور طنسار مجی جو تم
خلقت کو تم سے قیق طا ڈاکٹر شعیب
تم یہ جیشہ شاہ عربند کا جو کرم
سے عربی کی مجی دعا ڈاکٹر شعیب
سے عربی کی مجی دعا ڈاکٹر شعیب
سے عربی کی مجمی دعا ڈاکٹر شعیب

جن تواب الدين قادري المرين قادري نواب دين كو مطا العاب الدين قادري كا مدة المواب دين كو مطا العاب المدين كل كا در سه في كا مدة المواب المواب

تاخوان رسول ﷺ بناب محمد حقیق شیر از ی کیا کرے گا یہ بیان عظمت و شان رسول جب کہ دب و جہاں ہے خود شاخوان رسول آرڈو ہوری او یارب اس حقیق خت کی ہاتھ آجائے ہوؤ حشر وابان رسول ہاتھ آجائے ہوؤ حشر وابان رسول

شامروشا خوان رسول ملک جناب عابد سی معادی شیرازی معدد ایر مسلم کرم کی ملکو مطار پر ایران کرم کی ملکو مطار پر ایران ہے ایران ہے ایک برقربان ہے ایک برقط ما برنس شام بھی ہے ایک بے مثال آپ کی مدحت مرائی اس کی بھی بھیان ہے آپ کی مدحت مرائی اس کی بھی بھیان ہے

(صاحبزاده خان اخر عربم نتشندي)

معردف خافراں جناب کر مراحد فریدی کیا خوب ہیں تا خوال بیارے تذیر اجر محفظ میں میں نمایاں بیارے تذیر اجر محفظ میں میں نمایاں بیارے تذیر اجر ذکر نما نے این کو وہ مرتبہ دیاہے ہیں سب کے دل کا فرمال بیارے تذیر اجمد میں سب کے دل کا فرمال بیارے تذیر اجمد میں اخترادہ خان اختر ترتیم فتشندی)

. آماب بظامت

(مه جزاده مّان اخرّ ندتیم نتشندی)

شاعر فوٹل نصال او یہ بہتال انام ورثنا کو جناب منطقر خوش نظرہ با جنر جناب خلق شاعر معتبر جناب خلق شعر این پر اثار موتا ہے اور بادا شعر بر جناب خلق

(صاجزاده فان اخرع تي تعثيندي)

(صاحبز اوه خان اخرّ ندیم نقشبندی)

کیا بی اعلی سعادت کے گی اِسے اُن کے روضے کی جالی کو چوم آئے گا (صاحبز اور خان اخر عربی فنشوندی)

قائدی ترکیب بامروت و منسار جناب محمد خالد قادری سی ترکیب کے علم بروار خلیہ قادری ہارے ہیں با مرذت ہیں اور شعلہ بیاں ہم کو یہ جان و دل سے بیارے ہیں (صاحبزادہ خان اخر ترتیم منشوری)

محرم جناب تحد ملیم میشنخ ایز نستریزاد قاف دیدرآباد سے مشتی بان کو حضرت فیر الانام سے
بیڑا اٹھایا نست کے کار منایم کا
آقاف دو جبال کا کرم بان پر سے اوا
جریا ہے قریہ قریہ جناب سلیم کا

(صاحبزاده مان اخر عربم نقشندی)

مدراجمن استذہ یا کتان جناب سیدا کرم علی شاہ مانب اکرم سیلی سیاتے ہیں آنتوں کی تحفیق چنتے ہیں ذوق وشوق سے تصب نبی کے بچول جمیوم اٹھتے ہیں کی تکرم کے عام پر کیاای ہیں شک کہ ہیں ہی کھرے عاشق رسول کیاای ہیں شک کہ ہیں ہی کھرے عاشق رسول (صاحبرادہ خان اختر تدیم نفشتبندی) وہ شاکر دیے مثال جس نے راقم کی تاج پڑی کا احراز حاصل کیا نتیب محفل ونعت کو

محمداحمرشخ قادري

16 إر في 2009 وعيد والكيدية على كوكن

## نعت رسول 🎏

ظلبہ بریں کو پائے 'جاتا ہوں ہی مدینے
اس دل کو دل بنائے جاتا ہوں ہی مدینے
مدحت کے گیت گائے جاتا ہوں ہی مدینے
مدحت کے گیت گائے جاتا ہوں ہی مدینے
زیرہ رہا ہوں کیے 'جی تم سے دور رہ کر
آقا کو یہ بنا نے 'جاتا ہوں ہی مدینے
ش ہوں خوں کا بارا دیں کے وہی مہارا
بین حال دل سائے جاتا ہوں ہی مدینے
گڑی ہوئی ہے حالت سوئی ہوئی ہے تسمت
گری ہوئی ہے حالت سوئی ہوئی ہے تسمت
تشریر کو جگائے جاتا ہوں ہی مدینے
جس در سے ہرسوائی ہرگز ہرگز نہ جائے خال
اس در سے برسوائی ہرگز ہرگز نہ جائے خال

شاخان شرین زبان محمد تدیم اقبال ہے گل خوش اوا ندیم اقبال واصف مصطفے عدیم اقبال تیری تعیس جی قلب و جاں کی جلا مرحبا مرحبا عدیم اقبال

(صاجرَ اده فان اخرَ عَرِيمُ نَصْهِدي)

معروف شاعروشا خوان رسول منطقة بناب عبد الصمد قاورى فنت خوال كون آیا ہے و کیمو ورا مجموم الحق ہے ہے ہیں ہم رضت ہی اس و مرشت ہی اس و مرشد ہی اس و مرشد ہی اس و مرشد ہی اس و مانا تھیں اس و مانا تھیں و میرا مسمد میں و مانا تھیں و میرا مسمد میں و میرا میں و میرا مسمد میں و میرا و میں و میرا میں و میرا و

(صاجزاده قان اخرى تم نتشندي)

معردف شام نعت د د ان معطظ برناب محمد جاو مدفر بدکی نعت خوانی کی ہے دولت ہے بہا تم کو جادیہ مولائے کی ہے عطا اپنے کانوں سے اور اٹی آواز ہے نعت سنتے ساتے رہو تم سدا (صاحبزاووخان اختر ترتیم نششوندی) دنیا ش حسین کوئی تھیں آپ کے جیما فیرات نظر دیجئے یا رحمید ہائم جودل میں مرے،آپ کی جاہت کو دیگادے دو جام مطا کیجئے یا رحمید ہائم طوفان کی موجوں میں ہے امت کا سفینہ سامل پہ لگا دیجئے یا رحمید بیائم ہے آپ کے کوئے کا گوا گلتن الی اس پر بھی نظر کیجئے یا رحمید عالم اللہ کا گائی اللہ کا گلتن الی اللہ کا گائی اللہ کا گلتن الی اللہ کی نظر کیجئے یا رحمید عالم (الحاج کا کوئے یا رحمید عالم (الحاج کا کہا جائم کی اللہ کا کہا جائم (الحاج کا کہا جائم کی اللہ کا کہا جائم (الحاج کا کہا جائم کی اللہ کا کہا جائم کی دو ج

ورطریت دسرے صوفی عبد استہم خان نتہندی ہای
مہریاں کیا ہوا تم پر خدا صوفی سلیم
تم ہوئے ہو اک ولی کے دل زیاصوفی سلیم
خدمت مرشد کا بیہ اعجاز دیکھو تو سمی
ایک عالم تم یہ ہوتا ہے فدا صوفی سلیم
ایک عالم تم یہ ہوتا ہے فدا صوفی سلیم
(صاحبزادوخان اخر ندیم فشہندی)

مصنف كشر جموعه إئ نعت ثناخوان رسول وثنا كوجناب

عرمیز الدین خاکی النادری کی عربی خاکی جنمیں کہتا ہے جہاں سارا کی جیں عاشق محب رب ارض و سام خدا نے ان کو بڑا مرتبہ دیا ہے تدیم کہ یہ بے جی ایام ارشل کے مدح سرا کہ یہ بے جی ایام ارشل کے مدح سرا یُر کیف ہے وہ منظرے جس کا تعنی ول پر انگھوں جی وہ سائے جاتا ہوں جی مدینے موروں کی آرزو کیا جند کی کیا تمنی اقا کے آستائے جاتا ہوں جی مدینے کی کیا تمنی کے بیخ اس کی استائے جاتا ہوں جی مدینے کی کیا تمنی مدینے کو کہ جو محترم ہے آن کا تی ہے کرم ہے وہ میں مدینے وہ میر بال جی آن گا ہوں جی مدینے وہ میر بال جی آن آتا ہوں جی مدینے باوا ہوں جی مدینے باوا ہوں جی مدینے باور می کی مدینے باکر اور عمر کا احتمان اور می کا مدینے مدینے مدینے بائے جاتا ہوں جی مدینے اس جی مدینے باتا ہوں جی مدینے باتا ہوں جی مدینے باتا ہوں جی مدینے اس جی کی کیا گی توری وہ روف

(صاجزاده فان اخر يريم تشبندي)

#### نعت رسول تك

ب کم پہ کرم کیجے یا رحمت عالم گری کو بنا دیجے یا رحمی عالم حنین کا اور حیار و زبرا کا تعدق جمول مری مجر دیجے یا رحمت عالم اک باد تو عمل حاضر دربار ہوا تھا مجر مجھ کو بلا لیجے یا رحمت عالم ناظمین بیم جی معبول بیں تی شریف برگری ان کے لیوں پر ہے ٹائے مصطفا (صاحبزادہ خان اختر ترتیم نعشوندی)

باکمال دیر درگ اور خوش می خواب رسوس می خوابی جناب منظور حسین کھو کھر مرکای دو عالم کے دو ضے کی زیارت کی مرکار کی اللت شمل و دھیے ہوئے ہر دم ہیں مرکار کی اللت شمل و دھیے ہوئے ہر دم ہیں ہر فعت کو آقا کی پڑھتے ہیں ہداد کر مست مشور حسین ایسے وزیا ہیں بہت کم ہیں مشور حسین ایسے وزیا ہیں بہت کم ہیں مساجرا دو فان اختر عربی مشتبدی)

12.2

وش الحان منتی چرو منافران برای آغا کو جرعلی مدارتی ایرارزیافتہ نعت خوانی پی شیدا ہے کو جرعلی نعت خوانی پی شیدا ہے کو جرعلی بیارا لیجہ ہے اور بیاری آواز ہے اس لئے سب کو بیارا ہے کو جرعلی بیارا لیجہ ہے اور بیاری آواز ہے (صاحبزاووفان اخری تی نشتیندی)

متازیر تسیم مدر خوال دیول عظی بناب تحد حاکم قریش المدنی المدنی متازیر تسیم مدر خوال دیول عظی بناب تحد حاکم قریش المان ہے محرّم حاکم قریش کا میں ادمان ہے ملد ان کو جو جائے زیادت آپ کی ہم بھی ہیں دل سے شریک ان کی دعائے فیر عل دیکھیے کی ان ہے ہو چھم مناب آپ کی دیکھیے کی ان ہے ہو چھم مناب آپ کی

(صاجزاده خان اخر يرتم فتثوندي)

سنرزين عافوال فيس احمد قادري

> شعلانوا، خوش ادائتیب محصر جمار محمد مشمر لیف الد مین نیر نعت خوال وسیت میں ہر منزل به اِن کو بیا دُعا حشر کے دان بھی دے اِن میر دوائے مصطفا

نتشندی مصاحبزادہ محمد حسین چشی نیز ۱۰۰ سے را کدا حباب نے فروا فروا گل پوشی کی صلودہ وسلام ود عا پر تقریب کا انققام ہوا۔ آخر علی خان اختر ندیم نے جناب عبد الوحید خوری اوران کے تمام سی فی دوستوں کا شکر بیادا کیا۔ بچ بیہے کہ بیتقریب ایک نمائحہ و تقریب تھی جوان شاءاللہ مجیشہ یا ور ہے گی۔

الحاج كلشن البي چشتى جيا. ني فريدي

مرس مبارک تی عبدالوہاب شاہ جیدنی اپریں ۹ موہ اے موقع پر مقامی نعت خوانوں کی محفل جی جیس کے آرگیا تزرجمہ قبال میمن تھے۔رہبر ملت ، پروان جمع درمالت معرب الحاج کھٹن الی چشتی دامت برکاجیم الدید نے عمرے سے والهی پر تیاک فیر مقدم کیا۔ بے بناہ عزت افزائی کی۔تمام شرکائے محفل نے گل پوٹی کی۔ آباک فیر مقدم کیا۔ بے بناہ عزت افزائی کی۔تمام شرکائے محفل نے گل پوٹی کی۔اس کی۔آبلہ ماتی صاحب نے در بار عالیہ کی حبین وجمیل جا در اور اجرک پوٹی کی۔اس تقریب کی ضعوصت میتی کہ اس جی خان افتر ندیم سے بوٹ جوٹی وجذ ہے کے ساتھ متواتر ۲۰ منٹ تک مدیب سے متعلق نونیہ اشعار سے محف عاشقان دسول سے خوب مرا بااور دادر حسین پوٹی کی۔

استقبالية كفل مشاعره

ا جولائی بروز جعد برم فروغ ادب حیورآ بودنے بخاری بائی اسکول کی چرچوک کے لاان بھی خان اختر ندیم تعشیندی کی واپسی زیارت تر بین شریفین کے موقع پرایک استقبالیہ غیر طرق مخفل مٹ عرہ کا جتر م کیا جس بھی شعراء نے کثیر تعداو بیں شرکت کی اور گل پوشی کی۔ اجرک وتن مف چیش کئے۔ موصوف سے مدینے سے متعلق نعقیہ اشعار سے گئے۔ نیز چندم عززشعراء نے منظوم خراج عقیدت بھی چیش کیا۔

ہو مقدر کے سکندہ واواخان اخر عریم دیکھ آئے ایجھے منظر واواخان اخر عریم

### استقباليهاوراعزازى تقريبات

۱۶ اپریل بروز جعرات ۲۰۰۹ء صاحبز اوہ قان اخر عدیم نقشیندی کے واپسی زیارت حرجمان شریفین کی خوشی میں ان کے احباب ماراد تمندوں بشعراء کرام اور معزز شحصیات نے اعز ازیہ تقریبات کا اہتمام کیا۔

بيرطر يقت حضرت صوفى عبدالسكيم خان تقشبندى

حضرت قبلہ صوفی عبد السلم خان تعقیندی نے بھیشے کی طرح اپنی محبق کا اظہار کرتے ہوئے خان اختر عدیم کے اعزاز علی ایک استقبالیہ محفل نعت کا اجتمام کیا۔ شرکائے محفل نے خان اختر عدیم کو بارا در تھا تف چیش کے مسلوا قوسلام اور دعا کے بعد لنظر چیش کیا۔

#### متنازمحاني محافى عبدالوحيدغوري

آلی داونڈ رپورٹر دونر تامد جراوت، چیف د پورٹر دونر تامد کامیاب حیورآباد جناب عبدالوحید فوری نے اس خوشی کے موقعہ پرائی فوبھورت اور دکھی تھلی نعت دگل پوشی کا اہتمام کیا جس بھی حیورآباد کی محافی براوری نے جر پورٹر کمت کی حان اختر تدمی کو دیے گئے اس استقبالے بھی چیف ایڈیٹر کامیاب معیدا حمد نے حسین وجیل سندھ فولی بھی جاوید فریدی درباری نعت خوان کی عبد الوہاب شاہ جیلائی نے تن کف مصدارتی ایوارڈیافت شاخواں آغا کو ہر علی نے معمدارتی اور کی نیٹر بنیادی حقق کمیش عبدالیجار رحمائی نے اجرک دونر نامہ صوبہ سندھ کے دقار جمد ہے نے اجرک اور صدر میدالیجار رحمائی نے اجرک دونر نامہ صوبہ سندھ کے دقار جمد ہے نے اجرک اور صدر میدالیت ویلفیٹر ایسوی ایش عبدالجمید شاہ نے اجرک ، معردف محافی ہارون آرو کی میدالیت ویلفیٹر ایسوی ایش عبدالجمید شاہ نے اجرک ، معردف محافی ہارون آرو کی میدالیت کے ایم جوات کے دور میدالیت بھید بیورو ریاست علی ناغز ، اخبار جہاں کے یاسین جمید بینی تحریک کے ایم چین

مرا پادشدد جايت ترجمان المستت شهروار فصاحت و بلاغت صاحر اده نطيب پاكتان

صرت الدكوكب توراني اوكاروي

(صاجزاده خان اخز نديم تعثبندي)

دُومِ روَانَ المِسْنَة صَرَت كُوكِ نورانَى مرتا پاعظمت بن صفحت عضرت كوكب نورانى واقتف كل اسراوشريعت صفرت كوكب نورانى يعنى وادمك راوطريقت صفرت كوكب نورانى آب خطيب باكتان كافت جگراور پاروول قاب ندتيم عمل فقش فيت مصرت كوكب نورانى سيئرترين باصلاحيت نوش الحان شاخوان رسول ملى الله عليدة لا يسلم

عبداللطيف باشى

بہت تی ہادقار وخوش بیال ہے آپ کی زیاں کہ عمد و تعت کے تنبہ جی لطیف ہائی کرم ہے جن تغوی پر ضدا کا اور رسول کا افھیں میں ایک خوش لھیب جی لطیف ہائی

(صاجزاده خان اخر عديم نعشبندي)

معزز ومحترم عدارة حبيب أيرابلتت

ڈاکٹرسیّدانورعلی نیازی

جن پر کرم کے باب نہ ہول زندگی میں بند ہوتے ہیں ایے لوگ زمانے میں مرف چند اس سے زیادہ کیا ہو مطاعة محمدی نعب رسول کے ہیں نیازی نیاز مند (صاحبز ادم قان اختر ندیم فنشیندی) تم کو عمرے کی سعادت ہو مبارک جان جاں خوب پایا ہے مقدر واہ! خان اختر عدیم (سیدکاظم علی ر)

جر كر فدا كے فور سے بينے كو،د كھ آئے ديا ہى دمتوں كے تزينے كو د كھ آئے ميں مرق طرف سے مرہ مبارك ہو اے عربے كے كو د كھ آئے مينے كو د كھ آئے مينے كو د كھ آئے

(يروفيرات تريش)

جب عطا ہو رہب مجوب واور آپ کو کول نہ سب مائیں مقدر کا سکندر آپ کو آپ نے جواور دیکھا ہے خدا سب کو دکھائے مد میادک یاد عمرہ!خان اخر آپ کو

(پروفیسر تین احمد بیلان) مبارک ہو جہیں اے خان اخر کہ کمر کار دکھ آئے تم خدا کا زیارت کی در خیر الورئ کی ہے ہے انجاز ڈکر مصلیٰ کا (عبدالشکوراتی)

الله كرك زوير قلم اور زياده توصيب محمد مو رقم اور زياده دو تا زكرم بحى بين ده اعداز كرم بحى كرت بين كرم پروه كرم اور زياده دو تا زكرم بحى بين ده اعداز كرم بحى اور زياده (بدرما كرى)

ور حقیقت نابذ فاکار ہے اخر ندیم ایکرال بیر رضیف سرکار ہے اخر ندیم "ساقی کوئر" براہے کارہے اخر ندیم فوش نما اشعار کا گزار ہے اخر ندیم حق نما اِک رفتر افکار ہے اخر ندیم نفتیہ اشعار کا طہار ہے اخر ندیم آپ سے "حرف دُھا" درکارے اخر ندیم آپ سے "حرف دُھا" درکارے اخر ندیم "سان گور" كاپ ت سيدابت بوا "سان گور" حسيس ورائ مي مي كليق ك اب كهلے تو شاعرى كافن أجاكر بوكيا "سان كور" كي عقمت مرحباسي على "ساني كور" كاپ تن زمان كے لئے "سانى كور" كو يا ه كر ش مجمد بايا بول بي بالشاف آپ كو ش نے مجمد بايا بول بي

ہے دُھا کہ آپ کو اللہ دے اُوپی فرون بس کہ جی شام سرکار ہے اخر عربی

جعد 4 دنمبر 2009 ء

عبدالحريد خان جى \_سارى ـ ١١ منى الإرامنت ناظم آباد نبرساز دمهاى شبيداستال كرايى

## آر گنائزرس محافل نعت ـ ذكروساع

قائد قاخوانان دسول الحاج سيد قرائد مان شاه ـ اجير لفكر شاخوانان دسول ـ الحاج الشخص التي قادرى چشتی قريدی ـ سيد مبارک علی شاه چشتی سر ـ کھات ـ سيدا ظهر حسين شاه جاموت ـ جحد اکرم قريشی اختر القادری ـ مجدا قبال ميمن چود داماسينز ـ معاجزاده محمد حسين چشتی ـ صوفی اميد علی بهلم فرد رقح نعت ـ حضرت صوفی محمد اقبال شاه چشتی مينی ظهودی در بار مجازيد ـ معوفی ظيل الرحمان قاتلی دحمان و اکثر سيد الورعلی نيازی ـ محبوب عالم شيروانی انجمن شيدائيان دسول ـ استاد سيف محرش ـ معاجزاده مصطف محبوب عالم شيروانی انجمن شيدائيان دسول ـ استاد سيف محرش ـ معاجزاده مصطف محبوب عالم شيروانی انجمن شيدائيان دسول ـ استاد سيف محرش ـ معاجزاده مصطف اقريک مال بيزم فوث الورئ فيمن قادری ـ نفيس عالم فريدی ـ الحاج ماسر محمد بيسف برخیل القريبيك اسكول ـ عبدالرجيم گدی قائد او پان اسكاوش ـ محمد حاتم قريش پرئيل استرونگ جي بال استول ـ محمد الحق الد في ـ انجمان صد التي اليه و كين ـ استرونگ جي بال المحمد الحق محمد بيس الرحمان صد التي الدين جماعت و اکثر محمد الحال الدين و الدين و من الدين جماعت

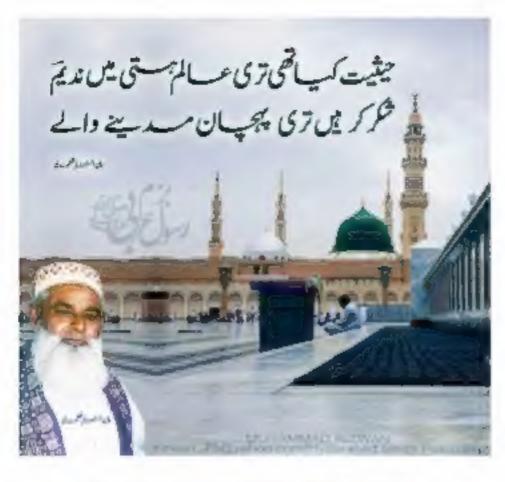
سروف مائی اور الندار خضیت بناب سید عبد الحمید شاہ ارمال ہے جمید خشہ میں مقصد مجمی کی ہے جستی کا بیگات و نیا ہو جاؤں اور ذکر نی وان رات کروں

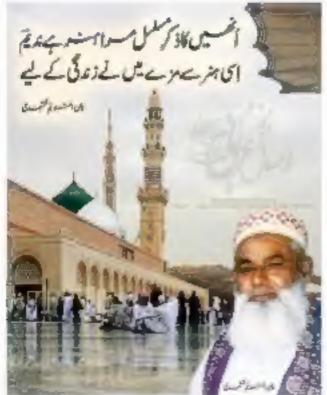
(صاجر اده خان اخر عربم تعقبندي)

نعتيدد يوان وزفعتا لك ذكرك " كم خالق معروف شاعر اسحافي جناب سيد

فروالفقار سيس نفوى كالدين علوى دورت جناب ماجزاده فان اخرى كم كك ك المنظيم على تهذيب من ترجيب دياب الدنام دكفاآب في آداب فكامت المنظم بي نظراً من بمين علم واوب ك يال ب عربي آب في مراب فكامت

محترم خال اختر عريم بالمام يجرومناف ويكاد



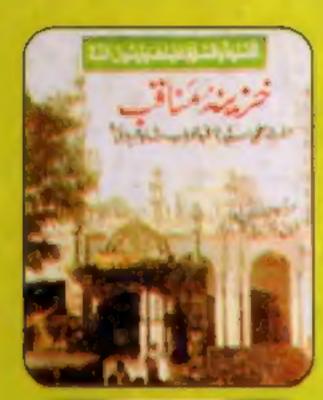


المسنت به معین قا دری شعیب ملک به صوتی عبد استیم خان نتشندی به ایس شین به نظام الدین کیشردان به قاروق شیرازی به حالیم شیرازی بسلیم قرایشی میم الله آتوز مرز افرزی بیلم قرایشی میم الله آتوز مرز افرزی بیلم الله آتوز به میراز افرزی بیلم میرد افرزی به با اعبد الزحمان به ماه می میرد افروی میر مرز افرزی بین احد دا بیا اکرم جینی والے صوفی محد دفیق بونت نمبر 5 معوفی محد دفیق بیزی والید دفتون المیند دفتی بیزی والید میری این بیزی والید میری این میری این المین میری این میری المین المین میری المین میری المین میری المین میری المین میری المین میردی میرون المین المین میری المین میری المین میرون میرون المین المین میرون المین میرون المین میرون المین میرون المین المین میرون المین المین میرون المین میرون المین میرون المین میرون المین المین میرون المین میرون المین میرون المین المین المین میرون المین میرون المین میرون المین میرون المین میرون المین المی

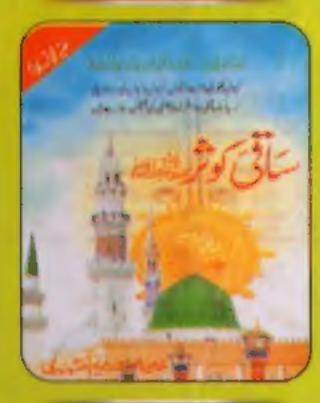
محبين ومحسنين

ماسترنید شاجرایس کے دجم بائی اسکول۔ عبدالجید رشید مرحم۔ عبدالجید نصیب۔ حضرت آبلہ ڈاکٹر رفیع الدین صدیقی نشتیندی۔ ڈاکٹر محر رفیق جو بوآ رتبو۔ لیافت علی عباری۔ حن قبائی آرائیس۔ متازاح رانا انجینئر۔ تکیم صوفی شبر احرقائی نشتیندی۔ سائیس نلام مصطفے جیلائی بلوری اسلامیہ باڈرن بائی اسکول۔ خلیفہ سائیس اشرف سائیس نلام مصطفے جیلائی بلوری اسلامیہ باڈرن بائی اسکول۔ جرابرار صنیف مخل جہاں اقبال۔ ماسٹر ساجد حسین انچاری آسیلی کمپری مینسیع اسکول۔ جرابرار صنیف مخل ادارہ کا دوان زفعت لا بحر میں شاہدرہ۔ جمد عمر شادرہ کا دوان زفعت لا بحر میں شاہدرہ۔ جمد عمر شادرہ کی دواب سین نقوی۔ سیّد شادرہ کی سیّد بائیس نقوی۔ سیّد شاہدی۔ اسٹر سیّد بائیس اسٹور۔ سیّد شاب حسین نقوی۔ سیّد مادرہ ایک اسٹور۔ سیّد شاب حسین نقوی۔ سیّد مادرہ اللہ میں نقوی۔ اسٹر سیّد بائیس اللہ اللہ میں نقوی۔ اسٹر سیّد بادی شاہدا۔ اسٹر سیّد بائیس اسکول۔

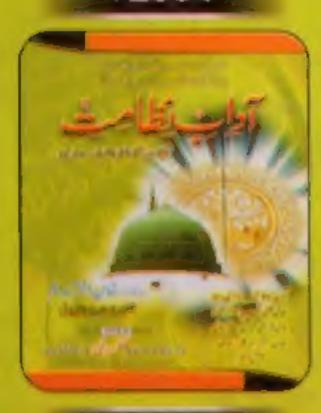
# صاحراه وظان اخر وريم التشيعري كي مطيوم أصيق وتاليف



,1995 <del>/</del>/



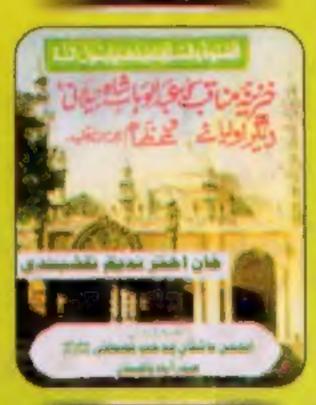
2004



2010



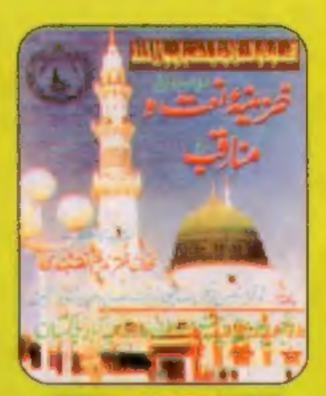
تبر 1992ء



نوبر 1997ء



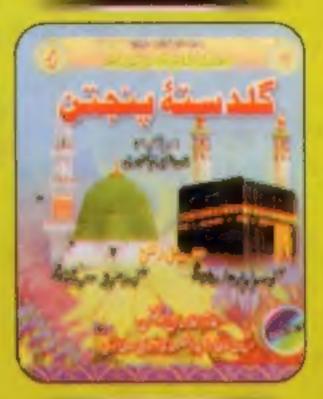
,2006@A



1992



,2001



,2009